राठ गौरव

संयुक्तांक (2016 – 2020)

राठ महाविद्यालय पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) उत्तराखण्ड

सम्बद्ध : हे०न०ब०ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तराखण्ड

राठ गौरव

संयुक्तांक
(2016–2020)

राठ महाविद्यालय पैठाणी

पोस्ट– पैठाणी, पट्टी– कण्डारस्यूं
पौड़ी गढ़वाल – 246123
उत्तराखण्ड

राष्ट्रीय सेमिनार

राष्ट्रीय सेमिनार

प्रयोगशाला

शौर्य दीवार

पुरातन छात्र सम्मेलन

पुरातन छात्र सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम

पुरातन छात्र सम्मेलन

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

हॉकी प्रतियोगिता

उच्च शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड

हल्द्वानी - 263139 (नैनीताल)

Mail-Higherducation.director@gmail.com

डा0 कुमकुम रौतेला
निदेशक (उच्च शिक्षा)

अर्द्धशासकीय पत्रांक 4302 /2020-21
दिनांक 18 सितम्बर 2020

संदेश

महोदय,

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) महाविद्यालय पत्रिका ''राठ गौरव'' को प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय पत्रिका माहविद्यालय की शैक्षणिक, अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का दर्पण मात्र ही नहीं होती, महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की बौद्धिक, वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती है।

मैं आशा करती हूँ कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाऐं ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित होंगी और छात्र-छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने एवं उनके विचारों में रचनात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होंगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

(डा0 कुमकुम रौतेला)

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)-246174, उत्तराखण्ड, भारत
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar (Garhwal)-246174 Uttarakhand, India
(A Central University)

प्रो0 अन्नपूर्णा नौटियाल
कुलपति
Prof. Annpurna Nautiyal
Vice-Chancellor

Ph. No. : 01346-250260
Fax No. : 01346-252174

Ref. No. : VC/HNBGU/2020/163
Dated : / 20/ 10/ 2020

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि **राठ महाविद्यालय पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)** अपनी वार्षिक पत्रिका ''**राठ गौरव**'' का संयुक्तांक का प्रकाशन करने जा रहा है, इस अवसर पर मैं कॉलेज के समस्त छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

पत्रिकाएँ किसी भी शैक्षणिक संस्थान के छात्र-छात्राओं की रचनात्मक क्षमता को प्रदर्शित करने का सार्थक मंच प्रदान करती है और आशा करती हूँ कि पत्रिका में छात्रों की मौलिक रचनाओं तथा छात्रोपयोगी महत्वपूर्ण पाठ्य सामग्री, विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों या क्रियाकलापों का समावेश होगा।

मैं पत्रिका ''**राठ गौरव**'' के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(अन्नपूर्णा नौटियाल)

Website: www.hnbgu.ac.in
E-mail:vc@hnbgu.ac.in, hnbguvc@gmail.com

शुभकामना संदेश

मेरे लिये अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि राठ महाविद्यालय पैठाणी वार्षिक पत्रिका "राठ गौरव" का संयुक्तांक 2016-2020 प्रकाशित करने जा रहा है। दूरस्थ क्षेत्र में सीमित संसाधनों से प्रारम्भ होने वाला यह महाविद्यालय आज देश भर में ख्याति अर्जित कर रहा है। मुझे आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि ''राठ गौरव'' में प्रकाशित विचारों एवं लेखों से छात्र/छात्राओं में सृजनात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होगा और समाज को दिशा मिलेगी। सम्पादक मण्डल के समस्त सदस्यों को मैं "राठ गौरव" पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभकामना एवं बधाई प्रेषित करता हूँ।

गणेश गोदियाल

(संस्थापक)
राठ महाविद्यालय पैठाणी
पौड़ी गढ़वाल-246123 (उत्तराखण्ड)

राठ गौरव

शुभकामना संदेश

मुझे इस बात का असीम हर्ष है कि राठ महाविद्यालय द्वारा 'राठ गौरव' पत्रिका का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे यह पुर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से उन नवोदित भावी चिंतकों, रचनाकारों, कवियों, लेखकों व विचारकों से जुड़ूँगा जिनसे मैं अनेक कारणों से नहीं मिल पाता। मुझे भरोसा है कि इस ज्ञान वृक्ष की अनेक शाखाऐं-प्रशाखाऐं देश-दुनियाँ के क्षितिज पर लहरायेंगी और राठ क्षेत्र एवं राज्य का नाम रोशन करेंगी। देश के विकास में उनका योगदान सराहनीय रहेगा ।

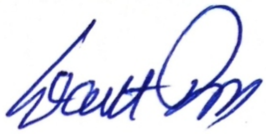

दोलत राम पौखरियाल

(प्रबन्धक)

राठ महाविद्यालय पैठाणी

पौड़ी गढ़वाल-246123 (उत्तराखण्ड)

रा ठ गौ र व

प्रचार्य की कलम से...

यह हमारे लिये और सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार के लिये बहुत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालयी पत्रिका ''राठ गौरव'' का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका महाविद्यालय की सम्पूर्ण गतिविधियों का दर्पण होती है। हमारे यहाँ शिक्षण-कार्य के अलावा छात्र/छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न गतिविधियाँ वर्ष-पर्यन्त गतिमान रहती हैं। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे छात्र अपनी रचनात्मक प्रतिभा को भी निखारेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं पत्रिका प्रकाशन हेतु महाविद्यालय पत्रिका समिति और उससे जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ, क्योंकि उनकी योजना एवं मेहनत से ही यह सम्भव हुआ है। एक बार पुनः मेरे एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार की तरफ से सभी को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

डॉ0 जितेन्द्र कुमार नेगी

(प्राचार्य)

राठ महाविद्यालय पैठाणी

पौड़ी गढ़वाल-246123 (उत्तराखण्ड)

रा ठ गौ र व

सम्पादकीय

'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते,' अर्थात् ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसन्देह दूसरा कोई साधन नहीं है। भगवद्गीता की यह उक्ति सौभाग्य से हमारे महाविद्यालय का 'ध्येय वाक्य' है। यहाँ यह विचारणीय है कि पवित्रता किस सन्दर्भ में? ज्ञान से प्राप्त होने वाली पवित्रता क्या है? तो निश्चयतः इसका उत्तर होगा अज्ञान से मुक्ति और ज्ञान की प्राप्ति ही पवित्रता है। ज्ञान ही वह माध्यम है, जो हमारे चारों तरफ व्याप्त 'भय और भ्रम' के गहन अन्धकार को चीरकर प्रकाश का संचरण करता है।

आज के भौतिक युग में मानव सभ्यता विकास के बेलगाम घोड़े पर सरपट दौड़ते हुआ आगे बढ़ती चली जा रही है, लेकिन इसके बाद भी वह मानव सभ्यता के लिये अनिवार्य स्वस्थ, सुन्दर एवं नैतिकता पर आधारित समाज की स्थापना करने में स्वयं को असमर्थ पा रहा है। किन्तु ऐसा भी नही है कि मूलतः एवं स्वाभाविक रूप से निर्दोष मानव समाज द्वारा इस संदर्भ में कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है। यह प्रयास किया जा रहा है 'उच्च शिक्षा' द्वारा। इसके माध्यम से देश की तरूणाई में नवसृजन के संस्कार आरोपित किये जाते हैं। युवाओं में ऊर्जा का असीम भण्डार अन्तर्निहित रहता है और यदि उनकी ऊर्जा एवं क्षमता को सही दिशा प्रदान किया जाय तो वे निश्चित रूप से समूची दुनियाँ को बदल सकते हैं। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द का यह कथन प्रासंगिक है जिसमें उन्होंने कहा था कि "हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसका अनुसरण करने से व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश का गौरव बढ़ा सके।" एक अन्य स्थान पर स्वामी जी ने कहा है कि "हमें ऐसी शिक्षा की जरूरत है जिससे चरित्र निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होना सीखे।"

उच्च शिक्षा के केन्द्रों में युवा विद्यार्थियों को एक तरफ जहाँ बहु विषयक सैद्धान्तिक शिक्षा प्रदान की जाती है वहीं दूसरी तरफ अनेक अन्य गतिविधियों के द्वारा उनकी क्षमताओं और व्यक्तित्व को निखरने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस क्रम में खेल प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक आयोजनों एवं साहित्यिक सृजनशीलता को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि हमारे महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका 'राठ गौरव' यहाँ अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की बौद्धिक एवं वैचारिक क्षमता को तथा उनकी सर्जनात्मक गुणों को उद्घाटित एवं विकसित करने का एक सशक्त माध्यम है। इससे वे न केवल प्रेरित होंगे अपितु उनकी अभिव्यक्ति को एक अवसर भी प्राप्त होगा। इस आधार पर मेरा यह मानना है कि महाविद्यालय की यह पत्रिका युवा छात्र/छात्राओं की कल्पनाओं को एक नव क्षितिज प्रदान करेगी तथा क्षमताओं को मजबूत आधार भी प्रदान करेगी। इसी आशा, विश्वास एवं मंगलकामना के साथ..... ।

डॉ0 राजीव दूबे

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास

राठ महाविद्यालय पैठाणी

पौड़ी गढ़वाल–246123 (उत्तराखण्ड)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचना	लेखक/लेखिका
✦	**संदेश**		
✦	**प्राचार्य की कलम से**		
✦	**सम्पादकीय**		
1.	हमारी सांस्कृतिक विरासत : रम्माण	लेख	कु0 मीनाक्षी
2.	अस्माकं महाविद्यालय: राठ महाविद्यालय पैठाणी	लेख	नवीन ममगांई
3.	माँ	कविता	रोनिका भण्डारी
4.	बचपन का जमाना	कविता	प्रेम सिंह
5.	वनस्पतियों का महत्व एवं उपयोग	लेख	हेमन्त प्रसाद
6.	शिक्षा का महत्व	लेख	भावना पुजारी
7.	बेरोजगारी एक व्यथा	कविता	अमित बहुगुणा
8.	अतिथि है देव जहाँ (जौनसार बावर)	लेख	डॉ0 रवि नौटियाल
9.	परिंदा	कविता	यशवन्त सिंह
10.	उत्तराखण्ड की संस्कृति	लेख	संदीप लिंगवाल
11.	उत्तराखण्ड का प्राचीन राहू मन्दिर – स्थान पैठाणी	लेख	राजेश कुमार
12.	मेरा मुल्के रीत	कविता	रविन्द्र सिंह
13.	Never Give Up	कविता	अंकिता बिष्ट
14.	राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता	लेख	मनोज कुमार सिंह
15.	माँ की याद	कविता	संतोषी भण्डारी
16.	बाँझ गाँव की व्यथा	कविता	रेखा नौटियाल
17.	राखी में	लेख	पूजा पन्त
18.	जीवन की राह	कविता	अमित पन्त
19.	सूचना का अधिकार अधिनियम का प्रभाव	लेख	राजेन्द्र सिंह पंवार
20.	देखा है कभी	कविता	काजल नेगी
21.	भौगोलिक सूचना तन्त्र	लेख	डॉ0 जितेन्द्र कुमार नेगी
22.	प्रदेश में बढ़ती महिला अपराध की घटनायें	लेख	कु0 रीना
23.	उत्तराखण्ड राज्य: औचित्य, अवधारणा, विकास एवं संभावनायें	लेख	डॉ0 देवकृष्ण थपलियाल
24.	शिक्षा	कविता	कोमल
25.	मिटटी से बाजार तक – जमीन की आबरू का सवाल	लेख	सूरज सिंह कण्डारी
26.	बिन पंखों की चिड़िया मैं	कविता	कुमारी देवी
27.	सोच क्या है	लेख	वर्षा नेगी
28.	पहाड़ की बेटी	लेख	वन्दना भट्ट
29.	तूँ उड़ सकता है	कविता	प्रदीप चन्द गौड़
30.	समाज की वर्तमान परिस्थितियाँ	लेख	श्वेता बिष्ट
31.	अधिगमकर्ता की विशिष्टता को जानें	लेख	डॉ0 प्रवेश कुमार मिश्रा

32	हॉकी	कविता	बलवन्त दानू
33.	उजड़ा आसमान	कविता	अंजुम बानो
34.	वर्तमान समय में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता	लेख	डॉ0 शिवेन्द्र सिंह चंदेल
35.	हौसला	कविता	अजेन्द्र सिंह
36.	राठ महाविद्यालय पैठाणी का पहला दिन	लेख	सूरज भण्डारी
37.	बेटी बचाओ	कविता	नीलम
38.	Physics Difine All	लेख	प्रशान्त नवानी
39.	Self Improvement	लेख	आकृति ममगाई
40.	अनुशासनहीनता एवं मूल्य शिक्षा	लेख	डॉ0 श्याम मोहन सिंह
41.	अमर शहीद श्रीदेव सुमन : व्यक्तित्व व कृतित्व	लेख	जितेन्द्र डोभाल
42.	गुरू	कविता	कु0 पूजा कोहली
43.	आधुनिक भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति	लेख	श्रीमती बन्दना सिंह
44.	क्या है ये जिन्दगी	कविता	शिवानी ढींगरा
45.	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	कविता	अजय सिंह
46.	कुछ रह तो नही गया	कविता	रोहित पाण्डे
47.	पंचेश्वर धाटी की यादें	लेख	डॉ0 बीरेन्द्र चन्द
48.	जीना सीख गई हूँ	कविता	पूनम नेगी
49.	इन्सानियत	कविता	अमित
50.	राठ क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी : माँ बूंखाल कालिका	लेख	वैभव नेगी
51.	मानव संसाधनों के निमार्ण में शिक्षा की भूमिका	लेख	श्री अरविन्द कुमार
52.	भारत में नारी विकास के बदलते आयाम : महिला खिलाड़ियों के विशेष संदर्भ में	लेख	डॉ0 गोपेश कुमार सिंह
53.	कन्या भ्रूण हत्या	कविता	रचना नेगी
54.	नई शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा	लेख	डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह
55.	शिक्षा में निवेश सर्वाधिक प्रतिफल	लेख	प्रदीप चन्द गौड़
56.	जश्ने आजादी	कविता	श्री प्रशान्त डबराल
57.	Corona	कविता	रजनीश त्यागी
58.	पुस्तकालय नेटवर्किंग एवं स्वचालन	लेख	एम0एस0 भण्डारी
59.	उत्तराखण्ड के नृत्य	लेख	अलका पन्त
60.	स्कूल के दोस्त	कविता	कु0 रीना
61.	सोशल मीडिया: कसौटी पर सार्थकता	लेख	डॉ0 राजीव दूबे
62.	इन्टरनेट का जाल	कविता	अतुल नेगी
63.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति	लेख	डॉ0 राकेश कुमार
64.	सीख	कविता	मनोज रमोला
65.	स्त्री जाति एक वरदान	लेख	श्रृष्टि लूथरा
66.	संस्कत भाषाया: वैशिष्ट्यं सौष्ठवं च	लेख	अभिषेक बधानी
67.	प्रोफेशनलिज्म–वर्तमान उच्चशिक्षा की आकांक्षा	लेख	उमेश चन्द बसंल
68.	आधुनिक युग में स्वास्थ्य और धन	लेख	राजकुमार पाल

69	मेरी माँ	कविता	रविन्द्र सिंह धीरवाण
70	मेरी माँ और मेरा बचपन (जज़्बात)	कविता	ममता
71.	सृजनशीलता का प्रतिविम्बः माहाविद्यालयी पत्रिका	लेख	मुकेश चन्द्र गोदियाल
72.	हमारा पर्यावरण	कविता	मनीषा रावत
73.	फूल देई त्यौहार	लेख	सुधा राणा
74.	गुरू की शिक्षा	लेख	रविन्द्र सिंह नेगी
75.	बढ़ते चलो तुम	कविता	शुभम आर्य
76.	हे बाबा तू किलैकि रूठी	कविता	डॉ0 लक्ष्मी नौटियाल
77.	बेटियों की एक आवाज	लेख	रजनी
78.	समय, सफलता और हमारा व्यक्तित्व	लेख	आरती

हमारी सांस्कृतिक विरासत : रम्माण

– कुमारी मिनाक्षी
बी0एड0, पंचम सेमेस्टर

सांस्कृतिक विरासत का अर्थ :– उत्तराखण्ड एक ऐसा राज्य है जिसमें बहुत सी सांस्कृतिक विरासत मौजूद हैं। उत्तराखण्ड जिसे 2006 तक उत्तरांचल के नाम से जाना जाता था, उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है जिसका निर्माण 9 नवम्बर 2000 में हुआ। जनवरी 2007 में स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राज्य का अधिकारिक नाम बदलकर उत्तराखण्ड कर दिया गया ।

हिन्दी और संस्कृत में उत्तराखण्ड का अर्थ उत्तरी क्षेत्र या भाग होता है। इस राज्य में हिन्दू धर्म की सबसे अधिक पवित्र, धार्मिक और भारत की सबसे बडी नदियों गंगा, यमुना के उद्गम स्थल है। तथा इसके तटों पर बसे वैदिक संस्कृति के कई महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है। हर किसी राज्य की अपनी कुछ संस्कृतियाँ होती है ठीक उसी तरह हमारे उत्तराखण्ड में भी बहुत सी सस्कृतियां विराजमान हैं, जो कि उत्तराखण्ड को सबसे अलग और खास 'देवभूमि' बनाती है।

उत्तराखण्ड को ईश्वर की धरती या देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यहाँ हिन्दुओं की आस्था के प्रतीक चार धाम बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री स्थित हैं तथा जागर, कोथिग मेले इत्यादि उत्तराखण्ड को विशेष दर्जा दिलाते हैं।

उत्तराखण्ड में गढ़वाल और कुमाऊँ दोनों क्षेत्रों में अलग–अलग रीति–रिवाज है एवं उनमे विविधता है। उत्तराखण्ड राज्य के विभिन्न जिलों में विभिन्न प्रकार के मेले जागर, कोथिक त्यौहार प्रसिद्ध है। जिसमें से एक प्रसिद्ध कौथिक रम्माण विश्व धरोहर में सम्मिलित है जो, उत्तराखण्ड के चमोली जिले में मनाया जाता है।

रम्माण उत्सव :– उत्तराखण्ड का जिक्र वैदिक काल से होता आ रहा है इसलिए आज भी उत्तराखण्ड में रामायण, महाभारत काल की सैकड़ों विद्याएँ मौजूद हैं। जिसमें से कई विद्याएँ विलुप्त हो गई है और कई विद्याएँ मौजूद हैं। उत्तराखण्ड को समूचे विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान दिलाई है। चाहे वह विश्व की सबसे लम्बी पैदल यात्रा नंदा राजजात यात्रा हो या फिर चम्पावत के देवीधुरा में प्रसिद्ध बग्वाल युद्ध। यह सब पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है, जो उत्तराखण्ड की संस्कृति से रूबरू कराती है। ऐसी एक लोक संस्कृति रम्माण भी है।

रम्माण क्या है :– रम्माण उत्सव उत्तराखण्ड के चमोली जिले के सलूड गाँव में प्रति वर्ष अप्रैल में आयोजित होता है। इस गाँव के अलावा डुग्री, बरोषी, सेलंग गाँवों में भी रम्माण का आयोजन किया जाता है। इनमें सलूड गाँव का रम्माण ज्यादा लोकप्रिय है।

आयोजन :– इसका आयोजन सलूड, डुंग्रा की संयुक्त पंचायत करती है। रम्माण मेला कभी 11 दिन तो कभी 13 दिन तक भी मनाया जाता है। यह विविध कार्यक्रमों, पूजा और अनुष्ठानों की एक श्रृंखला है। इससे सामूहिक पूजा और अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। इसमें सामूहिक पूजा, देवयात्रा, लोकनाट्य, नृत्य, गायन, मेला आदि विविध रंगी आयोजन होते हैं। यह भूम्याल देवता के वार्षिक पूजा का अवसर भी होता है एवं परिवारों और ग्राम क्षेत्रों के देवताओं से भेंट करने का मौका भी होता है ।

रम्माण नाम की उत्पत्ति–: उत्सव के अंतिम दिन लोक शैली में रामायण के कुछ चुनिंदा प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है। रामायण के इन प्रसंगों की प्रस्तुति के कारण यह सम्पूर्ण आयोजन रम्माण के नाम से जाना जाता है इन प्रसंगों के साथ बीच–बीच में पौराणिक, ऐतिहासिक एंव मिथकीय चरित्रों तथा घटनाओं को मुखौटा नृत्य शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

नृत्य शैली :-

1. रम्माण उत्सव में जिस नृत्य शैली का उपयोग किया जाता है वह मुखौटा नृत्य शैली है इसमें नर्तक मुखौटा पहनते हैं फिर नृत्यकला का प्रदर्शन करते हैं ।
2. इसमें कोई भी संवाद पात्रों के बीच नहीं होता। पूरी रम्माण में 18 मुखौटा, 18 तालों, एक दर्जन जोड़ी ढोल, दमाऊ व आठ भकोरों के अलावा झांझर व मंजीरों के जरिये भावों की अभिव्यक्ति दी जाती है।
3. मुखौटों के दो रूप है –

   पहला – घो पन्तर यानी देवताओं के मुखौटे ।

   दूसरा – रव्यल्यारी पन्तर यानी मनोरंजन के मुखौटे ।

रम्माण के विशेष नृत्य :-

1. बण्या-बण्याण :- यह नृत्य तिब्बत के व्यापारियों पर आधारित है, जिसमें उन पर हुए चोरी, लूटपाट की घटना का विवरण नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

2. म्योर-मुरैण :- यह नृत्य पहाड़ों पर होने वाली दैनिक परेशानियों जैसे- पहाड़ों में लकड़ी और घास काटने के लिये जाते समय जंगली जानवरों द्वारा किये जाने वाले आक्रमण का चित्रण होता है।

3. माल-मल्ल :- इस नृत्य में स्थानीय लोगों व गोरखाओं के बीच हुए युद्ध का वर्णन होता है।

4. कुरू-जोगी :- यह एक प्रकार का हास्य नृत्य है। इसमें रम्माण का हास्य पात्र जो अपने पूरे शरीर पर चिपकाने वाली विशेष प्रकार की घास (कुरू) लागकर लोगों के बीच चला जाता हैं। कुरू चिपकने के भय से लोग इधर-उधर भागते हैं लेकिन कुरू जोगी उन पर अपने शरीर में चिपके कुरू को निकालकर फेकता है। सामान्य भाषा में इसे एक जोकर की संज्ञा दी जा सकती है, जो लोगों को हँसाने और मनोरंजन करने का कार्य करता है।

आयोजन का प्रारम्भ :- इस आयोजन का आरम्भ (बैशाखी) की संक्रान्ति को होता है, जब भूम्याल देवता को बाहर निकाला जाता है। 11 फीट लम्बे बाँस के डण्डे के सिरोभाग पर भूम्याल देवता की चाँदी की मूर्ति को स्थापित किया जता है। मूर्ति के पीछे चौर मुठू (चंवर गाय के पूंछ के बालों का गुंच्छा) लगा होता है। लम्बे लद्धे पर ऊपर से नीचे तक रंग बिरंगे रेशमी साफे बँधे होते हैं। इस प्रकार भूम्याल देवता का उत्सव रूप या नृत्य रूप तैयार कर दिया जाता है। इसे 'लवोद्ध' कहते हैं। धारी भूम्याल के लवोद्ध को अपने कंधे के सहारे खड़ा कर नाचते हैं। तीसरे दिन अर्थात् 3 गत्ते बैशाख से दिन में भूम्याल देवता गाँव भ्रमण पर जाता हैं। भूम्याल का यह ग्राम-क्षेत्र भ्रमण पाँच-छ: दिन में पूरा होता है। कार्यक्रमों का आयोजन ग्रात्रि में भी किया जाता है। कार्यक्रम बैसाखी के तीसरे दिन की रात्रि से लेकर रम्माण आयोजन की तिथी तक हर रात्रि को भूम्याल देवता के मंदिर प्रांगण में मुखौटे पहन कर नृत्य किया जाता है। 'घो पन्तर' तथा रव्यलारी पन्तर घो पात्र देवता से सम्बन्धित चरित्र और मुखौटे होते है और रव्यालारी पात्र के मनोरंजक चरित्र और उनके मुखौटे भी होते हैं। मुखौटों के क्रम में सबसे पहले 'सूर्ज पात्र' (सुर्य का मुखौटा) आता है। इसी रात कालिका और गणेश पात्र भी आते हैं। चार गत्ते गणिराधिका का नृत्य होता है। यह नृत्य कृष्ण और राधिकाओं (गोपियों) का माना जाता है। इसी के साथ-साथ अगली रात्रि से क्रमश: मोर-मोर्याण (महर और उसकी पत्नी) बाण्या-बण्याण-चोर (व्यापारी उसकी पत्नी और चोर) बुडदेबा राजा कन्त्र (कानडा नरेश या कागडा नरेश) गन्ना-गुन्त्री रव्यालारी आदि पन्तर आते हैं। इन पात्रों के आने का एक परम्परागत क्रम निर्धारित है किसी एक रात गोपीचन्द नृत्य भी आयोजित किया जाता है।

स्यूर्त की रात :- रम्माण की पूर्व रात्रि को स्यूर्त होता है। स्यूर्त का अर्थ सम्पूर्ण रात्रि का कार्यक्रम है। स्यूर्त की रात्रि को सभी पात्र आकर नृत्य करते हैं। इस रात पाण्डव नृत्य भी होता है। रम्माण मेले हेतु राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान के रूप में चयनित किया जाता है। इसी स्यूर्त की रात मल्लों का भी चयन होता है ।

रम्माण का आयोजन अंतिम दिन में होता है। आयोजन स्थल वही पंचायती चौक भूम्याल देवता का मन्दिर प्रांगण होता है। रामायण के कुछ चुनिंदा प्रसंगों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य ढोल के तालों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। सर्वप्रथम राम, लक्ष्मण मंदिर प्रांगण में आकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य पाँच तालों पर किया जाता है। रम्माण की पूरी प्रस्तुति में कोई संवाद नहीं होता है। ढोल के तालों में नृत्य के साथ भावों की अभिव्यक्ति की जाती है ।

अंत में नरसिंह पात्र आता है। नरसिंह पात्र इनसे सम्बन्धित पौराणिक कथा नृत्य द्वारा अभिव्यक्त करते हैं। अंत में कुछ देर तक भूम्याल नाचते हैं।

*****

'शिक्षा का अर्थ अन्त:शक्तियों का बाहय जीवन से समन्वय स्थापित करना है।' - ***हरबर्ट***

अस्माकं महाविद्यालयः
राठ महाविद्यालय पैठाणी

– नवीन ममगाई
छात्र, बी0एड0

अयं अस्माकं महाविद्यालयः राठ क्षेत्रे विद्यमानः राठ गौरव राठ महाविद्यालय इति नाम्नेन प्रसिद्धः। अस्य भवनानि भव्यानि वेतवर्णाः च सन्ति। अस्मिन् महाविद्यालयस्य प्राचार्यः बहुज्ञः व्यवहार कुशलः, छात्रप्रियः च सन्ति। अत्र आवश्यकतानुसारं पूर्ण अध्यापकाः सन्ति। एते सर्वे सुयोग्याः सन्ति। अत्र बहवः छात्राः सन्ति। छात्राः अनुशासन प्रियाः सन्ति। अस्मिन महाविद्यालयस्य संस्थापकः गणेश गोदियाल महोदयस्य प्रयासेन अयं महाविद्यालयः सर्वत्र स्वकीयं ख्यातिं लब्धवान्। अत्र बी0ए0, बी0एड0, बी0पी0एड इति कक्षा संचालिता भवन्ति। अस्माकं बी0एड0 विभागे पौड़ी गढ़वालतः पंचदश छात्राध्यापकाः सन्ति। अन्यतः सताधिकपंचत्रिंशत छात्राध्यापकाः सन्ति। अनेन प्रतियते अयं महाविद्यालयः सर्वत्र स्वकीयं ख्यातिं लब्धवान्। विद्यालयस्य क्रीडाप्रांगणं सविस्तरं हरितदर्वाछत्रम् च अस्ति। सायंकाले तत्र छात्राः क्रीडन्ति। अयं विद्यालयः अस्माकं गौरवास्पदम् अस्ति। अत्र प्रत्यब्दम समरोहाः भवन्ति, देशस्य विशिष्टाः विद्वांसः, नेतारः, विविधकलाकुशलाश्च आगच्छन्ति। अत्र छात्राणाम् शारीरिक मानसिक–बौद्धिकाध्यात्मिक योग्यताविकासाय अहर्निशं प्रयत्नं भवति। अहमपि अस्मिन् महाविद्यालये बी0एड0 विभागे अध्ययनस्य सौभाग्यं प्राप्तवान्।

*****

माँ

– रोनिका भण्डारी
छात्रा, राठ महाद्यिालय पैठाणी

माँ और माँ का प्यार निराला
उसने ही है मुझे सम्भाला
मेरी मम्मी बड़ी प्यारी
क्या मैं उनकी बात जताऊँ
सोचूं उन्हें कैसे मैं जान पाऊँ
सुबह सबेरे मुझे उठाती

सन्दीप कहकर मुझे जगाती
जल्दी से तैयार मैं होता
उसके कारण स्कूल जा पाता
स्कूल से आते ही खुश होता
जब मम्मी का चेहरा दिखता
पौष्टिक भोजन मुझे खिलाती
गृह कार्य भी पूरा करवाती

माँ और माँ का प्यार निराला
पर मैं करता गड़बड घोटाला
जब मैं करता कोई गलती
समझाने की कोशिश करती
लुटाती मुझ पर अधिक प्यार
करती मुझ से अधिक दुलार

मुझ पर गुस्सा जब है आता
दो मिनट में उड़ भी जाता
मेरी मम्मी मेरी जान
रखती मेरा पुरा ध्यान
माँ और माँ का प्यार निराला
उसने ही है मुझे सम्भाला

'अहिंसा प्रत्येक प्राणी के विरूद्ध द्वेष का अभाव है, यह प्रगतिशील दशा है । इसका अर्थ चेतन रूप से कष्ट भोगना है। अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सदभावना है। यह शुद्ध प्रेम है।' – ***महात्मा गांधी***

बचपन का जमाना

- प्रेम सिंह
छात्र, राठ महाद्यिालय

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था ।
न सुबह का पता न शाम का ठिकाना था
जिद पूरी करने के लिए रोना सिर्फ बहाना था।
होती अगर निश्छल प्यार दुलार की चाह
बस मासूम चेहरे से हल्के से मुस्कुरा जाना था,
एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
दादा-दादी की कहानी थी
जिसमें परियों का फसााना था
शरारतों से आकर तंग मेरी
सुलाने का अनुभव उनका पुराना था
नींद कही पर भी क्यों न आई हो
आँख ने सदैव बिस्तर पर ही खुलना था
एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था ।
मुश्किल है अब उन गलियों का मिल पाना
छुप्पन-छुपाई में जहाँ दिनों को गुजारा था
गुड्डा-गुड्डियों की शादी में बाराती दोस्तों को बुलाया था
कभी कागज की कश्ती और नदी का किनारा था
तो कभी तेज हवा के साथ-साथ दौड़कर
लकड़ी से टंगा हवाई जहाज को उड़ाना था
एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
न गम की जुबान थी न जख्मों का पैमाना था
मौसम कोई भी क्यों न हो मेरे लिए सुहाना था
गलती हो जाने पर कभी बिच्छू घास का प्रसाद पाना था
माँ डाँटे तो पापा से पापा डाँटे तो माँ से लिपट जाना था
चाहत होती थी कभी चाँद को पाने की
पर दिल तो रंग-बिरंगी तितली का दिवाना था

एक बचपन का जमाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था।
स्कूल न जाने के लिए कितनी ही कहानियाँ बनाई थी
स्कूल खत्म होते ही अपनी हँसी ठिठोली की महफिल जमाई थी
पास फेल के चक्कर में कई तितलियों ने जान गवाई थी
कभी कभार छोटी- छोटी पार्टी करने के लिए
अपने ही घर से चीजों को चुराना था
एक बचपन का जामाना था
जिसमें खुशियों का खजाना था।
गलतफहमी थी की आगे जिन्दगी मजेदार होगी
बचपन की नादानियों में रहना ही प्यारा था
क्यों हो गए हम इतने बड़े इससे अच्छा बचपन का जमाना था
मालूम है मुझे बीते पल अब न लौट सकेंगे
फिर भी नए सपने सजाना चाहता हूँ
मै हुआ उम्रदराज तो कोई बात नही
लेकिन मैं फिर से बचपन जीना चाहता हूँ।

*****

'शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।' **- पैस्तालॉजी**

वनस्पतियों का महत्व एवं उपयोग

- हेमन्त प्रसाद
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

प्राचीन काल से ही वनस्पतियों का उपयोग मानव जीवन के कल्याण हेतु किया जाता है। वेदों में वर्णित औषधियों का निर्माण वनस्पतियों (पेड़-पौधों) द्वारा ही किया जाता था। सम्पूर्ण भारत वनस्पतियों से आच्छादित है, जिसमें कि हिमालयी क्षेत्र विविध वनस्पतियों से भरा हुआ क्षेत्र है, इस क्षेत्र में चारा, ईधन, औषधीय जड़ी-बूटी, इमारती लकड़ी आदि कई प्रकार की वनस्पतियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं, जो कि यहाँ रहने वाले निवासियों की सभी जरुरतों को पूरा करती हैं। आज वनस्पतियों का हमारे जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव है। हमारे दैनिक जीवन में हम किसी ना किसी रूप में वनस्पतियों पर ही निर्भर रहते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विकासशील देशों की 80 प्रतिशत जनससंख्या अपनी जरुरतों के लिए प्रत्यक्ष रूप से पेड़ पौधों पर निर्भर रहती हैं। पेड़-पौधों से ही जीवन निर्वाह करने के लिए उत्पाद प्राप्त होते हैं। उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो यहाँ की आबादी पूर्णतः पेड़-पौधों से अपनी जरुरतें जैसे- चारा-पत्ती, जलाऊ लकड़ी, औषधि, लीसा, भोजन आदि पूर्ण करती है।

कलचोनी (Ageratina Adenophora) की टहनियों और पत्तियों को पीसकर विशेष रूप से चोट पर एंटीसेप्टिक के रुप में प्रयोग किया जाता है, जिससे घाव जल्दी भर जाता है। नीम (Azedirachta Indica) एक ऐसा पेड़ है जिसके सारे भाग अनेक विकारों को दुर करने में काम आते हैं। नीम की पत्ती का जूस पेट के विकार को दूर करने में टहनी दातून के रुप में, छाल को त्वचा संबंधी रोगों को दूर करने हेतु काम में लिया जाता है। ग्विराल या कचनार (Bauhinia Variegata) के कोमल फूलों (Buds) को सब्जी एवं पराठा बनाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके फूलों की सब्जी बहुत ही स्वादिष्ट होती है। दालचीनी या तेजपत्ता (Cinnamomum Tamala) की सूखी पत्तियाँ व छाल का प्रयोग चाय एवं पुलाव आदि के जायके को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसकी छाल को मसाले के साथ पीसकर उपयोग में लाया जाता है। दालचीनी या तेजपत्ता का काढ़ा मितली एवं उल्टी में काफी आरामदायक होता है।

बिन्डा (Colebrookia Oppositifolia) की कोमल टहनियों को कूटकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी से भर जाते हैं। भीमल (Grewia optiva) की पत्तीयाँ चारे हेतु, रेशा रस्सी बनाने, लकड़ी ईंधन के काम आती है। पुराने समय में इसकी छाल उतरी लकड़ी खेती के काम में औजार के लिए प्रयोग की जाती थी। करीपत्ता या गन्देला (Murraya Koenigii) की पत्तीयों का उपयोग भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता हैं। पकौड़ों में इसका प्रयोग बहुतायत में किया जाता है। आड़ू (Prunus persica) की कोमल टहनियों को पीसकर पशुओं के घावों को कीड़ामुक्त किया जाता है। मेलू (Pyrus Pashia) के कच्चे फलों को खाने से मुँह के छाले काफी हद तक ठीक हो जाते हैं।

तुंगल (Rhus Parviflora) की कोमल टहनी को दातुन करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इससे दाँतों की चमक काफी बढ़ जाती है। अमेल्डा (Rumex Hastatus) की पत्तियों को पीसकर चोट पर लगाने से खून का थक्का शीघ्रता से बनता है एवं रक्त का बहाव रूक जाता है। रिंगाल (Thamnocalamus Falconeri) के तने से टोकरी, कंड़ी, चटाई, सोल्टा एवं अनेक सजावटी सामान का निर्माण किया जाता है। गिलोय या गुडुची (Tinospora Cordifolia) के जूस का प्रयोग शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र (Immune System) को मजबूत करने हेतु उपयोग में लाया जाता है। डेंगू के दौरान रक्त में घटती प्लेटलेट्स को बढ़ाने हेतु गिलोय रामबाण है। तिमूर या टिमरु (Zanthoxylum Armatum) की कोमल टहनियों को दातून करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसकी दातून करने से दाँतों को कीड़े से बचाया जा सकता है और यह मुँह की दुर्गन्ध को कम करता

*****

'सच्ची शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं होना चाहिए अपितु इसको मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा जीवित उत्कर्ष करना चाहिए।'
- श्री अरविन्द घोष

शिक्षा का महत्व

-भावना पुजारी
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पृथक करती है। शिक्षा का मानव जीवन में काफी महत्व है। एक सामान्य जीवन यापन करने के लिए मनुष्य को रोटी, कपड़ा, मकान के अलावा अगर किसी चीज की जरुरत है तो वह है शिक्षा। धन, सौन्दर्य, सोना आदि मूल्यवान वस्तुओं का महत्व कम हो सकता है लेकिन शिक्षा का महत्व कभी कम नहीं हो सकता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है। समाज में शिक्षित व्यक्तियों के होने से हम समाज में कई नये बदलाव देख सकते हैं। समाज में शिक्षा के होने से लोगों को सोचने समझने और उचित व्यवहार करने में मदद मिलती है। वर्तमान समय में शिक्षा का फैलाव पहले से अधिक होने के कारण समाज में रुढ़िवादी धारणाओं का अन्त देखा जा सकता है। शिक्षा को हम एक साधन भी कह सकते हैं जो कि हर समस्या का निवारण कर सकता है। शिक्षा मनुष्य को उसके समाज के साथ अनुकूलन करने की क्षमता प्रदान करती है। तथा साथ ही वातावरण में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन करने की शक्ति और ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा से मानव का सर्वांगीण विकास होता है। शिक्षित व्यक्ति सामाजिक जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में योगदान देता है। शिक्षा एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करती है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु पर्यन्त शिक्षा प्राप्त करता रहता है।

*****

बेरोजगारी एक व्यथा

– अमित बहुगुणा
बी0एड0, चतुर्थ सेमेस्टर

लम्बी–लम्बी कतारों में आज बेरोजगार खड़े हैं
जो बचपन से सुनहरे सपनो के संग बड़े हुए हैं
जाने कितने संघर्षो से ये जीवन पथ पर लड़े हैं
आज बेरोजगारी की मार से ये भूखे प्यासे पड़े हैं।
रोजगार के लिए हमेशा सत्ता से गुहार लगाते हैं
लेकिन इनके सपनों को सरकारे हवा में उड़ाती हैं
फिर ये बेरोजगार युवा देश के
अपने सपनों के पुतले हर साल जलाते हैं।
बड़ी–बड़ी डिग्रियों के दस्तावेज वे हाथों से सहलाते हैं,
बताने वाले कुछ साथी उनमें स्किल की कमी बतलाते,
ये सब कुछ सुनकर भी वे खामोश रहकर सहन करते
क्योंकि सत्ताधारी तो उन्हें अपने भाषणों से बरगलाते।

गरीब बाप के बेटे ने पाई–पाई कर डिग्रियाँ कमाई
उसकी दिन–रात की मेहनत अब आसुओं में समाई है।
जब–जब माँगी कीमत उसने अपनी मेहनत की
उसकी मेहनत को अपमानित कर खरी–खोटी सुनाई है।
सुनों ऊँची कुर्सी वालों बदलो अपने व्यवहार को
देश उन्नति कैसे करेगा जब युवा बेरोजगार हो।
जतन करो कुछ देश हित में रोको इस ललकार को
योग्यताओं का सम्मााान करों तुम अब रोजगार दो।
रोजगार बहाओ समन्दर सरीखे योग्यताओं के
साहिल बना कोई तरसे न रोजगाार को।
नव भारत का निर्माण करा दे
युवाओं के दिल में पुनः सम्मान अपना दाखिल करा दे।

*****

अतिथि है देव जहाँ–जौनसार बावर

– डॉ. रवि नौटियाल
सहायक आचार्य, राठ महाविद्यालय पैठाणी

जौनसार–बावर उत्तर भारत के उत्तराखण्ड में एक पहाड़ी क्षेत्र है। यह देहरादून जिले के उत्तर–पश्चिम में हिमाचल प्रदेश राज्य की सीमा के साथ स्थित है। जौनसार–बावर क्षेत्र उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जनपद के अन्तर्गत आता है। इसके पूर्व में यमुना तथा पश्चिम में टोंस नदि बहती है। जौनसार–बावर क्षेत्र के अन्तर्गत देहरादून जनपद की तीन तहसीलें (कालसी, चकराता, और त्यूर्णी) आती है। यहाँ की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 1 लाख है। कृषि पशुपालन तथा दुग्ध यहाँ के लोगों की जीविका के प्रमुख साधन है।

जौनसार–बावर अपनी समृद्ध अतिथि देवो: भव की परम्परा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ वास्तव में अतिथि का आदर देव यानी ईश्वर की तरह किया जाता है। यहाँ जो भी पर्यटक या अतिथि घुमने के लिए जाता है वह यहाँ के सेवाभाव को देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। यहाँ के लोगों का यह आदर्श है कि स्वयं को चाहे जो भी परेशानियाँ हो लेकिन अतिथि को कोई भी असुविधा नहीं होनी चाहिए। यहाँ अतिथि के पैर स्वयं धुलाये जाते है जो अतिथि को पृथ्वी पर स्वर्ग की अनुभूति कराता है। जौनसार–बावर में अतिथि सत्कार का भाव बच्चे से लेकर वृद्ध सब में एक जैसा पाया जाता है। यहाँ अतिथि कुछ समय के लिए जाता है लेकिन जब वह यहाँ का अथिति सत्कार देखता है तो उसे यहाँ से जाने की इच्छा भी नहीं होती।

जौनसार–बावर के लोगों में ईमानदारी का भाव कूट–कूट कर भरा हुआ है तभी तो आज भी यहाँ गावों में किसी भी घर पर आपको ताला लगा नहीं मिलेगा। यहाँ अपराध कभी भी सुनाई नहीं देते जिससे यहाँ के लोगों की ईमानदारी का वास्तविक सबूत मिल जाता है। इस प्रकार जौनसार–बावर अपनी समृद्ध अतिथि देवो:भव की परम्परा आज बनाये हुए है जिसकी चर्चाएँ चारों–ओर सुनने को मिलती रहती है।

*****

परिंदा

– यशवन्त सिंह
छात्र, बी0एड0

जगा नहीं अभी ठीक से मैं
निकला नहीं अभी ख्वाब से मैं।
एक परिंदा मेरी खिड़की पे आ के
जोर–जोर से आवाज दे के
शायद मुझे जगा रहा हैं वो
याद मुझे कुछ करा रहा है वो।
कुछ जोर से ही चह–चहा रहा है
मानो मुझे कुछ कह रहा है
हुई कोई खबर तो अहसास हो जायेगा
पंछी तेरी मेहनत का असर हो जायेगा।

उड़ चला पंछी अब यहाँ से तूँ
फिर किसी को जगाने चला क्या तूँ ?
निभा रहा है अपना फर्ज तूँ यूँ ही
जगा रहा है सबको रोज तूँ यूँ ही।
तेरी कोई बात यहाँ जाया नहीं होगी
मगर इन्सान को फिर भी तेरी कदर नहीं होगी।
इन्सान में यहाँ अब कहाँ इन्सानियत रही
इनके दिल में अब तेरी वो बात भी न रही
अब तूँ ही कुछ दुआ कर खुदा से यहाँ
इन्साँ को फिर इन्साँ बना दे यहाँ।

'पदार्थो के सनातन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करना ही दर्शन है' **– प्लेटो**

उत्तराखण्ड की संस्कृति

– संदीप लिंगवाल
असि0प्रो0– बी0एड0 (स्ववित्तपोषित) राठ महाविद्यालय पैठाणी

संस्कृति को हम साधारण तौर पर संस्कारित जीवन जीने का ढंग मान सकते हैं। अतः संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें ज्ञान, विज्ञान, विश्वास, रीति–रिवाज, नैतिक मूल्य तथा नियम–कानून आदि सभी बातें सम्मिलित होती हैं, जिन्हें मनुष्य समाज का अभिन्न सदस्य होने के कारण अपने समाज से सहज प्राप्त करता है। इसकी जड़ मूलतः मानवीय संबंधों में होती है। इन संबंधों को सामाजिक मानदण्ड एवं मूल्य अदृश्य रूप से निर्देशित एवं संचालित करते हैं। मानवीय संबंधों की गहन प्रक्रिया पारस्परिक हित साधन से जुड़ी होती है, जिसके फलस्वरूप मानव समूह बना करते हैं। लोगों के विभिन्न समूह आपसी हित की कामना में एक दूसरे के सम्पर्क में आते रहते हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप संस्कृति का पल्लवन एवं विकास होता रहता है तथा वह एक समूह से दूसरे समूह तक, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रहती है। इस प्रकार संस्कृति हमारे जीवन का अविभाज्य अंग है, जो हमारी भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों जीवन धाराओं को ओतप्रोत करती है।

''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः,
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्''

किसी मानव समूह के ऐतिहासिक विकास क्रम में जीवन यापन की जो विशिष्ट शैली विकसित होती है वही उस समूह की संस्कृति कहलाती है।

देवात्मा हिमालय पुरातन काल से ही भारतीय संस्कृति, आध्यात्म, धार्मिक आस्था तथा नीर–नदियों का उद्गम स्थल रहा है व हमारी वैदिक आर्य संस्कृति का सजग प्रहरी रहा है। वैदिक युग के साधु सन्तों ने इस पवित्र भूमि को देवभूमि की संज्ञा दी है।

प्राचीन शिलालेखों व ताम्रपत्रों में इस क्षेत्र को पर्वताकार राज्य के रूप में वर्णित किया गया है। इस देवभूमि या तपोभूमि को और भी नामों से पुकारा जाता है, जिनमें ब्रह्मपुर, श्रीपुर, कार्तिकेयपुर, खशदेश, सुवर्णगोन्न आदि शामिल हैं। पौराणिक आख्यानों में हिमालय को चार खण्डों में विभाजित किया गया है– नेपाल, कूर्मांचल, केदारखण्ड और जलंधर–कश्मीर। गंगाद्वार (हरिद्वार) से लेकर हिमालय तक तथा तमसा (टोंस) से बोधांचल (बधाण) तक के क्षेत्र को केदारखण्ड कहा गया है, जिसे आज हम गढ़वाल कहते हैं। उससे पूर्व की ओर काली–शारदा नदी के क्षेत्र को मानसखण्ड कहा गया है, जिसे कुमाऊँ के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में इस प्रदेश को उत्तरांचल और फिर उत्तराखण्ड नाम दिया गया है।

'' हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम्,
तं देवनिर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते।''

कवि कुलगुरू कालिदास की रचनाओं में भगवान शिव उद्घोष करते हैं, जैसे मैं प्राचीन हूँ, उसी प्रकार यह केदारखण्ड भी प्राचीन है। जब मैं ब्रह्ममूर्ति धारण कर सृष्टि रचना में प्रवृत हुआ, तब मैंने इसी स्थान में सर्वप्रथम सृष्टि रचना की। महाकवि कालिदास ने अपनी प्रसिद्ध काव्यकृति 'कुमारसम्भव' में उत्तराखण्ड के भू–भाग को देवात्मा और पृथ्वी को मापने का मापदण्ड बताया है। उत्तराखण्ड में जहां गंगोत्री–यमुनोत्री जैसे पवित्र धाम हैं, वहीं दूसरी ओर हिमाच्छादित नन्दादेवी, त्रिशूल, चौखम्बा, द्रोणागिरी जैसी उच्च पर्वत श्रंखलायें हैं। उत्तराखण्ड की इस पावन भूमि में साधु–सन्तों ने भारतीय जीवन–दर्शन के विभिन्न आयामों पर विचार–मंथन किया। विद्वान ऋषि–मुनियों ने यहीं वेद, उपनिषद और शास्त्रों का प्रणयन किया। माता पार्वती

का मायका उत्तराखण्ड ही है। कहा जाता है कि महर्षि वेदव्यास ने मानव जाति के कल्याण के लिये बद्रीनाथ के पास माणा गाँव में महाकाव्य, वेदादि का सम्पादन किया। महाकवि कालीदास को भी उत्तराखण्ड के गुप्तकाशी के पास कविल्ठा (रूद्रप्रयाग) में जन्म लेने का गौरव प्राप्त है। शकुन्तला जैसी महान नारी का जीवन यापन स्थल कोटद्वार के पास मालिनी नदी के तट पर है। माता पार्वती से शिक्षा प्राप्त करने वाली बाणासुर की कन्या ऊषा का स्थान ऊखीमठ है। रावण वध के पश्चात कुछ वर्ष अयोध्या में राज कर पुरूषोत्तम राम ब्रह्महत्या के निवारणार्थ देवप्रयाग में अलकनन्दा–भागीरथी के संगम पर तपस्या करने आए।

आदिगुरू शंकराचार्य ने ज्ञान–ज्योति प्राप्ति के लिए उत्तराखण्ड जैसी तपोभूमि को ही चुना। सिखों के महान गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह ने उत्तराखण्ड को ही अपनी साधनास्थली बनाया। स्वामी रामतीर्थ ने परप–सत्य की खोज के लिए प्राचीन टिहरी नगरी जो अब टिहरी डैम बनने के कारण डूब चुकी है, को अपना साधना स्थल बनाया। प्रख्यात साहित्यकार रविन्द्रनाथ टैगोर ने मुक्तेश्वर (नैनीताल) को अपनी प्रसिद्ध कृति 'गीतांजलि' के लेखन के लिए चुना। महान संत स्वामी दयानंद सरस्वती ने सत्य और मानव धर्म की खोज के लिए केदारनाथ की पैदल यात्रा की।

संस्कृति अपना व्याकरण स्वयं बनाती है। संस्कृति का आधार स्वयं हमारा जीवन है। कत्यूरी राजवंश के उदय और आदिगुरू शंकराचार्य के उत्तराखण्ड में आगमन के बाद यहाँ वास्तुकला, शिल्पकला और चित्रकला का काफी विकास हुआ। उत्तराखण्ड की संस्कृति में मूर्तिकला तथा चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका आभास यहाँ की लकड़ी पर की गई नक्काशीयुक्त चित्रकला, छज्जों के आधार पर बने हाथी, शेर, घोड़ा, देवी–देवताओं, राजा आदि के अंकन से होता है। उत्तराखण्ड के मकानों की तिबारियों और खोलियों पर उत्कीर्ण गणेश की मूर्तियाँ यहाँ की उत्कृष्ट कला का दर्पण है। पंचबदरी, पंचकेदार, पंचप्रयाग आदि स्थानों पर बने हुए विभिन्न प्रकार के मंदिर गढ़वाल की उत्कृष्ट कला का परिचय दिलाते हैं।

भारतीय संस्कृति के कला पक्ष में अन्य शैलियों के अलावा पहाड़ी और राजपूत कला की दो विशिष्ट शैलियाँ हैं। जम्मू–कश्मीर से लेकर हिमाचल, गढ़वाल, कुमाऊँ आदि तक के सम्पूर्ण हिमालय क्षेत्र की कला पहाड़ी कला के अन्तर्गत आती है। औरंगजेब के शासनकाल में सुलेमान शिकोह के साथ गढ़वाल आने पर श्यामदास पुत्र हरिदास ने गढ़वाल की चित्रकला में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उत्तराखण्ड की प्रमुख भाषायें गढ़वाली, कुमाऊँनी, जौनसारी है। यहाँ की श्रमशील महिलायें खेती–बाड़ी और घरेलू कार्यो में पूर्णतः समर्पित हैं। यहाँ देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना, नृत्य–गीत, जागरों व पंवाड़ों के माध्यम से की जाती है। उत्तराखण्ड की संस्कृति में सच्चे समाजवाद के दर्शन होते हैं। यहाँ की संस्कृति 'सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः' पर आधारित है, जो यहाँ की जीवन पद्धति से किसी न किसी रूप में संलग्न है। यहाँ का सम्पूर्ण जीवन ज्ञान एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पित है।

प्रत्येक भारतीय को अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में उत्तराखण्ड की यात्रा करने की अंतिम इच्छा होती है। महात्मा गाँधी, इन्दिरा गाँधी और जवाहर लाल नेहरू की अन्तिम इच्छा के अनुसार उनकी देह की भस्म पवित्र हिमालय की चोटियों में बिखेर दी गई। गंगोत्री के साथ गोमुख, बद्रीनाथ के साथ औली, वसुन्धरा, फूलों की घाटी, हेमकुण्ड साहिब, तपोवन, केदारनाथ आदि स्थान ज्ञान तथा प्रकृति के साधकों का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र हैं। उत्तराखण्ड में विभिन्न भाषा–भाषी और विभिन्न धर्मो को मानने वाले लोग रहते हैं। यहाँ की संस्कृति तथा सांस्कृतिक विरासत समसामयिक है, परन्तु अपने आप में अनूठी है।

उत्तराखण्ड की संस्कृति इस प्रदेश के मौसम और जलवायु के अनुरूप ही है। उत्तराखण्ड एक पहाड़ी प्रदेश है और इसलिए यहाँ ठण्ड बहुत होती है। इसी ठण्डी जलवायु के आसपास ही उत्तराखण्ड की संस्कृति के सभी पहलू जैसे रहन–सहन, वेशभूषा, त्यौहार, खान पान, लोक–कलाएँ, लोकनृत्य, भाषाऐं, सिनेमा, पर्यटन, लोक साहित्य, रीति रिवाज आदि घूमते हैं।

*****

उत्तराखण्ड का प्राचीन राहु मन्दिर स्थान – पैठाणी

- राजेश कुमार
बी0ए0, पंचम सेमेस्टर

उत्तराखण्ड के केदारखण्ड में पौड़ी जिले के थैलीसैण ब्लॉक के ग्राम पैठाणी मे दो नदियों के संगम स्थल में बसा एक अति प्राचीन राहु मंदिर है। ये नदियाँ पूर्वी नयार तथा पश्चिमी नयार के नाम से जाने जाती हैं और यह मन्दिर मध्य हिमालय की गोद में बसा है। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से यह मंदिर या स्थान अत्यधिक सुन्दर है। प्राचीन अवधारणा के अनुसार उत्तराखण्ड के इस प्राचीन मंदिर में देवताओं के साथ दानव की पूजा की जाती है। धार्मिक महत्व की दृष्टि से यह स्थान अन्य स्थानों से थोड़ा भिन्न है क्योंकि यहाँ केवल देवता ही बल्कि दानव की पूजा की जाती है।

आस्था मे कुछ भी नामुमकिन नहीं :- यह थोड़ा अजीब जरूर है लेकिन कहते हैं जन आस्था और विश्वास में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। यही कारण है कि भारत का केवल एक मात्र यही मन्दिर है जहाँ देवताओं के साथ दानव की भी पूजा की जाती है। आस्था की दृष्टि से यह जानना जरूरी हो जाता है कि यहाँ पर देवताओं के साथ दानव की भी पूजा क्यों की जाती है? यह प्रश्न अपने आप मे जटिल प्रश्न है। और यह जानना भी जरूरी हो जाता है कि आखिर यहाँ पर दानव की भी पूजा क्यों कि जाती है? आस्तिक दृष्टि से यह प्रश्न महत्वपूर्ण है। लेकिन नास्तिक दृष्टि से यह प्रश्न महत्वपूर्ण नही है। इस मन्दिर के बारे में यह अवधारणा है कि जब समुद्र मंथन के दौरान राहु ने देवता का रूप धरकर छल से अमृतपान किया था तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शनचक्र से राहु का सिर धड़ से अलग कर दिया ताकि वह अमर न हो जाय। कहा जाता है कि जो राहु दानव था उसका कटा सिर इसी स्थान पर गिरा था। इस स्थान पर शिव के साथ होती है राहू की पूजा। जनधारणा या जनश्रुति है कि जहाँ राहु का कटा सिर गिरा था वहाँ पर एक मन्दिर का निर्माण किया गया और भगवान शिव के साथ राहु प्रतिमा की स्थापना की गई और इस प्रकार देवताओं के साथ दानव की भी पूजा होनी लगी। वर्तमान में यह राहु मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है ।

अनोखा है मन्दिर का शिल्प :-धड़विहीन राहु की मुर्ति वाला यह मन्दिर देखने में काफी प्राचीन प्रतीत होता है। इस मन्दिर की जो शिल्पकारिता है वह देखने की दृष्टि से काफी प्राचीन, अनोखी और आकर्षक है। पश्चिममुखी इस प्राचीन मन्दिर के बारे में लोगों का मानना है कि राहु और भगवान शिव की आराधना के लिए मन्दिर पूरी दुनिया में सबसे उपयुक्त स्थान है क्योकि यहाँ पर लोगों के पाप कटते हैं और लोग अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं।

*****

'अहिंसा प्रत्येक प्राणी के विरूद्ध द्वेष का अभाव है, यह प्रगतिशील दशा है। इसका अर्थ चेतन रूप से कष्ट भोगना है। अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सदभावना है। यह शुद्ध प्रेम है।' **- *महात्मा गाँधी***

मेरा मुल्कै रीत

– रविन्द्र सिंह रावत
बी0एड0, द्वितीय सेमेस्टर

मेरा मुल्कै की रीत पियारी
चल देखिकि औंला
द्यौ–द्यबतौं का थान डांड्योमा
चल भेंटिकि ऐजौंला।

ऊँचि–निसि डांडी काँठी
हैरी भैरी सारी
काम धाणी मा लगींन
गौं की बेटी ब्वारी
ग्वैर घसेरयूंक का गीतौं कि
मिठी भौण सुण्योंला।

नन्दुला को मैत यख
कैलाश महेश
देवी दयबतौं की भूमि
मेरु गढ़देश
जौ जस देन्दा दयबतौं की
नचदी डोली देख्यौंला।

बारामास कौंथीगौं की भली च रस्याण
औज्यों का ढोल
मेरा मूल्कै पच्छयाण
गौं का चौक मा पंड़ौ मंड़ाण
थड्या चौंफला खेल्यौंला।

कोदै की रोटी वैमा
कंकरयालु घ्यू
ऐकि त देख
तेरु लगी जालु ज्यू
छंछया, कंडाली अर बाड़ी झंगोरु
ज्यू भोरिकि खैयौंला।

मीठी बोली मनखि भला
भलु चा सामाज
चल देखि ऐली
मेरा मुल्कै रिवाज
यकुली होला बैठ्यां
गौं खोलों मा
दाना सयंणो।

भेंटयौंला
मेरा मुल्कै की
रीत पियारी
चल देखि कि औंला।

*****

Never Give UP

- **Ankita Bisht**
B.Ed., 4th Semester

Don't let others tell you that you can't do it,
Leave worries; focus on how you can make it.
Time will come when you will feel low,
Raise your eyes; take a leap above leaving
worries below.

Run- run so that you get closer to achieving your goal,
Aim higher, what a Aim that is which doesn't tremble
everyone soul,
You will learn something no matter even if you fail,
Use that knowledge and get on a bigger sail.

Higher aims need more hard work,
When you fail, everyone will smirk,
That's the time when you got a grind,
Sometimes to make a big leap, you got a take
few steps behind.

Enjoy the life, wake up early, sing a song,
Behave nicely, worries don't and won't last long,
Help everyone, spread love,
Keep calm and prove haters wrong.

Have faith in you, have trust on your hard work,
Keep going don't let quench your care,
Whole universe will conspire for you to win
Because it's true, that fortune favors' the brave.

*****

'Education is the complete development of individuality of the child, so that he can make an original contribution to human life according to his best capacity' ***- T.P. Nun***

राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता

- श्री मनोज कुमार सिंह
असि0प्रो0- (बी0एड्0), राठ महाविद्यालय पैठाणी

राष्ट्र की सत्ता प्राचीन है, राष्ट्रवाद की अवधारणा आधुनिक। राष्ट्र का अस्तित्व आबादी, भाषा, संस्कृति, इतिहास की साझेदारी पर निर्भर है, राष्ट्रवाद का इस विश्वास पर कि हम आपस में विश्वास, भावना या संस्कृति की साझेदारी रखते हैं। इसलिये राष्ट्र का जीवन विविधताओं के बीच एकसूत्रता से विकसित होता है। राष्ट्रवाद का विचार विविधताओं की अपेक्षा एकरूपता पर आधारित होता है। स्वभावतः राष्ट्र का धर्म से कोई संबंध नहीं होता है लेकिन राष्ट्रवाद धर्म से जुड़ सकता है। 'अहं राष्ट्री संगमनी जनानाम' से लेकर 'भलि भारत भूमि भले कुल जन्म' तक जिस राष्ट्र का समाज है वह कल्पना में नहीं वास्तव में मौजूद है। राष्ट्रवाद का विचार यूरोप से आया जहाँ, उसका विकास पुनर्जागरण काल में मध्य युगीन ईसाई प्रभुत्व को चुनौती देने के साथ हुआ था। इसलिए धर्म से संवाद अथवा धर्म के स्वीकार अस्वीकार का प्रश्न यूरोपीय राष्ट्रवाद की समस्या थी। भारत राष्ट्र की नहीं। आज जो लोग राष्ट्रवाद के विचार से धर्म को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, वे यूरोपीय साँचे को आरोपित कर रहे हैं।

यूरोप में राष्ट्रवाद के उत्थान के दिनों में ईसाई महामंडल के विरूद्ध जातीय संस्कृतियों का परचम लहराया। एक यूरोप की जगह फ्राँस, जर्मनी, इटली, इग्लैंड, स्पेन आदि राष्ट्रों से आधुनिक जातियों का और उनकी भाषाओं का आधार अपनाया, लेकिन साम्राज्य विस्तार के साथ यूरोपीय राष्ट्रवाद अन्य जातियों और राष्ट्रों के उत्पीड़न का साधन बन गया। भारत ने अंग्रेजी शासन में राष्ट्रवाद के उत्पीड़नकारी रूप का भरपूर अनुभव किया। अंग्रेजों से लड़ते समय भारतीय देशप्रेमियों ने भी जिस विचारधारा का सहारा लिया वह राष्ट्रवाद ही था। उत्पीड़नकारी देश का राष्ट्रवाद एक तरफ उत्पीड़ित समुदाय को विश्वास दिलाता है कि गुलामी उसके फायदे में है। और दूसरी तरफ अपने समाज में उपनिवेशों के कूट से प्राप्त साधनों का राष्ट्रवाद के औचित्य के रूप में इस्तेमाल करता है। उसी तरह उत्पीड़ित समाज का राष्ट्रवाद विदेशी शत्रु को सामने रखकर एकजुट होने का प्रयास करता है। इस एकजुटता के लिए वर्तमान वंचना के अलावा अतीत के गौरव का सहारा भी लेता है। इसलिए उत्पीड़क राष्ट्रवाद में लक्ष्य और अवधारणा की एकरूपता मिलती है।

उत्पीड़ित राष्ट्रवाद में अनेक धाराएँ और प्रवृतियाँ रहती है। इसमें सामंजस्य ही हो यह आवश्यक नही है। खुद भारतीय राष्ट्रवाद में क्रान्तिकारी सुधारवाद से लेकर रूढ़िवादी पुनरुत्थानवाद तक अनेक अन्तर्धाराएँ विद्यमान रही हैं। बीसवीं शताब्दी में आने के बाद भी एक तरफ जवाहर लाल नेहरू थे जो मानते थे कि राष्ट्रवाद एक प्रतिनिधी है, वह अन्य जातियों समुदायों के प्रति विशेषतः संबंधित राष्ट्र के विदेशी हुक्मरानों के प्रति घृणा या आवेश से जीवन शक्ति लेता है। दूसरी तरफ एम0एस0 गोलवरकर थे जो कहते थे कि हिन्दु-मुस्लिम एकता की बात करना हमारे समाज के प्रति सबसे बड़े द्रोह या अपराध है। इसलिए 1857 ई0 के महासंग्राम में दिल्ली की गद्दी पर मुगल बादशाह बहादुर शाह 'जफर' की प्रतीकात्मक प्रतिष्ठा को वे अंग्रेजी राज से भी दुःखद घटना कहते हैं।

इससे इतना तो प्रमाणित है कि राष्ट्रवाद के लिए एक वास्तविक या काल्पनिक, आन्तरिक या बाह्य शत्रु अनिवार्य है, जबकि राष्ट्र ऐसे शत्रु के बिना ही अधिक शान्ति और सौहार्द से विकसित होता है। नेहरू व गोलवाकर के परस्पर विरोधी विचारों से साफ है कि स्वाधीनता आन्दोलन के समय से ही भारतीय राष्ट्रवाद में अनेक अन्तर्धारायें मौजूद रही हैं। विदेशी शासन के हट जाने के बाद राष्ट्रवाद का कोई वास्तविक आधार नही बचा। विकास के लिये जिस रास्ते पर भारत चला उसमें संकट भूमण्डलीकरण के दौरान अधिक तेजी से बढ़े, तब यह आवश्यक हुआ कि विषमतापूर्ण पूँजीवादी विकास को जारी रखने के लिए समाज में आन्तरिक शत्रुओं का निर्माण किया जाए। इस बारे में सभी राष्ट्रीय दल एक साथ हैं। राजीव गाँधी की कांग्रेस ने

शाहवानों मामले में मुस्लिम रूढ़िवाद को तथा रामजन्म भूमि मामले में हिन्दू रूढ़िवाद को प्रोत्साहन दिया। फिर क्या था, हिन्दू–मुस्लिम एकता को राष्ट्रद्रोह मानने वाली शक्तियाँ अचानक रंगमंच पर प्रभावशाली होने लगी।

आज की परिस्थियाँ पिछले तीन दशकों के इसी विकास का नतीजा है। विडम्बना यह है कि मुस्लिम राष्ट्रवादी यह नहीं देखते कि खुद पाकिस्तान का निर्माण भले द्विराष्ट्र सिद्धांत से हुआ हो जिसके, जनक सावरकर थे और जिसका उपयोग जिन्ना ने किया लेकिन पाकिस्तान का गठन इस्लाम के आधार पर नही हुआ। उसे इस्लामी राष्ट्र बनाने का कार्य किया जनरल जिया–उल–हक ने जो सन्युक्त राज्य अमेरिका की मदद से सैन्य तख्ता पलट द्वारा पदासीन हुए थे, लेकिन यह इस्लामी राष्ट्रवाद अगर किसी के खिलाफ सिद्ध हुआ तो वह स्वयं पाकिस्तान है। इस्लाम के आधार पर वह बंग्लादेश को भी साथ नही रख सका। सिन्ध–बलूचिस्तान आदि को भी सन्तुष्ट नही रख पा रहा। उसी तरह हिन्दू राष्ट्रवादी यह नहीं देखते कि तमिल से असम तक भारत की कोई आधुनिक संस्कृति नही जिसमें अनेक धर्मावलम्बियों की मूल्यवान भूमिका न हो। खुद हिन्दी के पहले कवि अमीर खुसरो हैं और पहले कहानीकार रेवरेंड जेन्यूटन। तुलसी, मीरा, प्रेमचन्द्र, निराला का महत्व इन दोनों को समझे बिना नही समझा जा सकता। इसलिए हमारी राष्ट्रीयता का वास्तविक स्वरूप हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्रवाद के काल्पनिक सिद्धांत से टकराता है। विडम्बना यह है कि सत्ता में आने के बाद साम्प्रदायी राष्ट्रवादी विचारों की भिन्नता को ही राष्ट्रद्रोह बताकर दबाने लगता है।

धर्म से राष्ट्रवाद को जोड़ने का काम संयुक्त राज्य अमेरिका, पाकिस्तान तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तीनों करते हैं। जिस तरह भारत के हिन्दुत्व को उसके वास्तविक उदार स्वरूप में स्वामी विवेकानन्द, मदन मोहन मालवीय और डॉ0 राधाकृष्णन ने समझा था, उन्होंने इसे धर्मनिरपेक्ष, समावेशी और जातीय (सांस्कृतिक) अर्न्तदृष्टि दी। यह अकारण नही है कि गाँधी सनातनी हिन्दू थे लेकिन उनकी हत्या एक हिन्दूवादी ने की। गाँधी का हिन्दू भारतीय समाज का वास्तविक मनुष्य था। सावरकर का हिन्दू एक काल्पनिक निर्माण। धर्म पर आधारित राष्ट्रवाद इसी काल्पनिक निर्माण पर खड़ा होता है। उसे वास्तविकता पर आरोपित करता है, इसलिये वह उत्तेजना और अतिरेक से परिचालित होता है।

जाहिर है ऐसे में इतिहास को मिथक और मिथक को इतिहास में बदला जाता है। बैकुण्ठ को धरती पर अवस्थित करना या शल्य क्रिया से गणेश के सर का प्रत्यारोपण मानना मिथक को इतिहास बनाने का उदाहरण है। राणा प्रताप को विजयी दिखाना या पृथ्वीराज एवं शिवाजी को चक्रवर्ती मानना इतिहास को मिथक बनाने का प्रयास है। इस प्रक्रिया में इतिहास को अन्धेरे में ठेलना अनिवार्य हो जाता है। बाबर के नाम पर राष्ट्रवादी राजनीति करते समय यह बात कब बताई जाती है कि बाबर भारत नही आना चाहता था उसे आग्रहपूर्वक बुलाया था राणा सांगा ने राजपूत सामंतो से त्रस्त होकर। क्या पूछना अनुचित है कि दुनिया जब आपस में अधिक नजदीक हुई है तब संकीर्णता और रूढ़िवाद पर आधारित राष्ट्रवाद क्यों आवश्यक है ? क्या यह संयोग है कि कल तक अपनी पूँजी भेजने और प्रशिक्षित श्रम आमंत्रित करने के लिए भूमण्डलीकरण का दबाव डालने वाले देश अाज खुद अपने समाज के संकट के चलते राष्ट्रवाद का आश्रय लेने लगे हैं ? क्या यह स्मरण करना वाजिब है कि स्वाधीनता आंदोलन के समय जो भारत माता ग्रामवासिनी थी वह कारपोरेट पूंजी के समय सेठ से विनीदीनमर्दिनी हो गई है तो इसका कोई आर्थिक पक्ष है? सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की विडम्बना है कि जनता के आर्थिक प्रश्नों को पृष्ठभूमि में ढ़ककर वह काल्पनिक उत्तेजना से समाज को भर देता है।

*****

'शिक्षा उस विकास का नाम है, जो शैशव अवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है। अर्थात् शिक्षा वह क्रम है, जिससे मानव अपने को आवश्यकतानुसार भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना ही लेता है ' ***–टी0 रेमॉण्ट***

माँ की याद

- सन्तोषी भण्डारी
छात्रा, बी0एड0 2019-021

जो हर कदम पर मुस्कुराती है
जो हर दम गले से लगाती
अपना हर गम मुझसे छुपाती
खुद जाग कर मुझको सुलाती।

क्यों छोड़ चली मौं
तू मूझे इस संसार में अकेला
याद है माँ मुझे आज भी वे दिन
जब तू छोड़ गयी थी 14 वर्ष में मुझे अकेली।

तेरे बिना जीना तो सीखा माँ
पर जीने का तरीका ना सीख पाई
आज भी मुझे तेरी वो हर समझायी बाते याद है माँ
जब कोई मुझे कहते है बहुत अच्छे संस्कार है तुम पर
तब भी तेरी याद बहुत आती है माँ।

माँ मुझे हमेशा लगता था तू आके मुझे समझायेगी
पर तू तो बस सपनों में आ के अपनी एक झलक
दिखा के चली जाती थी माँ।
बस अब लगता माँ तू मेरी थी ही नहीं
तू मुझे मुसीबतों में छोड़ चली।

सब मुझे समझाते थे माँ की तू अब भगवान
हो गयी पर मुझे समझ नहीं आता था।
अब समझती हूँ मेरे अन्दर जो भी अच्छायी है
बस तेरी है माँ बस तेरी है।

माँ करती हूँ आज भी तेरे सपनों को पूरा
सोचती हूँ जहां भी हो मेरी माँ
खुश रहे मेरी माँ
पूछो मुझसे वो मेरी क्या थी
जीवन का अमृत या मीठी दवा थी
पीपल की छाव या ठण्डी हवा थी
दामन में जिसके उम्मीद का कारवां थी।

मेरी लिए सारी धरती आसमां थी
वो और नहीं मेरी ही माँ थी।

*****

बांझ गाँव की व्यथा

- रेखा नौटियाल
बी0पी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

बांझ गाँव की दशा च
बांझ कुड़ी पुकरदी च
जख कभी बसदा छा मनुष्य, पशु प्राणी
आज वख नि सुनैणी कैगी भी वाणी
जख छा वो नांरगी की दांणी
जख मिलदू छो वो छोयूँ कु पाणी
जख रेंदी छै वो खेतों की धाणी
झट आ जावा और खेके जावा
हिसोरा और म्योलू की दाणी
जख माँ बसदा छा सिटोला चखला
जख माँ रैंदा छा गोरा-बखरा
जख में पुजदा छा देवी-देवता
वू भी दिखणा छन मनुष्यों की मनुष्यता
कख गिना वू गाढ़ और गदिना
कख गिना वू पाणी का पंदेरा
जख छा वू गोरों का टोला
आज कखी भी नि दिखेंणा वू
लोगो का गाँव का खोला।।
जख पुगंड़ी घाम तपणी
तब कूड़ी छे मनूष्य राह देखणी
जख पुकरण लग्या बाटा-घाटा
अब आ जावा चुचो मेरा लाटा।।।
जख बाहरी खांणू खेके हूंणा छा तुम बीमार
तब 2019 मा करोना भी बोली आंदू छों में भी अबकी बार
कोरोना का अगने मा कैगी भी नी चलदी अबकी बार
लेकिन फिर भी मनण पडोलू मोदी जी की सरकार।।
जख छा दूध का गिलास नौणी का गुंदका
अब त आजावा सरपट अपड़ा मुल्का
''आग लगी जे डाला पर ,जलदा भी तेका पात
तुम क्यॉले जलणा छन हे पक्षियों,
जब पंख छन तुम्हरा पास''
"फल खैनी ये डाल क, रहना यूँ का साथ मा
यूँ ही आपकू धर्म च, जलण भी यूँ का साथ मा''

*****

राखी में

– **पूजा पन्त**
बी०ए०, द्वितीय वर्ष

भाई बहन का प्यार छिपा है राखी में
जीने का संस्कार छिपा है राखी में।
छटा बिखेरे रंग बिरंगी
रंगो का संसार छिपा है राखी में ।
दूर करे मतभेद दिलों का
बहुत बड़ा विचार छिपा है राखी में।
कितने कोमल धागे फिर भी
स्नेह भरा इक तार छिपा है राखी में।
उम्र लगे भाइया को मेरी
बहनों का उद्‌गार छिपा है राखी में।

भाई बहन के प्यार की मिसाल सदियों से दी जाती रही है। यह रिश्ता ही ऐसा है और इस तरह स्नेह की डोर में बँधा होता है कि भाई–बहन के प्यार को सबसे प्रथम आंका जाता है। रक्षाबन्धन का त्योहार ऐसा ही गरिमामय त्योहार है जिस दिन बहन भाई की कलाई पर राखी बांधकर उससे रक्षा का वचन लेती है। और अपने स्नेह को आर्शीवाद बनाकर भाई को सभी बाधाओं से दूर रखने की कामना करती है। हाँलाकि समय के साथ अपनत्व जताने और राखी मनाने के तौर तरीको में बदलाव आ गये हैं लेकिन रिश्ते की गरिमा आज भी बरकरार है। दोस्तों जिनके कोई भाई बहन नहीं है वे इस भाव को कतई मन से नहीं लाए कि काश उनके भाई या बहन होते। राखी का संदेश तो यही है कि हर भाई–बहन से उतना ही स्नेह रखो जितना अपने भाई से रखते हो।

*****

जीवन की राह

– **अमित पन्त**
पुस्तकालय लिपिक

बाँध हिम्मत को डगर चलना पथिक
तज के भय को तुझे संभलना है पथिक
राह में बाधायें पग–पग आएँगी
मुश्किलों से डटकर के लड़ना तू पथिक ।

हौसलों को पंख तू देना तनिक
उम्मीदों की खिड़कियाँ उघाड़ दे
दीप कुछ आशाओं के जगमग जगा।
राह में नित कोशिशें उछाल दे

अंधकार चाहे हो तू न झेंपना
छाले पड़े जो पैरो में न तू देखना
गीत हरदम ही विजय के तू गा
झुक जाएगा यह आसमां भी देखना।

गिरना सभलना जिंदगी ए–दस्तूर है
गिरकर जो संभला नही मंजिल दूर हैं
हारकर तू बैठना न हे पथिक
राह पर अडिग ही रहना तू पथिक ।

*****

सूचना का अधिकार अधिनियम का प्रभाव

- राजेन्द्र सिंह पंवार
लिपिक, राठ महाविद्यालय पैठाणी

पृष्ठभूमि :- भारत में सूचना का अधिकार कानून 2005 में बना और 12 अक्टूबर 2015 को इसका एक दशक पूरा हो गया इतने अल्प समय में इस कानून ने देश के अंदर लोगों का विश्वास जीता है। यदि हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था में इस कानून के बनने से लेकर वर्तमान समय तक के प्रभाव के परिदृश्य का अवलोकन किया जाए तो प्रतीत होता है कि इस कानून को लागू करने की ऐतिहासिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि बेहद रोचक है। कुछ ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन काल की व्यवस्थाएँ हमें आजादी की विरासत के रुप प्राप्त हुई थी, जिसमें जानने के अधिकार पर प्रतिबंध लगाने वाला गोपनीयता कानून 1923 भी प्रमुख था।

इस आंदोलन को प्रारम्भ करने में हमारी संसदात्मक व्यवस्था की सबसे छोटी इकाई ग्राम पंचायतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है जो कि 1994 में राजस्थान के पाली जिले के कोट की राणा पंचायत के ग्रामीण किसान मजदूर शक्ति संगठन ने अरुणा राय एवं निखिल डे के नेतृत्व में हमारा पैसा हमारा हिसाब जैसे नारों के माध्यम से सूचना के अधिकार के लिए आन्दोलन चलाया। अंत में सरकार को जनता के संघर्ष के सामने झुकना पड़ा और 12 अक्टुबर 2005 को जम्मू-कश्मीर राज्य को छोड़कर पूरे भारत में एक अधिकार के रुप में सूचना के अधिकार कानून को लागू कर दिया।

सूचना के अधिकार का प्रभाव :- हमारे देश में जब से एक अधिकार के रुप में सूचना का अधिकार कानून अस्तित्व में आया तब से लेकर अब तक बहुत तेजी से इसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से दिखाई पड़ने लगा। जिसका विवरण निम्न है -

आम जनता का सशक्तिकरण :- इस कानून का सबसे बड़ा योगदान नागारिकों के सशक्तिकरण में रहा है। यह कानून जनता के संघर्षो से बना ऐसा कानून है, जो आम जन को भारतीय लोकतंत्र में मालिक होने का अहसास करता है। उसे हर कानून की सूचना मिल सकती है, जो लोकसभा तथा विधान सभा के चुनिंदा सदस्यों को मिलती थी। इस प्रकार बिना चुनाव लड़े ही आम व्यक्ति सत्ता तथा सम्प्रभुत्ता सम्पन्न बना है। यही कारण है कि यह कानून एक अधिकार के रुप में आम नागरिकों को संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकार से आगे बढ़कर खुलेआम शासन-प्रशासन एवं संवैधानिक सस्थाओं की कार्यप्रणाली को जानने एवं परखने का अवसर देता है। इस कानून के बनने से लोगों की दशा बदल गयी है। वह अब किसी भी सरकारी विभाग में वर्षो से लंबित अपने जायज कामों के संबंध में सीधे सवाल पूछ सकते हैं कि मेरा काम क्यों नहीं हुआ? किसी अधिकारी की लापरवाही से मेरा नुकसान हुआ और विभाग की ओर से उन अधिकारी को क्या सजा मिलेगी? इस कानून के तहत् सूचना प्राप्त करने के प्रावधान इतने सफल हैं कि आम व्यक्ति सार्वजनिक एवं अपने हित से जुड़ी हुई कोई भी जानकारी बिना कानूनी सलाह के अपने घर में बैठे किसी भी सरकारी विभाग से प्राप्त कर सकता है।

आज कोई भी यह नहीं कह सकता है कि तुम पूछने वाले कौन होते हो? यह इस कानून की शक्ति है कि यह जनता के हाथ में बहुत ही शक्तिशाली औजार बन गया है। इस कानून का विभिन्न क्षेत्रों में भष्टाचार के कई मामलों को उजागर करने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से महत्वयपूर्ण योगदान रहा है।

जनसहभागिता को बढ़वा मिल रहा है :- इस कानून के बन जाने के बाद देश के लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति आम नागरिको का विश्वास कायम हुआ है। अब जनता एक-एक पैसे का हिसाब सरकार से माँग रही है कि कितना धन राशि किस

योजना पर कैसे खर्च हुई है और किस कारण से हुई है ? ऐसे तमाम सवालों का जवाब अब जनता सरकारी विभगों से माँग रही है। इसके कारण धीरे–धीरे इन विभागों की कार्यप्रणाली में बदलाव आने लगा है जिसका फायदा जनता को मिल रहा है।

समीक्षा :– इस कानून को लेकर नागरिकों में भारी उत्साह है। देश के प्रत्येक नागरिक इस कानून का प्रयोग एक अधिकार के रुप में सार्वजनिक क्षेत्रों एवं अपने व्यकितगत हित से जुड़ी हुई, अनेक सूचनाओं के बारे में कर रहा है। इस कानून के बन जाने से दशकों से सत्ता, शासन प्रशासन एवं आम नागरिकों के मध्य,जो दूरी थी उसमें कमी आयी है, परन्तु इस कानून के महत्व एवं क्रिया चयन से जुड़े कुछ अपवाद भी है। जिस से कारण यह कानून अपने उद्देश्यों पर खरा नहीं उतर पा रह है। जिन राजनीतिक पार्टीयों ने इस कानून को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी आज वे ही इसके दायरे में आने से कतरा रही हैं। अर्थात् जिसने इस कानून को एक बच्चे के रूप में जन्म दिया था वही आज इसकी स्थायी होने को लेकर सवाल खड़ा कर रहा है। लगता है कि इस कानून के प्रभाव एवं महत्व की लोकप्रियता राजनीतिक दलों को रास नहीं आ रही है तभी वह इसके दायरे में आने से कतरा रहे हैं। साथ ही नौकरशाही की उदासीनता भी इस कानून के महत्व को कम कर रही है। इस कानून के प्रयोग के बारे में आम नागरिकों की न्यूनतम जानकारी के कारण भी सभी लोग एक अधिकार के रुप में इस कानून का प्रयोग नहीं कर पा रहे हैं। नि:सन्देह इन सब अपवादों एवं बाधाओं के बाद भी इस कानून ने हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को एक नया आयाम दिया है तथा देश के आम नागरिकों के प्रति जो गलत धारणा बनी थी, उसे मिटाकर विश्वास बहाल करने में अग्रणी योगदान दे रहा है। आजादी के बाद आम नागरिकों को जानने के अधिकार के रुप में यह एक ऐसा अधिकार मिला, जिसने देश के प्रत्येक नागरिकों को सशक्त बना दिया है।

*****

देखा है कभी ?

– काजल नेगी
छात्रा, राठ महाविद्यालय पैठाणी

ऐसा कर के देखा है कभी ?
हँसते हुए के साथ हँसता तो हर कोई है
पर रोते हुए को हँसा कर देखा है कभी ?
पेड़ काटे तो हर किसी ने है
पर क्या एक पौधा लगाकर देखा है कभी ?
अपनी जिन्दगी तो हर कोई जीता है
पर दूसरों की जिन्दगी को जीकर देखा है कभी ?
अपने बारे में तो हर कोई सोचता है
पर दूसरों के बारे में सोचकर देखा है कभी ?
दूसरों से उम्मीद तो हर कोई रखता है
पर अपने आप को दूसरों की उम्मीद बनाकर देखा है कभी ?
अगर कभी इसमें से कुछ ना किया
तो दोस्तो कभी ऐसा करके देखना कभी ।

*****

‘शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है, जो उसमें अपने पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करे।’
– जॉन0 डीवी

भौगोलिक सूचना तन्त्र
(Geographic Information System)

- डॉ0 जितेन्द्र कुमार नेगी
भूगोल विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी

भौगोलिक सूचना तन्त्र पृथ्वी पर स्थित वस्तुओं तथा घटित घटनाओं के मानचित्र एवं विश्लेषण का संगणक आधारित उपकरण है। यह तकनीक सामान्य आँकड़ा आधार कार्य जैसे पृच्छा (Query) एवं सांख्यिकीय विश्लेषणों को मानचित्र आधारित भौगोलिक विश्लेषणों को एकीकृत करने में सक्षम है। यह क्षमता भौगोलिक सूचनातन्त्र को अन्य सूचना तन्त्र से अलग करता है। यही क्षमता विभिन्न घटनाओं की आख्या भविष्येक्षण एवं नियोजन हेतु विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी उपयोगकर्ता को अपनी ओर आकर्षित करता है।

वर्तमान समय की वैश्विक समस्याएँ जैसे– जनसंख्या अतिरेक, प्रदूषण निर्वनीकरण, प्राकृतिक आपदाएँ आदि विकट भौगोलिक घटनाएँ हैं। फल उत्पादन के लिए बेहतर मिट्टी की पहचान आकस्मिक वाहनों के लिए जाम रहित रास्ते की खोज या बाढ़ के समय सुरक्षित स्थान की पहचान आदि अनेक स्थानीय समस्याएँ भी भौगोलिक घटक से सम्बन्धित हैं, जिनके लिए भौगोलिक सूचना तन्त्र मानचित्र उत्पादन, सूचना सम्मिलिन, वस्तु स्थिति परिदर्शन, संश्लिष्ट समस्याओं का निराकरण, शक्तिशाली उपायों की प्रस्तुति तथा प्रभावकारी समाधानों को विकसित करने हेतु आधार प्रस्तुत करता है। अब विभिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं, विद्यालयों, सरकारों द्वारा अपनी समस्याओं के बेहतर समाधान के लिए भौगोलिक सूचना तन्त्र का उपयोग किया जा रहा है। मानचित्र निर्माण नई विधा नहीं है, किन्तु भौगोलिक सूचना तन्त्र के प्रयोग से यह कार्य बेहतर एवं त्वरित हो जाता है। यद्यपि यह तकनीकि अभी कुछ सीमित उपयोगकर्ता तक ही सीमित है, किन्तु इसका व्यापक उपयोग बहुत जल्द होने की सम्भावना है।

शाब्दिक अर्थ– भौगोलिक सूचना तन्त्र में तीन शब्द हैं भौगोलिक (Geographic), सूचना (Information) तथा तन्त्र (System) यह उपकरण समूह प्रथमतः क्षेत्रीय या भौगोलिक तत्वों से सम्बन्धित है। ये तत्व किसी भू–भाग में एक विशिष्ट अवस्थिति से संदर्भित होते हैं। ये तत्व या लक्ष्य भौतिक, सांस्कृतिक या आर्थिक हो सकते हैं। मानचित्र पर प्रदर्शित कोई भी तत्व वास्तविक जगत में अवस्थित उसी लक्ष्य का सांकेतिक प्रदर्शन होता है। द्विआयामी मानचित्र पर वास्तविक जगत के विभिन्न लक्ष्यों को प्रदर्शित करने के लिए चिन्हों, रंगों या रेखाओं का प्रयोग किया जाता है। संगणक आधारित मानचित्र ने मानचित्र का कार्य बहुत ही आसान कर दिया है। सूचना आँकड़ों के विशाल भण्डार को प्रस्तुत करता है, जिसकी आवश्यकता भौगोलिक सूचना तन्त्र में पड़ती है। प्रायः इसे तन्त्र की आत्मा कहते हैं। हर भौगोलिक लक्ष्य में एक विशिष्ट आँकड़ा समूह छिपा होता है जो पूरी तरह विस्तृत रूप में मानचित्रों पर प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है। इसलिए सम्बन्धित आँकड़े लक्ष्यों के साथ संलग्न कर दिये जाते हैं।

संकल्पना– वर्तमान काल सूचना युग के रूप में जाना जाता है। सन् 1980 के पश्चात कम्प्यूटर तकनीकी के विकास में क्रान्ति आने से सूचनाओं को एकत्र करने तथा विभिन्न प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक व्यवहारपरक समस्याओं के समाधान तथा शोध कार्यो में इनका उपयोग सरल हो गया है। आधुनिक कम्प्यूटर तकनीकी न केवल अति तीब्रता से धरातलीय आँकड़ों को एकत्रित व संग्रह करती है बल्कि इन्हें उपयोग योग्य बनाती है। परम्परागत सूचना प्रणाली द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़े एकत्रित करने, उन्हें व्यवस्थित विश्लेषण एवं मानचित्रण करने में अत्यधिक समय लगता था, जबकि आधुनिक कम्प्यूटर आधारित सूचना तन्त्र आधुनिक सर्वेक्षण यन्त्रों एवं विधियों तथा सुदूर संवेदन वैश्विक स्थिति निर्धारक तन्त्र (GPS) आदि द्वारा आँकड़े का संग्रहण बहुत कम समय में हो जाता है। आँकड़ों का विश्लेषण एवं मानचित्रण भी कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की सहायता से परम्परागत विधियों की तुलना में न केवल कम समय में बल्कि अत्यधिक सटीक एवं ग्राह्य रूप में किया जा सकता है। भौगोलिक सूचना तन्त्र में विभिन्न तकनीकों द्वारा वास्तविक संसार की घटनाओं के बारे में आँकड़े एकत्रित कर डिजिटल रूप में बदल कर उपयोग के लायक बनाया जाता है। इस प्रकार यह तन्त्र वास्तविक संसार की घटनाओं के वास्तविक आँकड़ों पर आधारित है। आँकड़ों का संग्रह एक विशेष

मॉडल के अन्तर्गत होता है, जिसे आँकड़ा आधार कहते हैं। आँकड़ा आधार (Data base) एक भौतिक खजाना है जिसका प्रत्येक आँकड़ा वास्तविक संसार के सन्दर्भ में किसी समय विशेष मे किसी भी बिन्दु पर हमारे ज्ञान को प्रदर्षित करता है। आँकड़ा आधार में प्राप्त सूचना की ग्राह्यता एवं उपयोगिता प्रयोगकर्ता के ज्ञान पर निर्भर करता है। आँकड़ों से पुनः सूचनाएँ प्राप्त कर आँकड़ों में वृद्धि की जाती है। वास्तव में भौगोलिक सूचना तन्त्र की अवधारणा यह है कि घटनाओं का चुनाव सामान्यीकरण तथा संश्लेषण आदि क्रियाएँ सूचनाएँ प्रदान करती है। जो विभिन्न व्यवहारिक समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। इस प्रकार भौगोलिक सूचना तन्त्र आँकड़ों एवं सूचनाओं का विज्ञान है।

उद्देश्य - 1. विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं को सम्पादित संग्रह एवं संगठित करने में सक्षम होना।

2. भू-संदर्भित आँकड़ों के विश्लेषण से नवीन सूचनाएँ विकसित करना।
3. अवस्थिति, दशा, प्रवृत्ति तथा प्रतिरूप का विश्लेषण एवं प्रतिरूपण।
4. अति जटिल आँकड़ा विश्लेषण की क्षमता रखना।
5. शीघ्रता एवं सरलता से सूचनाएँ उपलब्ध कराना एवं अद्यतन करने की क्षमता रखना।
6. आँकड़ों के वितरण एवं संचालन हेतु सक्षम साधन प्रदान करना।

आँकड़ा संग्रह एवं कार्य- सामान्यतः भौगोलिक सूचना तन्त्र छः प्रकार के कार्य करता है- आँकड़ा प्रविष्ट (In Put), परिचालन (Manipulation), प्रवन्धन (Management), पृच्छा एव विश्लेषण (Query and analysis), तथा दृश्य प्रदर्शन (Visualization)। भौगोलिक आँकड़ों को सर्वप्रथम उपयुक्त आँकिक प्रतिरूप में बदला जाता है जिसे अंकीकरण (Digiti Nation) कहते हैं। वर्तमान समय में यह कार्य अब स्वचालित होने लगा है। अंको के रूप में आँकड़े अब जी0आई0एस0 में प्रविष्ट हो जाते हैं, तब इन आँकड़ों को उद्देश्य एवं सॉफ्टवेयर विशिष्टता के अनुरूप रूपान्तरित करने पड़ते हैं तथा उनसे नई सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं, जिन्हें परिचालन कहते है। आँकड़ों को ठीक प्रकार से एवं आसानी से उपयोग करने के लिए ऐसे संगणक सॉफ्टवेयर तैयार किये जाते हैं जो आँकड़ों के उपयोग को आसान बना देते हैं। इन्हें आँकड़ा आधार प्रबन्धन तन्त्र कहते हैं और इस प्रक्रिया को प्रबन्धन कहते हैं। कुछ सॉफ्टवेयर के माध्यम से परिचालित सूचनाओं से उपयोगकर्ता अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करता है। यह कार्य आँकड़ों की स्थानिक एवं कालिक प्रवृत्तियों के विश्लेषण से सम्पादित करता है। जी0आई0एस0 में पृच्छा एवं प्रदर्शन समपेटी निर्धारण, जालतन्त्र विश्लेषण तथा अध्यारोपण विश्लेषण एवं भू-भाग प्रतिमानीकरण कार्यो द्वारा उपयोगकर्ता अपेक्षित समाधान प्राप्त करने की कोशिश करता है।

भारत में अनेक क्षेत्रों में भौगोलिक सूचना तन्त्र का प्रयोग हो रहा है। कम्प्यूटर मानचित्रण एवं स्थानिक विश्लेषणों के विकास से कई क्षेत्रों में इसका उपयोग हो रहा है। उदाहरण के लिए उपयोगिता नेटवर्क, कैडस्ट्रल मानचित्र, स्थलाकृतिक मानचित्रण, थिमैटिक मानचित्रकला, सर्वेक्षण एवं फोटोग्राफी, दूरस्थ संवेदन प्रतिबिम्ब संस्करण, कम्प्यूटर विज्ञान, ग्रामीण व शहरी नियोजन, पृथ्वी विज्ञान एवं भूगोल इत्यादि। भारत में जी0आई0एस0 तकनीकि प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन के लिए महत्वपूर्ण तन्त्र बनता जा रहा है। भारत में जी0आई0एस0 अनुप्रयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

1. प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन- वन संसाधन की व्यवस्था व वातावरणीय प्रभाव व्याख्या, बाढ़, मैदान, भूमिगत जल एवं जंगल प्रवसन मार्ग नियोजन।
2. शहरी नियोजन- यातायात नियोजन, शिल्प संरक्षण नियोजन, शहरी रूप रेखा नियोजन।
3. सार्वजनिक सुविधा नियोजन- जलपूर्ति व्यवस्था, नाली व्यवस्था एवं नियोजन मार्ग ऊर्जा उपयोग।
4. भूमि प्रबन्धन- मरवलीकृत उपविभाग, नियोजन रूप रेखा, भूमि लाभ, प्रकृति गुण व्यवस्था।
5. स्ट्रीट नेटवर्क- यातायात मार्ग स्थिति चुनाव नामावली स्थिति, आपदा नियोजन।

प्रदेश में बढ़ती महिला अपराधों की घटनाएँ

कु0 रीना
बी0ए0, दितीय सेमेस्टर

एक समय था जब पहाड़ों को उसके शान्त वातावरण के लिए जाना जाता था किन्तु अब मैदान के इलाकों के साथ–साथ पहाड़ों में भी असामाजिक तत्वों ने अपने पैर पसार दिये है। जिस पहाड़ में किसी समय में महिलाएँ सभी जगह अकेले ही जाया करती थीं बिना किसी भय के वही आज महिलाएँ अपने घरों से अकेले निकलने में भी कतरा रही है। देव भूमि कही जाने वाली इस धरती में कुछ मनुष्य रुपी राक्षसों की वजह से महिलाएँ अपने–आप को असुरक्षित महसूस कर रही है। प्रदेश की शान्त वादियों में कुछ असामाजिक तत्वों के प्रवेश से यहाँ की शान्ति भंग हो गयी है। महिलाओं के साथ होने वाली असामजिक घटनाओं ने इन आत्मनिर्भर महिलाओं के मन में एक डर बैठा दिया है एक ऐसा डर जो हर समय उसे अपने आस–पास महसूस होता है। तब चाहे वह अपने घर में हो या अपने कार्य स्थल में कही–न–कही इस डर ने महिलाओं का लोगों पर विश्वास न करने के लिए मजबूर कर दिया है। अब वे महिलाएँ घर से अकेले बाहर निकलने में भी डर महसूस कर रही है। महिलाएँ ही नहीं बच्चियाँ इसकी शिकार हो रही है। उत्तरकाशी में छोटी सी बच्ची को उसके घर से अगवा कर उसके साथ दुष्कर्म कर उसको मौत के घाट उतार दिया गया। इस घटना ने पूरे प्रदेश के दिल को दहला दिया। हाल में पौड़ी जिले में एक 18 वर्षीय लड़की को जिन्दा जलाने की कोशिश की गयी जिसमें लड़की का 70% से भी अधिक शरीर का भाग झुलस कर क्षतिग्रस्त हो गया।

इन सभी अपराधिक घटनाओं से स्पष्ट हो गया है की महिलाएँ किसी भी स्थान में सुरक्षित नहीं है तब चाहे वह स्कूल हो या घर में हो या कार्यस्थल, हर जगह महिलाएँ अपने–आप को असहाय महसूस कर रही हैं।

नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं के खिलाफ अपराधिक मामले दोगुने हो गए हैं। रिपोर्ट बताती है कि उत्तराखण्ड में 300 से अधिक महिलाएँ दुराचार का शिकार हुई है। हर 30 घण्टे में एक महिला से दुराचार का मामला सामने आ रहा है। महिलाओं के खिलाफ 70 फीसद अपराध सिर्फ तीन जिलों देहरादून हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर में ही है। राज्य महिला आयोग के आँकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं। राज्य महिला आयोग में हर साल महिला अपराध से जुड़े एक हजार से भी अधिक मामले दर्ज हो रहे हैं। वर्ष 2015–16 में इन जिलों में अपराध के कुल मामलों का 74.6 फीसद, 2016–17 में 75.4 फीसद और 2017–18 में 68.5 फीसद मामले दर्ज हुए है। 2017 में जनवरी से दिसम्बर तक 2391 केस पुलिस रिकॉर्ड में दर्ज हुई हैं। प्रदेश में महिलाओं के साथ हो रहे आपराधिक मामले तेजी से बढ़ रहे हैं, जो एक गम्भीर और चिन्तनीय विषय बन गया है। प्रदेश में अपराध बढ़ने के कई कारण है जैसे महिलाओं में जागरुकता का न होना, सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग और क्षेत्र में बाहरी लोगों का प्रवेश आदि प्रमुख कारण है।

प्रदेश में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों के कम करने के लिए सरकार को प्रभावी कदम उठाने चाहिए। सरकार को बाहर से आने वाले मजदूरों का सत्यापन करवाना चाहिए। स्कूल हो या कोई भी कार्यस्थल केन्द्र सत्यापन होने चाहिए। साथ ही महिलाओं के बीच व्यापक रूप में जागरुकता अभियान चलाया जाना चाहिए और उनको उसके अधिकारों के प्रति जागरुक करना चाहिए। महिलाओं के साथ अपराध करने वाले बदमाशों के लिए तीव्र गति से एवं उचित दण्ड की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे सीख प्राप्त करके दूसरा व्यक्ति ऐसा करने का साहस न करे। इन सभी उपयों से महत्वपूर्ण है महिलाओं को स्वयं आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए जिससे कि बहु बेटियाँ अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकें। क्योंकि जब तक महिलाएँ खुद को बचाने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेती है तब तक बहुत देर हो जाती है और वह अपराधी का शिकार बन जाती हैं। इसलिए हर स्कुल और कॉलेजों में अनिवार्य रूप से सेल्फ डीफेन्स (आत्मसुरक्षा) की कक्षाएँ होनी चाहिए, इससे बच्चियाँ किसी भी परिस्थिति में अपनी रक्षा स्वयं कर सकती हैं। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और कभी भी अपने आपको असहाय महसूस नहीं करेगी। मैं यही कहना चाहूँगी कि एक स्त्री जगत जननी होती है। हमे उसका सम्मान करना चाहिए। हम किसी महिला को कठिनाई में देखते है तो हमें उसकी सहायता करनी चाहिए क्योंकि वह भी किसी की माँ, बेटी और बहू है। हमें इस बात को सदैव याद रखना चाहिए कि जब नारी है तभी नर है। यदि नारी नही तो नर का अस्तित्व भी इस संसार से खत्म हो जाएगाा।

*****

उत्तराखण्ड राज्य : औचित्य, अवधारणा, विकास एवं संभावनाएँ

– डॉ0 देव कृष्ण थपलियाल

असि0प्रो0– (राजनीति विज्ञान), राठ महाविद्यालय पैठाणी

जन आकांक्षाओं व लम्बे सघर्षो के फलस्वरूप 27 जुलाई को 'उत्तर प्रदेश पुनर्गठन विधेयक-2000' देश की सबसे बडी पंचायत (लोक सभा) में प्रस्तुत हुआ। 01 अगस्त को 'उत्तरांचल विधेयक' लोक सभा में और 10 अगस्त को राज्य सभा में पारित कर, 28 अगस्त को तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति के0आर0 नारायणन नें 'उत्तर प्रदेश पुनर्गठन विधेयक' को अपनी संस्तुति प्रदान कर 09 नवम्बर, 2000 को उत्तरांचल (अब उत्तराखण्ड) को तत्कालीन प्रांत (उत्तर प्रदेश) की विशालता व इस पर्वतीय भू-भाग की भौगोलिक विषमताओं को ध्यान में रखते हुए देश के 27 वे राज्य के रूप में स्थापित कर दिया। 13 जनपदों के इस पहाड़ी राज्य की सीमा, हिमांचल व उत्तर प्रदेश से सटी हुई है। चीन व नेपाल की अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं से लगे इस राज्य में दो मण्डल (गढ़वाल व कुमाऊँ) है। उत्तराखण्ड 110 तहसीलें, 18 उप तहसीलें, 95 विकासखण्ड, 670 न्याय पंचायत 7,954 ग्राम पंचायत व 16,674 ग्रामों की संख्या है। 86 शहरी क्षेत्रों की इकाईयों के अलावा 08 नगर निगम, 39 नगर पालिका परिषदें, 47 नगर पंचायत, 09 छावनी परिषद तथा लोकसभा क्षेत्र के लिए 05 एवं राज्य सभा के लिए 03 सीटें निर्धारित की गई हैं। राज्य को 70 विधानसभा क्षेत्रों में बाँटा गया है।

2011 की जनगणना के अनुसार कुल जन आबादी 10116752 में 5154178 पुरूष व 4962574 महिलाऐं हैं। लिंगानुपात की दृष्टि से 963:1000 है। राज्य का जनसंख्या घनत्व 189 प्रति वर्ग किमी0 है, तथा मानव संपदा की बौद्धिकता काबिले तारीफ है। 78.80 फीसदी साक्षरता दर में 87.40 पुरूष व 70 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर हैं।

राज्य की राजधानी फिलहाल (अस्थायी) देहरादून में स्थापित की गई है, हालाँकि राज्य के अधिकाँश वाशिंदे राज्य की स्थाई राजधानी को (राज्य के) ठीक मध्य में स्थित गैरसैंण (चन्द्रनगर) में स्थान्तरित किये जाने के पक्षधर रहे हैं। यह 'नगर' उत्तराखण्ड राज्य के जनमानस के काफी करीब है। आम धारणा भी यही है, की राज्य की बेहतरी के लिए यह स्थान बेहद उपयुक्त है। यद्यपि तमाम समितियों व आयोगों की रिपोटों ने भी इसे उपयुक्त पाया, बावजूद इसके इसे अभी तक पूर्ण राजधानी का दर्जा नहीं मिल सका, जिससे आम लोगों में गहरी नाराजगी है। जनभावनाऐं ज्यादा उद्वेलित न हो जायें, इस कारण से सरकारें समय-समय पर गैंरसैंण में थोड़ा-थोड़ा 'राजनीतिक कर्मकाण्ड' सम्पन्न करा कर आमजन को यह भरोसा दिलाने में कामयाब हो जाती हैं की आने वाले दिनों में स्थायी राजधानी गैरसैंण ही होगी। फिलहाल जनांकाक्षाओं के अनुरूप स्थाई राजधानी गैरसैंण में स्थापित होगी, कहना मुश्किल है।

53,483 वर्ग कि0मी0 क्षेत्रफल में फैले इस प्रांत का बड़ा हिस्सा (46,035 वर्ग कि0मी0) पहाड़ी है, जबकी अपेक्षाकृत न्यून क्षेत्र (7,448 वर्ग कि0मी0) में मैदानी क्षेत्र है। इस राज्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी विशाल भूभाग (38,000 वर्ग किलोमीटर) में फैली वन्य संपदा है। जहाँ अनेक प्रकार की प्राकृतिक वन संपदा पैदा होती है। इन वनों में विलक्षण किस्म की जड़ी-बूटी से लेकर औषधीय गुणों से परिपूर्ण वृक्षों की पैदावार बहुतायत में होती है। रामायण में प्रसंग आता है की युद्ध के दौरान जब लक्ष्मण बेहोश हो गये तो तत्कालीन चिकित्सक (वैद्य) की सलाह पर हनुमान जी इसी क्षेत्र से संजीवनी बूटी लाये थे, जिसके सूँघने मात्र से लक्ष्मण तत्काल स्वस्थ हो गये। आज भी इस क्षेत्र में दुर्लभ प्रकार की पादप-वनस्पतियों का अम्बार है, जिनका रचनात्मक उपयोग कर मानव जीवन के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है तथा इस प्रकृति प्रदत्त वरदान से राज्य की आर्थिकी से लेकर क्षेत्रीय युवाओं को रोजगार के अवसरों में वृद्धि की जा सकती है। राज्य के मुख्य प्रतीक चिन्ह भी इसी नैसर्गिक छटा की अभिव्यक्ति है। यहाँ का राजकीय पशु कस्तुरी मृग, पक्षी हिमालयी मोनाल है और राजकीय पुष्प के रूप में

बेहद खूबसूरत ब्रह्म कमल है, प्रकृति को अपनी उपस्थिति से गुलजार कर देनें वाले 'बुरांश' को राज्य के 'राजकीय वृक्ष' का दर्जा प्राप्त है।

राज्य बनने से पहले भी उत्तर प्रदेश का यह पर्वतीय क्षेत्र अपनी दुर्गम भौगोलिक संरचना के कारण काफी पिछड़ा हुआ है। अशिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बीजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं के अभाव ने यहाँ के विकास को निरन्तर बाधित किया। सामान्य और रोजमर्रा की चीजों को जुटाने के लिए भी लोगों को मीलों का सफर तय करना पड़ता है। आज भी पीने के स्वच्छ पानी के लिए महिलाओं को अपने सिर पर पानी लाने को मजबूर होना पड़ता है। खेती-किसानी के लिए कोई ठोस तकनीकी तो नहीं है, परन्तु कुछ क्षेत्रों में कुछ पैदावार होती भी है तो भी उसके उचित रख-रखाव के लिए (कोल्ड स्टोरेज के) अभाव के कारण खेती 'मुनाफे का सौदा' नहीं बन पाती है। जंगली जानवरों के भय से आम लोग इतने परेशान हैं, कि वे लोग भी जिन्हें खेती-किसानी में थोड़ी रूचि भी है, वे खेती छोड चुके हैं।

व्यवस्थित स्कूली शिक्षा की कमी, अस्पतालों में जरूरी दवा, चिकित्सक व आधुनिक उपकरणों के अभाव में बीमार स्वास्थ्य सेवाओं से लोगों को जरूरी ईलाज के लिए राज्य से बाहर जाना पड़ रहा है। बेरोजगारी राज्य की एक बड़ी समस्या है, राज्य का युवा शिक्षित और कुशल होने के बावजूद सम्मानजनक रोजगार के लिए तरस जाता है। नतीजन जो लोग थोड़े समर्थ हुऐ उन्होंने पलायन की राह पकड़ ली। वह मैदानी क्षेत्रों की ओर चला गया। अपनी अच्छी नौकरी, कारोबार, शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधाओं के चलते, उसने वापस कभी पहाड़ की ओर मुड़ने की जहमत नहीं उठाई। यही क्रम बाद के लोगों ने भी अपनाया। नतीजन पहाड़ खाली होते चले गये, वहाँ मूलभूत सुविधाओं के लिए न तो कभी कोई राजनीतिक नेता पहुँचता था ना ही वहाँ की भोली-भाली जनता स्वयं जागरूक रही। कहावत है, 'पहाड़ का पानी और पहाड़ी की जवानी कभी उसके काम नहीं आई।' जो लोग यहाँ थे उनकी अर्थव्यवस्था का आधार 'मनीआर्डर' रहा।

यद्यपि पृथक राज्य बनने के बाद भी पलायन की समस्या जस के तस बनी हुई है। वर्तमान सरकार ने 'पलायन' से निबटनें के लिए एक रिटायर्ड आई0एफ0एस0 अधिकारी श्री एस0एस0 नेगी के नेतृत्व में 'उत्तराखण्ड पलायन एवं ग्राम्य विकास आयोग' गठन कर थोड़ी गम्भीरता दिखाई है। लेकिन उसकी पहली रिर्पोट में जो तथ्य सामने आये हैं, वे राज्यवासियों और नीति-निर्माताओं की आँख खोल देने वाले हैं। राज्य की पलायन दर 36.02 फीसदी तक पहुँच गई है। पिछले 10 सालों में 6,338 ग्राम पंचायतों से 3 लाख 83 हजार 726 लोगों ने अस्थाई रूप से पलायन किया, जबकी इसी अवधि में 1 लाख 18 हजार 981 लोग स्थायी रूप रूप से पहाड़ को सदा के लिए बॉय-बॉय कह दिया। पलायन कर गये 565 ऐसे गाँव व तोकों को चिन्हित किया गया जिनकी आबादी (2011 की जनगणना) आधी (50 प्रतिशत से भी कम) हो गई, जबकी 734 गाँव बिल्कुल गैर आबाद यानी भुतहा (वहाँ अब कोई रहता) हो गये हैं। गौर करने वाली बात ये भी है की सीमान्त क्षेत्र जो अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से करीब 5 किमी0 के दायरे के भीतर हैं, ऐसे 14 गाँव भी खाली हो गये, जो सुरक्षा के लिहाज से भी बेहद संवेदनशील है, जिनका आबादी रहित होना उत्तराखण्ड के लिए ही नहीं राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए भी गम्भीर चुनौती है। अपनी माटी को छोड़ आये 70 फीसदी लोग राज्य के नगर-कस्बों में बसे, 29 फीसदी लोग अपनी मातृभूमि को छोड़ देश के विभिन्न शहरों/नगरों/कस्बों को चले गये, जबकि 1 प्रतिशत पहाड़ी लोग ऐसे भी निकले जिन्होंने अपना राज्य ही नहीं बल्कि देश भी त्याग दिया।

अत: यह स्थिति तब है, जब इस क्षेत्र को राज्य का दर्जा प्राप्त हो चुका है। इसके साथ ही आधुनिकता, सूचना प्रौद्योगिकी, टैक्नॉलाजी के तेजी से विकास के कारण अनेक सुविधाएँ प्राप्त हो रही हैं। जिनसे राज्य में बहुमुखी विकास के आयाम विकसित किये जा सकते हैं। लोगों को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सड़कों का निर्माण कर 'पलायन' जैसी समस्याओं से निजात दिलाई जा सकती है। लेकिन आज भी राज्य की स्थानीय सरकार इस बात को लेकर बिल्कुल भी गंभीर नहीं है। जिन कारणों से क्षेत्रीय जनता ने लम्बे संघर्ष का रास्ता अपनाकर पृथक पर्वतीय राज्य का गठन किया, जिन पथरीले और घुमावदार पगडंडियों से गुजर कर स्थानीय जनता ने 'राज्य' का मुकाम हासिल किया वह कम दिलचस्प नहीं है।

यद्यपि आजादी से पहले भी इस भूभाग को राज्य बनाने की माँग उठती रहीं थी परन्तु देश की राजनीतिक सत्ता पर अंग्रेजों का एकाधिकार होने कारण इसको ज्यादा तवज्जों नहीं मिल पाई। हालाँकि तत्कालीन मंच (काँग्रेस) ने 5 और 6 मई सन् 1938 को सबसे पहले श्रीनगर गढ़वाल में काँग्रेस के सम्मेलन में इस क्षेत्र के लिए जन आकांक्षाओं के अनुरूप अलग प्रशासनिक व्यवस्था का संकल्प पारित किया। आजादी के तत्काल बाद 1952 में भारतीय कम्युनिस्ट के तत्कालीन महासचिव पी0सी0 जोशी ने पृथक राज्य की माँग का ज्ञापन केंद्र सरकार को सौंपा। पेशावर काँड के नायक वीर चन्द्र सिंह गढवाली ने पं0 जवाहर लाल नेहरू के समक्ष इस योजना का प्रारूप तैयार कर पृथक राज्य के रूप में इसे मान्यता देने का आग्रह किया टिहरी नरेश ने भी 1957 में इस माँग को आगे बढ़ाया। इसी कारण 1973 में पर्वतीय विकास मंत्रालय स्थापित करते हुऐ एक मंत्री को उसके काम के लिए स्वतंत्र रूप से शक्तियाँ प्रदान कर दी गई। उत्तरांचल राज्य परिषद ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया। चमोली के प्रताप सिंह नेगी के नेतृत्व में एक विशाल पदयात्रा भी बद्रीनाथ से वोट क्लब (नई दिल्ली) तक हुई। पर्वतीय राज्य परिषद का पुर्नगठन करते हुऐ उत्तराखण्ड के दो सांसद प्रताप सिंह नेगी और नरेन्द्र सिंह बिष्ट को इसमें शमिल किया गया। साथ ही परिषद् का नाम बदलकर पृथक पर्वतीय राज्य परिषद् कर दिया गया। इसी संबंध में 24-25 जुलाई 1979 को मसूरी में उत्तराखण्ड क्रान्ति दल का गठन किया गया। तमाम जन संघर्षो को देखते हुए 12 अगस्त 1991 को उत्तर प्रदेश की विधान सभा नें अलग राज्य का प्रस्ताव पास किया और मंजूरी के लिए केंद्र सरकार के पास भेज दिया। 1994 आते-आते पृथक राज्य उत्तराखण्ड की माँग को लेकर लोग सड़कों पर आ गये थे। खटीमा में आँदोलनकारियों पर गोली चली। 02 अक्टूबर को दिल्ली की ओर कूच कर रहे शान्तिप्रिय आँदोलनकारियों पर मुजफ्फरनगर जिले में रामपुर तिराहे पर पुलिस ने फायरिंग की और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार की घटनाएँ हुई। अलग राज्य को लेकर श्रीनगर के श्रीयंत्र टापू पर आमरण अनशन पर बैठे आँदोलनकारियों पर पुलिस गोलीबारी में यशोधर बैजवाल और राजेश रावत की मौत हो गई। तब उत्तर प्रदेश विधान सभा ने 26 संशोधनों के साथ 'उत्तर प्रदेश राज्य पुर्नगठन विधेयक 1998' को पारित कर दिया और यही वह अंतिम दस्तावेज था जिसनें आगामी 9 नवम्बर 2000 का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसी दिन आम पहाड़ वासियों के सपनों का प्रकटीकरण हो गया। इस क्षेत्र के आम लोगों को अपने भाग्य के निर्माण की स्वतंत्रता प्राप्त हो गई। सन् 2007 में राज्य का नाम उत्तराखण्ड कर दिया गया। लेकिन यहाँ जो प्रकृति प्रदत्त संसाधन ईश्वर नें प्रदान किये थे, उनका समुचित संवर्द्धनात्मक और सरचनात्मक तरीकों से प्रयोग न होने के कारण उसका लाभ आम लोगों तक नहीं पहुँच रहा है।

मध्य हिमालय में बसे होने के कारण इसकी प्राकृतिक और भौगोलिक संरचना बेहद आकर्षक व मनमोहक है, जो किसी को भी लुभाने में सक्षम है। पर्यटन और तीर्थाटन के लिए राज्य अन्य हिमालयी राज्य से बेहतर स्थिति में है, जिसके समुचित उपयोग से रोजगार सृजन व आर्थिक विकास में वृद्धि की जा सकती है। हिमालय के उत्तुंग शिखरों के सानिध्य में पल्लवित अनेक महत्वपूर्ण नदियों-भागीरथी, अलकनंदा, मन्दाकिनी, नन्दाकिनी, सरस्वती, पिण्डर, यमुना, टौंस, धौली, नयार आदि का उद्गम स्रोत है जो की मात्र नदियाँ नहीं हैं बल्कि प्राचीन भारत की सस्कृति एवं साहित्य की प्रेरणादायिनी भी हैं। ऊँचे-ऊँचे हिमशिखरों, गहरी-संकीर्ण नदी-घाटियों में टेढ़ी-मेढ़ी बलखाती कल-कल कर प्रवाहित नदियों, हरी-भरी पादप वनस्पतियों से भरपूर उत्तराखण्ड राज्य अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य वाला है। हिमालय की गोद में बसे इस पर्वतीय प्रदेश ने एक पृथक प्राकृतिक स्वरूप सृजित किया है। एटकिन्सन (1884) ने स्पष्ट किया है की भौगोलिक, ऐतिहासिक, एवं साँस्कृतिक दृष्टि से भाबर से लेकर हिमालय तक तथा टोंस-यमुना से लेकर काली शारदा तक का क्षेत्र एक है। इससे लगता है की परम सत्ता ने बड़े ही मनोयोग से इस धरती का निर्माण किया है।

बद्री-केदार, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि पवित्र तीर्थ स्थलों एवं देवों के निवास-भूमि के रूप में अपने को प्रतिष्ठित कर लिया है। गोमुख, योगध्यान, रूद्रनाथ, तुंगनाथ, मदमहेश्वर, कल्पेश्वर, देवप्रयाग, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग, विष्णु प्रयाग, पूर्णागिरी, जर्जिया, सीतावर्नी, नैनीताल, देवीधुरा, हाट, कलिंका, स्याहीदेवी, कोटभ्रामरी, ज्वाल्पा, सूरकण्डा, कुंजापूरी, चंद्रबदनी,

धारीदेवी, अनुसूइया देवी, कालीमठ और हनोल आदि तीर्थस्थल मनोरम और शान्ति प्रदान करने वाले हैं, जिन्हें अभी तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों का इंतजार है, बिना किसी ठोस कार्य योजना के कारण ये तीर्थस्थल अभी महत्वहीन बने हुऐ हैं। वैदिककाल से लेकर महाकाव्य काल तक के साहित्यों में इस भूमि को पवित्र भूमि, देवभूमि के नाम से वर्णित, इंगित किया है। महाभारत में हिमालय के इस क्षेत्र को देवताओं के निवास-स्थान, तथा सभी तीर्थो का धाम कहा गया है। (महाभारतः शान्तिपर्व- 192 : 9-11) के अनुसार स्वर्ग के समान इस देवभूमि के निवासी चरित्रवान हैं। इनका दाम्पत्य जीवन सुखी है, किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती है, कोई रोगग्रस्त नहीं है। यहाँ के निवासी न लालची हैं न तो दूसरों की समृद्धि से ईर्ष्या करते हैं। अधर्म यहाँ लेशमात्र नहीं है।

इसीलिए तीर्थाटन के साथ-साथ पर्यटन के लिए राज्य में यत्र-तत्र बिखरी प्रकृति की अभीभूत कर देने वाली सुन्दरता, नयनाभिराम दृश्यों की बदौलत राज्य पर्यटकों व तीर्थ यात्रियों की आमद बढ़ा सकता है। जिससे न केवल राजस्व में खासी वृद्धि होगी, अपितु राज्य के नौजवानों को रोजगार के प्रचुर अवसर उपलब्ध होंगे। जरूरत है इन महत्वपूर्ण स्थानों को सँवारने और विस्तृत कार्य-योजना तैयार करने की। लाखामण्डल, आदिबदरी, चम्पावत, अल्मोड़ा, गोविषाण, (काशीपुर) बधाणगढ़ी, चाँदपुर गढ़ी, श्रीनगर आदि पुरातात्विक दृष्टि के दर्शनीय स्थान हैं। कुछ चोटियाँ जैसे छोटा कैलाश, नंदादेवी, त्रिशूल, पंचाचूली, राजरम्भा, छिरिग्वे, मैकतोली, हरदेवल, कामेट, चौखम्बा, केदारडोम, भागीरथ, थलईसागर, भृगुपंत, बन्दरपूंछ, स्वर्गारोहिणी, थलोविच व नंदाघुंटी हैं। उच्च हिमालयी झीलें भी कम आकर्षक नहीं हैं। परिताल, आछरीताल, सहस्रताल, केदारताल, वासुकीताल, डोंडीताल, पार्वतीताल, नंदाकुंड, भेंकलताल तथा मध्य हिमालयी झीलें श्यामलाताल, हरीशताल, नौकुचियाताल, भीमताल, सातताल, नैनीताल, खुर्पाताल, तड़ागताल हैं। कुछ बड़े बाँध भी हैं, जिन्हें पर्यटन स्थल का रूप दिया जा रहा है। टिहरी बाँध, नानकसागर, किच्छा डैम, हरीपुरा डैम, तुमड़िया डैम, रामगंगा डैम और आसन जलाशय आदि हैं।

नैसर्गिक रूप से हमें जो मिला है, उसे राज्य और केन्द्र सरकार द्वारा संरक्षित घोषित किया गया। यह बड़ी उपलब्धि है, जिन्हें देखने-समझने के लिए विश्वभर के लोग आते हैं। कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (क्षे0फ0 520.82 वर्ग किमी0), नंदादेवी (क्षे0फ0 624.60 वर्ग किमी0), फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (क्षे0फ0 87.50 वर्ग किमी0), राजाजी राष्ट्रीय उद्यान (क्षे0फ0 820.42 वर्ग किमी0), गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान (क्षे0फ0 2390.02 वर्ग किमी0) गोविन्द राष्ट्रीय उद्यान (क्षे0फ0 485.89 वर्ग किमी0), केदारनाथ वन्य जीव विहार, आस्कोट वन्य जीव विहार (क्षे0फ0 599.93 वर्ग किमी0), सोना नदी वन्य जीव विहार (क्षे0फ0 301.18 वर्ग किमी0), विनसर वन्य जीव विहार (क्षे0फ0 47.07 वर्ग किमी0), मसूरी वन्य जीव विहार (क्षे0फ0 10.82 वर्ग किमी0), झिलमिल संरक्षण आरक्षित क्षेत्र (क्षे0फ0 34.84 वर्ग किमी0), आसन संरक्षण आरक्षित क्षेत्र (क्षे0फ0 4.44 वर्ग किमी0), राष्ट्रीय महत्व के धरोहर हैं। इनमें से कार्बेट दुनियाँ का सबसे सघन बाघ क्षेत्र है।

दूसरा देवभूमि के नाम से विख्यात इस धरा का कोई भी स्थान-क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ कोई न कोई ऐसा प्रतीक, भोगौलिक बनावट, मंदिर अथवा चिन्ह नहीं है, जिसका धार्मिक, आध्यात्मिक महत्व न हो। इनका सन्दर्भ किसी न किसी रूप से प्राचीन भारतीय धर्म-साहित्य वेद-पुराणों में उलिखित न हो। आधुनिक धर्म-आध्यात्म के रूप में बेहद महत्वपूर्ण इन मठ-मंदिरों को आम तीर्थ यात्रियों व प्रकृति-प्रेमियों के लिए सहज बनाया जाय। इसके लिए बुनियादी सुविधाओं के साथ उस स्थान विशेष के महात्म्य को सर्वसुलभ कर दिया जाय।

राज्य की अपार जल शक्ति का उपयोग कभी भी राज्य के वाशिंदों के हित में नहीं हुआ है। कहावत है 'पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी, कभी उसके काम नहीं आई'। आज गंगा, यमुना, अलकनंदा, मन्दाकिनी, नन्दाकिनी, सरस्वती, पिण्डर, यमुना, टौंस, धौली, नयार, जैसी प्रमुख नदियों का उपयोग राज्य हित में कम व्यापारिक लाभ के लिए अधिक किया जा रहा है।

एक आँकलन के अनुसार इन नदियों से करीब 40,000 मेगावाट जलविद्युत उत्पादन संभव है। लेकिन कार्य संरक्षाणात्मक तरीके से हो तो बात समझ में आती है। आमतौर पर इनके निर्माण से जो 'साइड इफेक्ट' देखने को मिल रहे हैं, वे अत्यन्त भयावह हैं। भविष्य में इन हरी-भरी नदियों के अस्तित्व पर ही संकट आ सकता हैं। इन नदियों पर बड़े-बड़े बाँध, हाइड्रो प्रोजेक्ट बनाकर बिजली पैदा कर दूसरे राज्यों व धन्ना सेठों को बेच कर बड़ा मुनाफा बनाया जा रहा है। लेकिन स्थानीय जनता को लाभ तो दूर की बात है, इतने बड़े बाँधों के निर्माण से होने वाले पर्यावरणीय खतरों से यहाँ हर साल बड़ी मात्र में जनधन की हानि सामने आ रही है। इन जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में उपयोग किये जाने वाले डायनामाईड जैसे विस्फोटक से संवेदनशील हिमालय की पारिस्थितिकी लगातार कमजोर हो रही है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर इसका प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। स्वाभाविक तौर से प्राकृतिक आपदा का प्रकोप व जनधन की हानि बढ़ रही है, वहीं गंगा-यमुना के मायके के लोग अब पीने के पानी के लिए तरस रहे हैं। पूरे राज्य की 39,309 बस्ती/कस्बों में से केवल 21,735 रिहायशी स्थलों को ही मानकों के अनुसार पेयजल मिल रहा है। प्रदेश के 45 बड़े जल स्रोत जलाभाव के शिकार हो गये हैं, इनमें 35 से 50 फीसदी जल कम हो गया है। पारा चढ़ने के साथ यह स्थिति और भी भयावह हो सकती है। गोमुख ग्लेशियर प्रतिवर्ष तीन मीटर पीछे की तरफ जा रहा है। हिमालय पर बर्फ तेजी से पिघलने का सिलसिला 1997 से तेजी से बढ़ने लग गया है। आज गंगा दुनियाँ की सर्वोत्तम दस प्रदुषित नदियों में सूमार होने लगी है। सन् 1986 से गंगा को शुद्व करने नाम पर 'गंगा एक्सन प्लान' जैसी कई सरकारी योजनाएँ आ चुकी हैं और इस बहाने हजारों करोड़ रुपये डकार दिये गये पर गंगा की दशा जस की तस है।

राज्य की बड़ी समस्याओं में से एक प्रकृति प्रदत्त वन सम्पदा का संरक्षण है। जिस पर राज्यवासियों को नाज है उसके अस्तित्व पर लगातार संकट के बादल छाये हुऐ हैं। यहाँ की सरकार केन्द्र से बदले में ग्रीन बोनस की बात कर रही है, पर हकीकत यह है कि यह वन्य सम्पदा हर साल मानवीय गतिविधियों से नष्ट की जा रही है। जिस प्रकृति के संरक्षण के लिए हमारे पूर्वजों ने जीवन की परवाह किये बिना उसका संरक्षण किया, वह आज निजी स्वार्थो भेंट चढ़ी जा रही है। विश्व प्रसिद्ध 'चिपको आन्दोलन' श्रीमती गौरा देवी जैसी मातृशक्ति की बलिदान गाथा है, जिसने दुनियाँ को वृक्षों के महत्व को समझाया, उसी धरती पर वनों को नुकसान पहुँचाने का खेल जिस बेशर्मी से हो रहा है, उसे रोका जाना चाहिए। जानकारों का कहना है की राज्य बनने के बाद हर साल 2408 हैक्टेयर वन क्षेत्र आग की चपेट में आ रहा है। एक अनुमान के अनुसार 2001 से लेकर अब तक 35,000 हैक्टैयर वन क्षेत्र आग की साजिश का शिकार हो चुका है। इन 15 वर्षो में वनाग्नि की कुल 1826 घटनाऐं हुई हैं, जिससे वन विभाग के शेड्यूल के अनुसार लगभग 50 अरब रूपये की क्षति होने का अनुमान लगाया है। सरकारी आँकडों के अनुसार इस वर्ष उत्तराखण्ड में वनों की आग से नौ लोगों की मौत हो चुकी है एवं 16 व्यक्ति झुलस गये हैं, 48 व्यक्तियों के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की गई है।

मध्य हिमालय में बसे इस पहाड़ी राज्य की सबसे बड़ी ताकत उसकी नैसर्गिक सुन्दरता है, जिसका संरक्षण-संवर्द्धन राज्य के साथ-साथ देश-दुनियाँ के हित में है। लेकिन राज्य बनने बाद उसके लिए कोई ठोस कार्यवाही धरातल पर नहीं दिखती है।

राजनीतिक त्रासदी राज्य की सबसे बड़ी कमजोर कड़ी के रूप में सामने आई है। राज्य भले छोटा हो पर राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ उतनी ही बड़ी हैं। इस छोटे से पहाड़ी राज्य में विगत दो दशकों में आठ मुख्यमंत्रियों व दर्जनों मंत्रीगण व सैकड़ों दायित्वधारियों की फौज खड़ी हुई है, जिसनें स्वाभाविक रूप से राज्य के विकास को पीछे की ओर धकेला है। 09 नवम्बर 2000 को बुजुर्ग हो चुके नित्यानंद स्वामी को राज्य का पहला मुख्यमंत्री बनाया गया तो संदेह हो गया था की वे बहुत दिनों तक नहीं चलने वाले हैं। नतीजन 30 अक्टूबर 2001 को ही श्री भगत सिंह कोश्यारी की लाटरी लग गई। इस अंतरिम सरकार के बाद पहली निर्वाचित सरकार का नेतृत्व 2 मार्च 2002 से 1 मार्च 2007 तक काँग्रेस के वरिष्ठ नेता पं0 नारायण दत्त तिवारी ने किया।

8 मार्च 2007 को दूसरी निर्वाचित सरकार के मुखिया की जिम्मेदारी सेना के रिटायर्ड अधिकारी भुवनचंद खण्डूरी को दी गई। अपने फौजी अंदाज के लिए जाने-जाने वाले जन0 खण्डूरी से 24 जून 2009 को डॉ0 रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने ताज छीन लिया। किन्तु 11 सितम्बर 2011 को पुनः उन्हें सत्ता सौंप दी गई। काँग्रेस सरकार आने के बाद मुखिया की रेस में श्री विजय बहुगुणा भले जीत गये हो परन्तु 14 मार्च, 2012 से 31 जनवरी, 2014 तक ही वे इस पद पर बने रहे। जब श्री हरीश रावत मुख्यमंत्री कार्यालय पहुँचे तो, उनके सहयोगियों ने ही बगावत का बिगुल बजाकर कर इस शान्त प्रदेश की राजनीतिक फिजाओं में जहर घोलने का काम किया। 2017 के (विधानसभा) चुनावी समर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लहर नें भारतीय जनता पार्टी को प्रचण्ड बहूमत देकर श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत के नेतृत्व में सरकार का गठन किया, परन्तु राज्य के 'हाथ' कुछ नहीं आया।

जिस प्रगतिशील राज्य की कामना यहाँ के नागरिकों ने की थी, अभी तक (दो दशकों के इतिहास में) नीति-निर्माताओं ने इस पहाड़ राज्य के अनुरूप कोई रोड-मैप तैयार नहीं किया, या यों कहे की राजनीतिक इच्छा शक्ति इतनी दुर्बल है की जनप्रतिनिधियों के पास इन बातों के लिए कोई समय ही नहीं है।

पृथक पहाड़ी राज्य 'उत्तराखण्ड' का औचित्य तभी सार्थक होगा, जब राज्य के समस्त संसाधनों का उपयोग संरक्षणात्मक तरीकों से हो, (जिस तरह हमारे पूर्वजों ने उन्हें अपने जीवन का जीवन्त हिस्सा मानकर प्रकृति से आत्मीय सामंजस्य बनाये रखा) ताकि भविष्य में भी उसी तरह से फलदायी हो जिस तरह आज हैं। राज्य की सामाजिक-साँस्कृतिक व भौगोलिक बनावट विशिष्ट है, जिसके भीतर आशा, उल्लास, उम्मीद, समृद्धि, व प्रगति समिश्रण कूट-कूट कर भरा हुआ है, उसका संरक्षण-संवर्द्धन भी महत्वपूर्ण है।

*****

शिक्षा

- कोमल
छात्रा, बी0पी0एड0

बहुत जरुरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण धोती है शिक्षा।
चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा,
शिक्षा पाकर ही बनते है,
नेता, अफसर, शिक्षक,
वैज्ञानिक, यात्री, व्यापारी
या साधारण रक्षक।

कर्तव्यों का बोध कराती,
अधिकारों का ज्ञान,
शिक्षा से ही मिल सकता है
सर्वोपरि सम्मान।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान,
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान्।

*****

'शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है' **- फ्रोबेल**

मिट्टी से बाजार तक – जमीन की आबरू का सवाल

– सूरज सिंह कण्डारी
बी0एड0, द्वितीय सेमेस्टर

भारत में कृषि केवल जीविका का साधन नहीं अपितु ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर की भाँति है। उत्सवों एवं पर्वो की प्रतीक है। यह एक समग्र विचारधारा है। हमारी संस्कृति, जीवन, जल, क्लाइमेट या मौसम, पेड़-पौधे, नदी, तालाब, अध्यात्म, रोजमर्रा के जीने के तरीके, तीज-त्यौहार, समाज का गौरव, संबल, एकता सब इससे जुड़ा है। ऐसी सोच में कोई भी विखराव प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से बड़े बदलाव ला सकता है। भारत के किसान जिस गति से खेती से विमुख हो रहे हैं वह एक संस्कृति में आमूलचूल उलट-पलट की शंख ध्वनि है और इस आघात की जड़ है हरित क्रान्ति। जी हाँ .....

शुरूआत करते हैं 1960 के दशक से। उस समय देश को जरूरत थी अनाज का उत्पादन बढ़ाने की। हरित क्रान्ति से हमने हाइब्रिड प्रजातियों एवं रसायनिक कीटनाशकों तथा उर्वरकों के प्रयोग से सफलता पायी व उत्पादन बढ़ा साढ़े तीन गुना। 1960 के दशक में भारत में खाद्यान का उत्पादन 82.33 लाख मीट्रिक टन था, जो कि आज बढ़कर 285 लाख मीट्रिक टन हो गया है। हमने लगभग साढ़े तीन गुना अधिक उपज प्राप्त की। यह उस समय की जरूरत के हिसाब से कुछ हद तक सफल रहा। अनाज उत्पादन में हम कामयाब रहे।

कृषि का यह मॉडल उस समय भले ही सफल दिखे परन्तु आज 60 साल बाद देखें तो हरित क्रांति के नाम पर बेतहाशा फर्टिलाइजर, रसायनों, कीटनाशकों के इस्तेमाल ने खेती को जहर बना दिया है। 1960 के दशक में फर्टिलाइजर का उपयोग 206 लाख टन अर्थत 1.99 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर था जो आज 203 लाख टन अर्थात् 128 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर हो गया है। अर्थात् खाद्यान में फर्टिलाइजर उपयोग 60 गुना बढ़ा व उपज में वृद्धि केवल साढ़े तीन गुना।

वहीं पौष्टिकता की बात करें तो प्रति किग्रा0 पौष्टिकता 1960 के दशक के मुकाबले 12.5 प्रतिशत रह गई है। इस कारण हमारा इम्यून सिस्टम कमजोर हो रहा है। कैंसर जैसी बीमारी में लगभग 25 सौ गुना वृद्धि हुई। बीजों, कीटनाशकों, उर्वरकों के लिये मार्केट/बाजार पर निर्भरता बढ़ने से खेती मंहगी हुई, जिससे तकरीबन 20 करोड़ किसान जमीन से बेदखल हुए। किसानों की आत्महत्या दर प्रति वर्ष 20 गुना बढ़कर 16 हजार प्रति वर्ष हो गई।

इस तरह के कृषि मॉडल को समय रहते नियंत्रित कर देना चाहिए था बल्कि पूर्व में ही इस पर रोकथाम लगा देनी चाहिए थी व परम्परागत जैविक खेती को बढ़ावा देना चाहिए था। आज हम खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं। हमें गुणवत्ता युक्त पौष्टिक उपज व अनाज की आवश्यक्ता है।

उत्तराखण्ड में हरित क्रांति के प्रभाव की बात की जाए तो बताया जाता है कि 70 के दशक के आखिर में उत्तराखण्ड के गाँवों में सरकार द्वारा बेतहाशा सोयाबीन बुआई गई। लगभग सभी गाँव में पूरा का पूरा रकबा सोयाबीन बोया जा रहा था। सोयाबीन का बीज व बाजार भी सरकार द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा था। जिसने उत्तराखण्ड की परम्परागत कृषि मंडुवा, झंगोरा, राजमा, भट्ट गहत, तिलहन का अस्तित्व संकट में डाल दिया। सोयाबीन में बड़ी मात्रा में रासायनिक खादों का उपयोग किया गया, जिससे मिट्टी की उत्पादकता में कमी आयी व मिट्टी ज्यादा सख्त भी हुयी।

वैसे तो उत्तराखण्ड की भूमि संघर्षो की भूमि है और यहाँ लोग कर्मठ भी होते हैं और यहाँ की परिस्तिथियाँ, परम्पराएँ, रीति-रिवाज जैविक खेती के लिये उपर्युक्त है। बड़े किसानों के लिए जैविक खेती करना आसान नही होता। वे पूरी तरह मशीनों पर निर्भर होते हैं। लेकिन पर्वतीय क्षेत्रों के छोटे किसान आसानी से जैविक खेती अपना सकते हैं। जैविक खेती के लिए स्वच्छ शुद्ध पानी सिंचाई हेतु गदेरों में उपलब्ध है। आखिर शहरों की नदियों के प्रदूषित पानी से तैयार सब्जी या अन्य कृषि उत्पादों को जैविक कैसे कहा जा सकता है। पशु आधारित खेती के जरिए ही जैविक खेती सम्भव है। पशुपालन के लिए जरूरी चारा-पत्ती

के लिए भी उत्तराखण्ड में पर्याप्त घने जंगल हैं। हमें किसानों को इसके लिए प्रेरित करना होगा। उदाहरण या प्रेरणा हेतु हम पहाड़ी आलू की साख या मांग को देख सकते हैं। कहा जाता है कि उत्तराखण्ड के पहाड़ों में 1843 के आसपास पहली बार आलू लाया गया था। जिसका श्रेय एक अंग्रेज अफसर मेजर यंग को दिया जाता है। जिसने आलू के लिए अच्छी आबोहवा देखकर पहली बार मसूरी की पहाड़ियों में इसे बोया था और आज पहाड़ी आलू की अपनी अलग साख, माँग व लोकप्रियता है। कहा जाता है कि कभी गरूड़ घाटी के आलू का बड़ा नाम था और मंडी में इसे पहाड़ी आलू का मानक माना जाता था। यानि इसकी एक ब्राडिंग मार्केट में हो चुकी है। इसी तरह हम अन्य फसल भी उगा सकते हैं। पहाड़ी लाल चावल जो अपना रूतबा खो चुका है फिर से इसे वही साख व लोकप्रियता दिला सकते हैं।

यह हम कर सकते हैं अपनी परम्परागत जैविक कृषि में नवाचार लाकर। जिससे उत्पादन पहले के मुकाबले बिना रासायनिक कीटनाशकों व फर्टिलाइजर के इस्तेमाल के बाद भी बढ़ जाए।

उत्तराखण्ड के किसान सिर्फ व्यापारी नही हैं बल्कि धरती के बेटे हैं। उन्हें उत्पादन के साथ-साथ धरती कि उर्वरा शक्ति को बचाये रखने का भी संकल्प लेना होगा। इस दिशा में हमारा परम्परागत ज्ञान भी पर्याप्त है। कोठार को ही देख लीजिए। बीज भण्डारण के लिए बने हमारे पुराने कोठार आधे जमीन में और आधे हवा में रहकर गोबर मिट्‌टी से लिये उपयोगी 14 डिग्री तापमान को बनाये रखता था।

हमारे पास रमाई, सेरा, गिवाड़, सोमेश्वर, मलेथा जेसे समृद्ध सेरे थे व दोगी, कांडा, कमस्यार जैसे दर्जनों भर दलहन क्षेत्र भी थे। कृषि विज्ञान परम्पराओं से अर्जित ज्ञान था। पूर्व काल में किसान बीज, खाद, दवा, यन्त्र के मामले में आत्मनिर्भर थे। खाद के लिए गोबर, केंचुआ खाद, हरी खाद, नाडेप कम्पोस्ट, सींग की खाद इत्यादि का उपयोग किया जाता था। वहीं कीट व बीमारियों से बचने के लिए दवाओं में नीम, करन्ज, धतूरा, मदार, लहसुन, हींग, गोमूत्र, मट्‌ठा इत्यादि का प्रयोग होता था। यन्त्रों में देसी बैल व हल का प्रयोग होता था।

कृषि में प्रयुक्त वाली कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसे किसान स्वयं न बना सके। जरूरत है सिर्फ जानकारी व दृढ़ निश्चय की। लेकिन आज के दौर मे किसान बीज, खाद, दवा, यंत्र एवं लेबर हेतु मार्केट पर निर्भर हो गया है। साथ ही पहाड़ी जिलों से किसानों का पलायल होता जा रहा है। उत्तराखण्ड के पहाड़ी इलाकों में मौजूदा खेती की जमीन में केवल 20 प्रतिशत पर ही खेती शेष रह गयी है। उसके अलावा 80 प्रतिशत खेती की जमीन या तो बंजर हो चुकी है या दूसरे कार्यो के लिए प्रयोग की जा रही है।

पहाड़ी लोग खेती से पीछे हट रहे हैं। पहाड़ों की ऊँची उपजाऊ जमीन पर पहाड़ के किसान अपनी फसलें केवल वर्षा के भरोसे करते आ रहे हैं। समय पर वर्षा हो गयी तो उपज से भण्डार भर गया नहीं तो फसल चौपट। उपर से जंगली जानवरों का आतंक। पहाड़ी क्षेत्रों में मंडियाँ भी नहीं है। किसान को अपने उत्पादों का बाजार तक ढुलाई का खर्चा उसके मुनाफे से अधिक पड़ जाता है।

ऐसे में सरकारों को आगे आकर जैविक खेती को लेकर स्पष्ट नीतियाँ लानी चाहिए। परन्तु सरकार एक तरफ जैविक खेती के लिए देशभर में 250-300 करोड़ रूपये की स्कीम चला रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ फर्टिलाइजर पर 80000 करोड़ रूपये की सब्सिडी दे रही है। ये अस्पष्ट नीतियाँ बहुत बड़े मुद्दे हैं। क्या सरकार कृषि नीतियों में रसायनों और जीएम फसलों को बढ़ावा दे रही है या प्राकृतिक खेती को प्रोमोट कर रही है। सरकार जैविक खेती को लेकर विरोधाभास में नजर आती है।

एक तरफ सरकारें प्राकृतिक जैविक खेती को लेकर प्रचार कर रही है तो दूसरी तरफ यूरिया पर सब्सिडी की बड़ी रकम जारी करती है। सरकार की तरफ से आधा-अधूरा खेल चल रहा है। इसको लेकर जो स्पष्ट प्रयास होना चाहिए वो अभी तक नजर नही आ रहा है।

इसके लिए अच्छी मार्केटिंग की जरूरत है। एक माहौल बनाने की जरूरत है। क्यों कि कंज्यूमर भी जैविक उत्पादों की माँग कर रहे हैं। आर्गेनिक खेती के सामने सबसे बड़ी चुनौती उत्पादों की ब्राडिंग व मार्केटिंग की है।

पिछले कई वर्षों से आर्गेनिक खेती का राग अलाप रहा उत्तराखण्ड अब तक अपनी आर्गेनिक ब्रांड के तौर पर पहचान नहीं बना पाया है। हाँलाकि पर्वतीय क्षेत्रों में इसकी भारी सम्भावनाएँ हैं।

उत्तराखण्ड सरकार ने इसको लेकर एक पहल की है। परम्परागत कृषि विकास योजना के तहत मौजूदा समय में 2 लाख एकड़ जमीन में जैविक खेती की जा रही है। इसके तहत 10 ब्लॉकों को जैविक ब्लॉक घेषित किया जाएगा। पहले चरण में इन ब्लॉकों में किसी भी तरह के केमिकल, पेस्टीसाइड, इन्सेप्टिसाइट बेचने पर पूर्णत: प्रतिबन्ध लगाया जाएगाा।

जैविक ब्लॉक में रासायनिक या सिंथेटिक खाद, कीटनाशक, खरपतवार नाशक या पशुओं को दिए जाने वाले चारे में रसायन के इस्तेमाल पर रोक लगेगी। उल्लंघन करने पर 1 साल की जेल व 1 लाख रूपये तक जुर्माने लगाने का प्रावधान किया गया है। अगर 10 चिन्हित ब्लॉकों में यह प्रयोग सफल रहा तो इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जायेगा और इसकी हमें जरूरत भी है। रासायनिक दुष्परिणामों के कारण आज हमारी भोजन की थाली विषैली हो गयी है। हरित क्रांति की तरह देश में एक व्यापक जैविक क्रांति का माहौल बनाने की जरूरत है। रसायनों के प्रयोग से हम अनाज का ज्यादा उत्पादन करने में तो कामयाब रहे परन्तु जीवन चक्र और प्रकृति का संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है।

कृषि मंहगी हो रही है। किसान जमीन छोड़ रहा है। पौष्टिकता घट रही है और हमारी थाली और विषाक्त होती जा रही है। अगर हमने समय रहते स्थिति को ना संभाला तो स्थिति ऐसी होगी कि हम ऊँचे दाम देकर अपने लिए खरीद रहे होंगे स्लो प्वाइजन (जहर) भोजन, फल, सब्जी के रूप में ।

यह मुद्दा बड़ा संवेदनशील है। जमीन की आबरू व दो वक्त की रोटी का।

*****

बिन पंखों की चिड़िया मैं

– कु0 देवी
बी0ए0, प्रथम– तृतीय सेमेस्टर

बिन पंखों की चिड़िया मैं
हौसले बुलंद हैं
मेरी खुली आखों में
सपने अनन्त है।

देख सूरज को मन मेरा बोला
मैं भी जगमगाऊँ जहान में
देखे सारी दुनियाँ मुझे
कि उड़ती फिरूँ आसमान में।

सच के पथ पर चलकर मैं
इन सपनों की राह बनाऊँ
हर मुश्किल से लड़कर मैं
मन्जिलों को छूती जाऊँ।

मन के डर को मार गिराऊँ
ऊँचे पर्वत पार कर जाऊँ
बिन पंखों की चिड़ियाँ मैं
आसमान में उड़ती जाऊँ।

सोच क्या है ?

- **वर्षा नेगी**

बी0एड0, तृतीय समेस्टर

एक बार एक सुन्दर दिखने वाली औरत एक फ्लाइट में जा रही थी। जब वह अपनी सीट पर पहुँची तो अपने बगल वाले पैसेंजर को देखकर एअर होस्टेस को बुलाकर प्रार्थन की कि वह उसकी सीट बदल दे। वह वहाँ पर नहीं बैठना चाहती थी। तो एअर होस्टेस ने पूछा कि आपको अपनी सीट में क्या दिक्कत है? तो औरत बोली कि मेरे बाजू जो यात्री/ पैंसेजर है उनको दोंनो हाथ नहीं है। एअर होस्टेस फिर उस महिला से पूछती है कि सीट में क्या दिक्कत है? वह कहती है ऐसे पैंसेजर जिनके हाथ नहीं है, मैं इन्हें देख नहीं सकती हूँ। यह बहुत बुरे दिख रहे है, मैं इनके बगल में नहीं बैठ सकती हूँ। एअर होस्टेस चिन्तित हो गयी। और वह उस औरत को कह भी नहीं पा रही थी कि उनकी सोच सही नहीं है। आस-पास के लोग भी उस महिला को देखकर परेशान थे, कि कोई ऐसा कैसे सोच सकता है? फिर वह एअर होस्टेस महिला से कहती है कि फ्लाइट फुल है और सीट पर्याप्त नहीं है आपके लिए। फिर वह महिला जिद्द करती है कि कुछ भी हो जाये मैं यहाँ नहीं बैठूँगी। आप मेरी सीट बदल दीजिए फिर वह एअर होस्टेस कहती है ठहरिए, मैं अपने सीनीयर से बात करती हूँ। जब वह बात करके वापस आती है तो कहती है कि एक ही सीट है जो कि बिजनेस क्लास की हैं। तो वह लेडी खुश होकर कहती है कि यह अच्छी बात है कि आप मुझे बिजनेस क्लास में अपडेट कर रहे हैं। वह एअर होस्टेस महिला को जवाब ना देकर उनसे (जिसके हाथ नहीं है।) कहती है कि सर क्या आप साथ आ सकते है और वह उन्हें ले जाकर बिजनेस क्लास में अपडेट कर देती है और उस महिला से कहती है कि अब तो कोई दिक्कत नहीं है। अब आप अपनी सीट पर बैठ जाइये। वहाँ बैठे सभी यात्री तालियाँ बजाते रहे गये क्योंकि वे उस महिला की सोच को देख रहे थे।

वह पैसेंजर जिसके दोनों हाथ नहीं थे, वह वहाँ से जाने से पहले रुका और बोला मैं सब बातें सुन रहा था। मैं एक सिपाही था। इस देश के लिए मैंने अपनी जान दाँव पर लगा दी और अपने ये दोनों हाथ बम ब्लास्ट में गवाँ दिए, अपनी भारत माता की रक्षा के लिए। जब मैं यह सब बातें सुन रहा था, तो मेरे मन में एक सवाल था कि मैंने कैसे लोगों के लिए अपनी जान दाँव पर लगा दी और अपने दोनों हाथ गवाँ दिए। लेकिन अन्त में वह एअर होस्टेस की तरफ देखते हुए कहते है कि जब आपने मुझे Upgrade करके आगे जाने को कहा और हर एक पैसेजंर ने मेरे लिए तालियाँ बजायी तो अब मुझे एहसास हुआ कि मैं जान भी दे देता तो कोई परवाह नहीं थी। वहाँ से जाते समय उन सब लोगों की आँख में आँसू थे और वह महिला जो स्वंय को सुन्दर मान रही भी। शर्मिन्दा होकर चुपचाप अपनी सीट पर बैठती है।

सीख :- इस कहानी के माध्यम से मैं यह कहना चाहती हूँ कि सदैव अपनी सोच को एक अच्छी दिशा प्रदान करों। अच्छी सोच से ही इन्सान सुन्दर माना जाता है। दुनियाँ में कई प्रकार के लोग होते हैं, जिनकी अपनी-अपनी सोच होती है। मेरा मानना है कि किसी भी व्यक्ति की सबसे पहले सोच अच्छी होनी चाहिए क्योंकि नजर का इलाज हम कोशिश करके सुधार सकते हैं नजरिए का नहीं। सोच का फर्क काफी गहरा पड़ता है। आदमी भगवान से लाखों-करोड़ों की चाहत रखता है लेकिन जब वहीं आदमी मन्दिर जाता है तो जेब में सिक्के ढूँडता है। अच्छी सोच इन्सान को हमेशा अच्छा रास्ता दिखाती है। इस कहानी से आपको समझ आ ही गया होगा कि सकारात्मक सोच में कितनी शक्ति होती है और एक अच्छी सोच आपको एक बेहतर इंसान बनाती है। इसीलिए मेरा मानना है कि वक्त या हालात चाहे कितने ही बुरे क्यों ना हो सोच सदैव ही सकारात्मक रखनी चाहिए। सोच का अन्तर होने से ही कोई विद्यार्थी अच्छे नंबर ले आता है तो कोई फेल हो जाता है।

1. ''अगर आप अपने जीवन में कामयाब होना चाहते हैं तो सदैव अपनी सोच को सकारात्मक रखें।''
2. "सोच ही के द्वारा इन्सान का व्यक्तित्व बनता या बिगड़ता है।"

*****

पहाड़ की बेटी

- वन्दना भट्ट
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

यह काहनी है पहाड़ की एक बेटी आशा की, जो अभी मात्र 15-16 साल की है और कक्षा 8वीं-9वीं की पढ़ाई कर रही है। पढ़ने में होशियार, सस्कारी, मेहनती अपनी जिम्मेदारियाँ निभाने में निपुण है। छोटी सी उम्र में उसने अपने घर की जिम्मेदारियाँ सीख ली थी जब उसकी उम्र खेलने-कूदने की थी। उसने अपना परिवार सम्भालना सीख लिया है। वह गरीब परिवार की है, उसकी रोज की दिनचर्या इस तरह शुरु होती- सुबह जल्दी उठना, हाथ मुँह धोना, चाय-नाश्ता बनाना, अपने भाई बहिनों को तैयार करना। यदि इस बीच उसे समय मिल जाता तो वह अपनी गौशाला का काम कर देती। उसके बाद तैयार होकर स्कूल जाती। दिन का भोजन वह स्कूल में ही करती थी। फिर स्कूल से वापस लौटने के वाद उसकी दिनचर्या शुरु हो जाती। जब कभी आशा को किताबें या कॉफी खरीदने के लिए पैसो की जरूरत पड़े तो वह शाम को या रविवार को लोगो के घरों में या खेतो में काम करती। उससे जो भी पैसे मिलते उससे अपनी मूलभूत आवश्यकता पूरी करती थी। यदि कभी समय मिले तो वह हमारे घर भी आती थी। कभी-कभी वह मेरे साथ भी समय व्यतीत करती थी। आशा को डॉक्टर बनने का सपना था। वह पढ़ाई में तो तेज थी ही उसे नाचने-गाने का का भी बहुत शौक था। सच कहूँ तो मूझे भी उससे मिलकर बहुत खुशी होती थी। जितना मेरे से हो पाता में उसकी मदद करती। जैसे-तैसे वह अपनी पढ़ाई कर रही थी और उसे विश्वास था कि वह एक दिन अवश्य डॉक्टर बनेगी।

कुछ समय पश्चात उसके लिए शादी का प्रस्ताव आया। लड़का यही 28-29 साल का ट्रक ड्राइवर था। लड़के वालों का उत्तर प्रदेश के कुरुक्षेत्र में अपना मकान भी था। लड़का कमाता भी अच्छा था। आशा की माँ को यह रिश्ता पंसद आया। आशा के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। आशा की 3 छोटी बहिनें और 1 भाई था। आशा की माँ ने सोचा कि अगर आशा कि शादी होगी तो बाकी बच्चों का लालन पालन आसानी से हो जाएगा

आशा समझ नही पा रही थी कि ये लोग बोल क्या रहे है? जहाँ उसकी खेलने-कूदने की उम्र थी, वही उसे ससुराल भेजने की बात कर रहे थे। आशा ने शादी के लिए बहुत मना किया पर किसी ने नहीं सुनी। लोग आशा से कहते की बड़ा घर है, बड़े लोग है, उनकी कार है, मना मत कर। काफी समय बीत गये आशा न हमारे घर आयी ना मुझसे मिलने आयी। पहले तो वह मुझसे मिलने हर 15-20 दिन में आ जाती थी। पर अब वह मुझसे मिलने नहीं आयी तो कारण पता किया तब सुनने में आया कि उसकी शादी है। मैं चौक गयी। इतनी छोटी उम्र में शादी! ये सब सुनने में अजीब लगा दुख भी हुआ।

मैंने आशा से मिलने का निश्चय किया। मैं उससे मिलने जा ही रही थी कि सयोग से वह मुझे रास्ते में मिल गयी। आशा घास लेने के लिए जा रही थी। मैंने पूछा आशा कैसी हो तुम? और तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आयी? उसने मुझे देखा, उसकी आँख नम थी, उसके चेहरे की चमक कही खो गयी थी। बातचीत करने से पता चला कि सच में 1-2 हफ्ते में उसकी शादी है। मुझे एक क्षण के लिए विश्वास ही नहीं हुआ।

मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की पर बहुत देर हो चुकी थी। वह बस इतना कह कर चली गयी कि दीदी अब मेरा डॉक्टर बनने का सपना, सपना ही रहेगा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और वहाँ से चली गयी।

मुझे पता था कि आशा की माँ से बात करने का फायदा नहीं है। फिर भी मैंने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की, उनका कहना था क्या करना पढ़-लिख कर जब शादी के बाद घर ही सम्भालना है। झाड़ू-चौका ही करना है। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि ऐसा नहीं है। हमारे देश की बेटियाँ भी ऊँचे-ऊँचे पदों पर हैं। लड़कों से कदम से कदम मिलाकर चल सकती हैं पर वह नहीं मानी। उनका एक सवाल जिसका मैं जबाब नहीं दे पायी, कि क्या तुम आशा की पूरी जिम्मेदारी उठाओगे? उस समय मैं कक्षा 12 में पढ़ रही थी। मैं भी सामान्य परिवार से हूँ इसलिए मैं कुछ ना बोल पायी। शायद अभी की बात होती तो मैं उसकी पढ़ाई की जिम्मेदारी ले लेती।

दो हफ्ते बाद आशा की बारात आयी और आशा की शादी हो गयी। आशा कि माँ इस बात से खुश थी कि वर पक्ष वालों ने दहेज भी नहीं लिया और आशा की माँ को आशा की शादी का खर्चा भी दिया। पर उन्हें क्या पता था कि वह बेटी की शादी करके नहीं खरीद कर ले जा रहे हैं। आशा की विदाई हुई और पहाड़ की एक मासूम बेटी शहर पहुँची। शादी के पश्चात् आशा सिर्फ एक बार ही मायके आयी बहुत साल बीत गये। आशा मायके नहीं आयी। आशा की माँ ने बहुत आग्रह किया पर आशा के ससुराल वाले आशा को मायके नहीं भेजते। उन्हें डर है कि आशा वापस आने के लिए मना ना कर दे। इसलिए वह उसे मायके नहीं भेजते। ससुराल जाने के बाद उसकी पढ़ाई छूट गयी। उसकी जिदंगी अब अपने घर की चार दीवारी तक ही सीमित हो गयी। आशा के पति भी आशा के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। वह शराब पीकर मार-पीट करते। उसकी सास भी उसे रोज ताने देती कि तू मायके से खाली हाथ आयी। रोज लड़ाई करती।

अब आशा कि माँ को एहसास हुआ कि मेरी बेटी की जिन्दगी बरबाद हो गयी। पर कहते हैं ना अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गयी खेत।

" पहाड़ की एक बेटी शहर में कैद हो गयी।"

शायद वह थोड़ा और पढ़ लेती तो आज वह इस जुर्म के लिए आवाज उठाती और जो पीड़ा वह सह रही वह पीड़ा नहीं सहनी पड़ती।

*****

तूँ उड़ सकता है

- प्रदीप चन्द्र गौड़
छात्र, राठ महाविद्यालय पैठाणी

बुलंद हौसला तो कर ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।
इन नन्है से कोमल पंखों को
फड़फड़ाकर के तो देख ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।
इन शाखाओं में छिपे घोंसले
से बाहर निकल कर तो देख ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।
जिसने भी ठानी है मन में
उड़ सका वो डाली-डाली
तूँ ये स्वप्न तो देख ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।
इन सरसराती टहनियों के पत्तों के बीच
मीठे फलों को तो देख ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।
उन तूफानों से न डर, जिससे डाली गिर पड़ी है
ऐ पंछी तू उड़ सकता है।
जिसने फहराया भय पर विजय पताका
मंजिलों के कठिन फासले पल में तय कर गये वो
बुलंद हौसलों को कर ऐ पंछी
तूँ उड़ सकता है।

'सच्ची शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं होना चाहिए, अपितु इसको मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण अथवा जीवन उत्कर्ष करना चाहिए।'
*- **श्री अरविन्द घोष***

समाज की वर्तमान परिस्थितियाँ

- **श्वेता बिष्ट**
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

वर्तमान भारतवर्ष में आज कुछ विशेष परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। आज संसार में अपने देश को आधुनिक और आगे बढ़ते हुए राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह सत्य है कि भारत दुनियाँ में वैज्ञानिक, आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में उन्नति करते हुए एक राष्ट्र के रूप में प्रगति कर रहा है।

सामाजिक विकास के साथ-साथ यह भी दिखाई देता हैं कि आज भी रूढ़िवादी मान्यताएँ, विश्वास आदि नकारात्मक दृष्टिकोण समाज में विद्यमान हैं, जो समानता व भाईचारे में विश्वास नहीं करता है । बहुत से सामाजिक कार्यकर्ता (एन0जी0ओ0) सामाजिक दशा को सुधारने की कोशिश कर रहे हैं और इसका परिणाम अच्छा नहीं मिल रहा है। यह समस्या लोगों के विश्वासों और मान्यताओं में बहुत गहराई के साथ बैठी हुई है, जो बदलाव की परिस्थितियों को स्वीकार नहीं करने दे रही है।

वर्तमान समय में कन्या-भ्रूण हत्या शर्मनाक प्रथाओं में से एक है। इसके लिए सरकार ने बहुत से कानून और नियम बनाये है। पर कोई भी इस नियम व कानून का पालन नहीं कर रहा है। इस पर प्रश्न उठ रहे है कि इन कानूनों का पालन कौन करेगा ? और वर्तमान में लोगों की सोच ऐसी बनी है कि लड़का-लड़की तुलना में लड़के की ज्यादा चाह में कन्या भ्रूण हत्या जैसी शर्मनाक कार्य को अंजाम दिया है। बहुत दु:ख की बात है कि, जिसके कारण हमारे भारत वर्ष में महिलाओं की कमी बढ़ती जा रही। समाज में महिलाओं के प्रति जागरुकता फैलानी चाहिए, जिससे कि कन्या भ्रूण हत्या एक पाप है और इसे रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ-साथ सकारात्मक परिवर्तन भी हो रहे है। हर क्षेत्र में बालक-बालिकाओं में अंतर नहीं किया जा रहा है और अब वर्तमान में लड़कियाँ बहुत ज्यादा संख्या में विद्यालय जा रही है और उनके रोजगार में भी वृद्धि हुई है, जिसके कारण वह अनेक क्षेत्रो में कार्य करने लगी हैं। इसके लिए अनेक परिवर्तन किए गए है, लेकिन स्थिति आज भी सन्तुष्टि के स्तर से बहुत दूर है।

वर्तमान में एक और दूसरी परिस्थिति सामने आ रही है। सामाज में हम-सब एक ऐसी अन्धी दौड़ में शामिल हो गए है कि अपने पूर्वजों की संस्कृति व संस्कार को पीछे छोड़ने लगे हैं, जैसे अपने बड़ों का आदर-संस्कार, छोटों से स्नेह आदि ये चीजे हमारे जीवन से बहुत दूर होती जा रही है तथा इसके साथ हम अपने संस्कारों की बलि चढ़ा रहे है। समाज में यह एक सबसे बड़ी समस्या बनने लग गई है। बच्चें अपने आदर्श माता-पिता, शिक्षक आदि के विचारों, संस्कारों का पालन नहीं कर रहे। ये समाज के लिए एक ऐसा घुन है, जो धीरे-धीरे हमारी संस्कृति को खोखला कर रहा है। हमारे पुर्वाजों ने जो हमें संस्कृति व संस्कार दिए है, हमने उनको बिखरा दिया है। इसकी शुरुआत तो हो ही गई। यहाँ पर मैं दो शब्द कहना चाहती हूँ- 'आजाद रहिए विचारो से, लेकिन बँधे रहिए अपने संस्कारो से।'

भारत में कुछ अन्य समस्याएँ भी दिखाई पड़ती है, जिनमें भुखमरी, कुपोषण आदि प्रमुख है। कुपोषण का प्रमुख कारण अत्यधिक जनसंख्या, अकाल, अमीर-गरीब के मध्य असमानता को माना जाता है। भारत वर्ष में लाखों ऐसे लोग है, जो ढंग से एक समय का भोजन नहीं कर पाते हैं और वह कुपोषण का शिकार बन जाते हैं। कम से कम एक व्यक्ति को एक दिन में 2400 कैलोरी प्राप्त करनी चाहिए। अगर हर व्यक्ति को पोषक तत्वो की सही मात्रा नहीं मिलेगी तो इससे भुखमरी व कुपोषण की शिकायत बढ़ेगी। समाज में सबसे ज्यादा अमीर-गरीब में खाई पैदा हो रखी है और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति सही मात्रा में पोषक तत्वों को ग्रहण नहीं कर पाते हैं।

भारत सरकार को भी इसकी चिंता सता रही है। भारत सरकार ने अनेक योजनायें लागू की है- जैसे मिडे-डे मील योजना और गर्भवती व स्तनपान कराने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए पोषक तत्वों व अनाजों की भरपूर मात्रा प्रदान करना, जिससे वे कुपोषण का शिकार न बनें और उनमें पोषक तत्वों की कमी न हो।

*****

अधिगमकर्ता की विशिष्टता को जानें

- डॉ0 प्रवेश कुमार मिश्रा
विभागाध्यक्ष (शिक्षा संकाय), राठ महाविद्यालय पैठाणी

आज के व्यस्ततम दिनचर्या में जब हर व्यक्ति के पास समयाभाव है उन परिस्थितियों में बच्चों का पालन-पोषण अत्यन्त प्रभावित हुआ है। एकल परिवार की संकल्पना बलवती हो रही है और बच्चों का समाज सीमित हो रहा है। उनके अन्दर आत्मसंयम का अभाव हो रहा है, वे निराशा में जी रहे हैं, उनको यन्त्र की भाँति पाला जा रहा है। सुबह उठकर अभी अच्छे से नींद खुली भी नहीं कि स्कूल बस दरवाजे पर होती है। फिर आधे-अधूरे नाश्ते के साथ बच्चे स्कूल पहुँच जाते हैं।

यहाँ भी यन्त्रवत बैठ कर दिन को पूरा किया, फिर शाम को घर पहुँचकर गृह कार्य किया। अत: सम्पूर्ण दिनचर्या यन्त्रवत रही। दिनभर उनके साथ अच्छा बुरा क्या हुआ वे उसका समाधान स्वत: खोजते हैं। आज हम जब समाचार पत्रों, न्यूज इत्यादि के माध्यम से समाचारों को सुनते हैं तो उनमे बच्चो के घर छोड़कर भागने, हिंसक कार्यो में शामिल होने तथा आत्महत्या तक की घटनायें सामने आती हैं और इन घटनाओं के नेपथ्य में जो कारण है उनमे परीक्षा परिणाम, माता-पिता का भय या यौनिक घटनायें हैं। जिसे वह कह नहीं पाता और कोई दूसरा मार्ग उसे नहीं दिखता एवं वह आत्महत्या जैसे कार्यो की तरफ बढ़ता है। इन सम्पूर्ण घटनाओं को छोटे-छोटे प्रयासों से शायद हम रोक सकते हैं। इसको लिखने के पीछे मेरा यह प्रयास है कि यह लेख ज्यादा से ज्यादा बी0एड0 और बी0पी0एड0 प्राध्यापकों के मध्य होगा। वे अपने अधिगमकर्ता को समझने का प्रयास करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 यह कहता है कि आप विद्याालय में बच्चे का स्वागत करें। उसको यह लगे कि छोटे परिवार से बड़े परिवार में आया हूँ। यहा मेरे और अधिक दोस्त होंगे।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 भय मुक्त शिक्षा की बात करता है। परन्तु आये दिन बच्चों को दण्डित करने की घटनायें सामान्य है। एक शिक्षक को प्रशिक्षण के दौरान मनोविज्ञान का शिक्षण दिया जाता है कि वह बाल मन को समझे। उसे नियमों का ज्ञान कराया जाता है कि वह कानून से डरे फिर भी शिक्षक नकारात्मक पुनर्बलन का प्रयोग करता है।

यह देखा जाता है कि किस प्रकार से शिक्षक किसी बालक के सम्मान को ठेस पहुँचाता है। वह उसे प्रिय मित्रों, उसके आदर्श शिक्षक एवं पूजनीय अविभावकों के समक्ष उसे दण्डित करता है और उस दण्ड का प्रतिकार भी कम ही होता है। दण्ड के कारणों को देखे तो आप पायेगे कि गृह कार्य का पूरा न होना, समय से विद्यालय न पहुँचना, शारीरिक स्वच्छता इत्यादि। इसके दुष्प्रभाव का आँकलन हम नहीं कर पाते कि अधिगमकर्ता पर इसका दुष्प्रभाव क्या पड़ा ? यही घटनायें कभी-कभी बड़ी दुर्घटना में बदल जाती हैं। फिर जीवन भर पश्चाताप के अलाव कुछ नही मिलता। इसका निहितार्थ यह नहीं है कि गृहकार्य न कराया जाय। अनुशासन न रखा जाया या अन्य किसी बुराई को अनदेखा किया जाय। बल्की हम शिक्षक समस्या के समाधान के अन्य विधियों को खोजे। हम परिश्रम करें हमें एक शिक्षक, एक अविभावक के रूप में छात्र के आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा। आत्मविश्वास इस रूप मे कि किसी घटना, दुर्घटना को बताने पर आप उनके साथ होगे, जैसे विद्यालय मे किसी अध्यापक/कर्मचारी के द्वारा किये जा रहे दुर्व्यवहार को वह इसलिय व्यक्त नही कर पाता है कि उसे यह भय होता है कि अविभावक उसके बारे में क्या सोचेंगे ? और वह दुर्व्यवहार को सहता है। परिणाम स्वरुप जब उसे कोई रास्ता नहीं दिखता है तो बड़ी-बड़ी दुर्घटना सामने आती है। जबकी अगर प्रारम्भ में बच्चा बताता तो उसे आसानी से रोक जा सकता है।

दोस्त बनकर- हम छात्रों के मित्र बनकर भी समस्याँओं का समाधान खोज सकते हैं। फिर विद्यालय का वातावरण ऐसा होगा जहाँ सृजनात्मकता होगी, चिन्तन होगा, नये विचारों का सृजन होगी और जिस दिन विद्याालय बन्द होगा उस दिन बच्चों में बेचौनी होागी। न की विद्यालय खुलने वाले दिनों में।

अपने सपने न थोपें- हम छात्रों पर अपने सपने न थोपें बल्की उन्हें उनके सपने बुनने दे। उनकी रूचियों, इच्छाओं को सम्मान दें। रूचिओं के जागृत होते ही परिणाम आश्चर्यजनक होंगे। आपकी अपेक्षा से कई गुना ज्यादा अच्छे परिणाम होंगे बच्चें जिम्मेदार बनकर दिखायेंगे।

उपयुक्त शिक्षण विधि का चयन- प्रत्येक विषय प्रत्येक कालांश एक ही विधि से शिक्षण निरसता को जन्म देता है। हमें नवीन शिक्षण विधियों पर प्रयोग करना चाहिए। ये नवीन विधियाँ–उत्साह उमंग और नवीनता का भाव उत्पन्न करती है। क्योंकि बाल मन सदैव नवीनता के लिये जिज्ञासू होता है। करके सीखना, प्रहसन, कहानी, जोड़ीदार पद्धति, योजना पद्धति, आदि नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग अधिगमकर्ता तथा विषय के अनुरूप किया जा सकता है।

विद्यालय बच्चों के लिए – हमें सदैव ध्यान में रखना है कि विद्यालय बच्चे का है, बच्चों के लिये है। वहाँ के प्रत्येक कोने को उनके अनुरूप बनाने तथा उन्हें आभास कराने की आवश्यकता है कि बच्चे हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। विद्याालय के संसाधनों को छात्रों के अनुकूल बनाया जाय जैसे- खिड़की, सीढ़ियाँ, शौचालय, साज–सज्जा, खेल उपकरण बच्चों के आयु वर्ग के अनुरूप तैयार कराये।

उपरोक्त क्रियाकलापों के माध्यम से शायद हम शिक्षक बच्चों को उनकी विशिष्टता के प्रति अपनी संवेदनशीलता को स्पष्ट कर सकते हैं, जो बच्चों की सुरक्षा एवं आत्म विश्वास का आभास करायेगी। वे अपनी समस्याँओ को शिक्षकों/अविभावक से कह पायेंगे। आप उसे विश्लेषित करके उसका समाधान निकाल सकेंगे जिससे किसी बड़ी दुर्घटना को रोका जा सकेगा।

*****

हॉकी

– **बलवन्त दानू**
बी0पी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

जैसे लोग डर जाते हैं,
देखकर खाकी को
वैसे ही विपक्षी डर जाते थे
देख उसके हाथों में हॉकी को।

ध्यानचंद ने जन्म लिया
हॉकी का इतिहास लिखने के लिए,
गुलामी में जीया,
मगर खेला देश का नाम
रौशन करने के लिए।

मेजर ध्यानचंद हर हॉकी के
खिलाड़ी के दिल में जिंदा है।
मरने से पहले एक इतिहास बना दो,
क्योंकि ये जान एक परिंदा है।

इतिहास भी बेताब है,
हॉकी के खिलाड़ी को
जादूगर का खिताब देने को।
क्या कोई खिलाड़ी तैयार है
इस खिताब को लेने को?

इतिहास बेताब है
कुछ रिकॉर्ड तोड़ने के लिए
क्या कोई खिलाड़ी तैयार है
गोल पर गोल ठोकने के लिए ?

*****

उजड़ा आसमान

– अन्जुम बानो
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

कुछ तो ठहर अरे मानव
क्यों बना हुआ है तू दानव ?
देखेगा तू कुछ दिन बाद
ठहरेंगे तेरे ये हाथ।

तब न कोई आशा बची होगी
बस कुछ ही साँस बची होगी
तब देखेगा तू आस–पास
तुझे दिखाई न देगी आस।

क्योंकि तूने स्वयं बनाया है
मंगल और चाँद सजाया है
पर धरती को स्वयं उजाड़ा है
सुरभित पर्यावरण बिगाड़ा है।

छेदा है अपनी छत को
जिता दिया अपनी जिद को
पर सोच क्या तू विजयी है
देख यह धरा लुट गयी है।

अपनी ही नसों को काटा है
जब किसी वृक्ष को काटा है
रे मानव तेरी बुद्धि बहुत चंचल
फाड़ दिया हरित आँचल।

छेड़ प्रकृति को करे प्रयोग
अब अपनी करनी को भोग
बस्ती चाँद पर बसायेगा
उसको भी अब मिटायेगा।

करेगा मंगल पर अनुसंधान
उसकी भी अब खतरे में जान
उस पर भी अब धुँआ उड़ायेगा
धरती की तरह बनायेगा।

करता है प्रयोग हर क्षण
धरती पर फैलायेगा प्रदूषण
ऊर्जा मुक्त करेगा कण
जिससे तु करेगा रण।

फिर फैलेगा हलाहल
जो सुखा डालेगा जल
फिर नहीं बहेगी नदियाँ
ऐसे ही बीतेगी सदियाँ।

अब कितना और बढ़ायेगा तामसिक ज्ञान
एक दिन तेरे साथ होगा न कोई
साथ होगा तो बस ये लुटी
धरती और उजड़ा आसमान।

*****

‘शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है’ – ***महात्मा गाँधी***

वर्तमान समय मे गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता

- डॉ0 शिवेन्द्र सिंह चंदेल
असि0प्रो0- राठ महाविद्यालय पैठाणी

मोहनदास करमचन्द गाँधी जी का जन्म काठियावाड़ के पोरबन्दर नामक स्थान पर 2 अक्टुबर 1869 ई0 मे हुआ था। उनकी माता का नाम पुतली बाई और पिता का नाम करमचन्द गाँधी था। गाँधी को अपने माता-पिता व बाप-दादा से आदर्श चरित्र व आदर्श व्यक्तित्व विरासत स्वरुप प्राप्त हुई थे। जिसने आगे चलकर घने वृक्ष का रूप धारण कर भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर शीतल छाया प्रदान की। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उनकी सत्य अहिंसा की अवधारणा न केवल स्वतंत्रता दिलाने में सहायक हुई बल्कि विश्व को शोषण व अत्याचार से मुक्ति दिलाने का एक अमोघ हथियार भी दिया। इसलिए देश में जब-जब महापुरुषों को याद किया जाता है तो उनमें एक बड़ा नाम राष्ट्रपिता माहात्मा गाँधी का होता है। गाँधी जी यूँ तो सत्य व अहिंसा के अपने सिद्धान्तों व स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी भूमिका तथा अपने संत स्वरुप व्यक्तित्व के लिए जाने जाते हैं।

जब-जब बात शिक्षाविदों की होती है तो उसमें गाँधी जी अग्रणी रूप मे होते हैं। उनकी शैक्षिक गतिविधियाँ तथा शैक्षिक विचारों ने समाज को एक दिशा दिखाने का काम किया हैं। उनका मानना था कि मनुष्य न तो कोरी बुद्धि है न स्थूल शरीर है और न केवल हृदय या आत्मा ही है। बल्कि सम्पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए तीनों का उचित मेल आवश्यक होता है। और यही शिक्षा है।

महात्मा गाँधी के अनुसार-शिक्षा से अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर मन एवं आत्मा में निहीत सर्वोतम शक्तियों के सर्वागीण विकास से है। शिक्षा को समाज से जोड़ने के हिमायती गाँधी जी ने शरीर मस्तिष्क और आत्मा के विकास का साधन शिक्षा को माना जिसके द्वारा वह एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व का स्वामी हो, एक आदर्श नागरिक हो और सर्वोदयी समाज के निर्माण में सहायक हो।

इस प्रकार से शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, आदर्श, आदतों एवं रूचियों आदि का विकास करना है, जिसके द्वारा उसे समाज में उचित स्थान मिल सके। इस प्रकार से शिक्षा एक ऐसा ज्ञान है जो व्यक्ति की अज्ञानता को मिटाकर ज्ञान की ज्योति जलाता है और वह जिसके पास है उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर व्यक्तित्व की शोभा बढ़ाता है। शिक्षित व्यक्ति से सभ्य एंव सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है। इस प्रकार से शिक्षा का अर्थ अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना होता है। शिक्षा गतिशील है और इसका कार्य क्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक है। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि व्यक्ति परिस्थियों के अनुसार अपने जीवन व समाज के लिए उचित कार्य को उचित समय पर कर सके।

गाँधी जी ने शिक्षा को जनसामान्य के साथ जोड़ते हुए कहा है ''मैं एक ऐसे भारत के लिए प्रयत्न करना करना चाहता हूँ जिसमें निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी यह अनुभव कर सके कि यह उनका अपना देश है। जिसके निर्माण में उनकी भी भूमिका है, जिसमें ऊँच-नीच, गरीब-अमीर का भेदभाव नहीं होगा और सभी लोग सामंजस्यपूर्ण वातावतण में जीवन यापन करेंगे। गाँधी जी की शिक्षा केवल कल्पना ही नहीं बल्कि उनके जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई भी है। उनके अनुसार सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, निर्भयता आदि ऐसे उद्देश्य है, जिनको केवल शिक्षा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। गाँधी जी ने आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और आध्यात्मिक प्रगति का आधार भी शिक्षा को ही बतलाया है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि गाँधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में न केवल मौलिक विचार ही प्रस्तुत किये बल्कि तमाम सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में लिप्त रहने हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे प्रयोग भी किये। उन्होंने अपने अनुभवों द्वारा भारत में शिक्षा के जिस रूप को उचित माना उन्हें लागू करने का प्रयास भी किया। यही कारण है कि उनकी तमाम विवेचनाएँ आज भी अपना विशेष स्थान रखती हैं। आज भी हम

अपनी शैक्षिक समस्याओं का अन्त गाँधी जी के सन्देशों को अमल में लाकर कर सकते है। वर्तमान समय में साम्प्रदायिकता, कट्टरता और आंतकवाद के इस दौर में गाँधी और उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। उनके सिद्धान्तों के अनुसार साम्प्रदायिक सदभावना कायम करने के लिए सभी धर्मो को साथ लेकर चलना आवश्यक है। परन्तु आधुनिक भारत का निर्माण करने वालों ने आधुनिक शिक्षा की आड़ मे गाँधी के विचारों को दरकिनार कर दिया है जिससे आज ऐसी स्थिति हो गयी है कि एक गरीब के लिए वांछित शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया है और इसका मात्र एक ही कारण है गाँधीवादी विचारधारा का समाप्त होना। अब समाज का हर वर्ग अपने भाग–दौड़ व हिंसा भरे जीवन से त्रस्त हो गया है। वे जीवन को सुखमय व शांतिपूर्वक व्यतीत करना चाहते हैं। इसके लिए कोशिश भी कर रहे हैं। ऐसे समय मे आज गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह की आवश्यकता महसूस हो रही है।

विभिन्न देशों जैसे– संयुक्त राज्य अमेरिका मे मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रिका में नेल्सन मंडेला और म्यांमार में आंगसान सू की जैसे लोगों के नेतृत्व मे गाँधीवादी विचारों का प्रयोग किया गया और आज उसके परिणाम भी दिखाई पड़ रहे है। जिससे, यह स्पष्ट हो गया है कि वर्तमान समय में भी गाँधीवादी विचारों की प्रांसगिकता है। बस आवश्यकता है हमें उनके सिद्धान्तों पर चलने की। वर्तमान दौर में जब वैमनस्यता बढ़ रही है और राजनीतिक शुचिता कमजोर हो रही है, ऐसे समय मे गाँधी जी की विचारधारा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। उन्होंने विश्व को शांति व अहिंसा का पाठ पढ़ाया है और खादी के उपयोग के जरिये स्वावलम्बन का सन्देश दिया। हर हाथ को काम देने की बात कही। आज देश को पुनः अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए उसी विचारधारा की आवश्यकता है, तभी जाकर देश से भ्रष्टाचार, बेरोजगारी जैसी समस्या का अन्त किया जा सकता है और देश मे भाईचारा व राष्ट्र के प्रति निष्ठा को बढ़ावा मिल सकता है।

*****

हौसला

– अजेन्द्र सिंह
छात्र, बी0पी0एड

हौसला रख आगे बढ़ने का
मुश्किलों से लड़ने का
यही तो एक तरीका है
ऊँची उड़ान भरने का।
लड़खड़ा भी जाये अगर
कदम तो गम न कर
यही तो वक्त है तेरा कुछ
कर गुजरने का।
भले ही राहों में कुछ मिले पत्थर तो मिलने दे
हिम्मत कर आगे बढ़ तेरे ही पास है हर हल।
बस सब्र रख के देख यही तो वक्त है,
पत्थर के फूल बनने का।
बस एक बार भरोसा कर ले तु खुद पर
मजा तुझे भी आने लगेगा फिर गिरते–गिरते संभलने का।
हौसला रख आगे बढ़ने का
मुश्किलों से लड़ने का।

*****

'शिक्षा एक विशेष प्रकार का वातावरण है, जिसका प्रभाव बालक के चिन्तन, दृष्टिकोण तथा व्यवहार करने की आदतों पर स्थाई रूप से परिवर्तन के लिये डाला जाता है'।
– जी0 एच0 थॉमसन

राठ महाविद्यालय पैठाणी का पहला दिन

– सूरज भण्डारी
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

मैंने स्नातक परीक्षा हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मैंने शिक्षक बनने के उद्देश्य से बी0एड0 प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद नए महाविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रशस्त हुआ। मेरा बी0एड0 पाठ्यक्रम में प्रवेश राठ महाविद्यालय पैठाणी में हुआ, जबकि इससे पहले मैंने अपनी पढ़ाई हे0न0 बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से किया था जो कि उत्तराखण्ड का सबसे बड़ा शिक्षण संस्थान है। मेरे मन में अनेक भाव उमड़ रहे थे। नया महाविद्यालय, नई कक्षा, नये सहपाठी और नया माहौल तथा मन में तरह–तरह की भावनाएँ उठ रही थी। कैसी होगी कक्षा? कौन–कौन से शिक्षक होंगे? कक्षा में बैठने के लिए फर्नीचर होंगे? विद्यालय में पढाई की दिनचर्या कैसी होगी? कैन्टीन है या नही? बाजार होगा की नहीं? अगर होगा तो कितना बड़ा होगा? आदि विभिन्न प्रकार के विचार मन में उठते थे, लेकिन चूँकि मैं अपना प्रवेश राठ महाविद्यालय पैठाणी में करा चुका था, तो वहाँ मुझे रहना था और अपना पठन–पाठन करना था ।

17 नवम्बर को मैंने महाविद्यालय में प्रवेश किया। ठीक 10 बजे प्रार्थना में शामिल हुआ, उसके बाद राष्ट्रगान हुआ, ततपश्चात सभी क्रमबद्ध अपनी अपनी कक्षा में चले गए। पूरी कक्षा व्यवस्थित थी। कक्षा में सुविधायुक्त फर्नीचर, अध्यापक के लिए मेज, कुर्सी, ब्लैक बोर्ड, बिजली के लिए बल्ब तथा बड़ी–बड़ी खिड़कियाँ थी। हमने कक्षा में स्थान ग्रहण किया, तत्पश्चात शिक्षक उपस्थिति पंजिका ले कर आ गए। उन्होंने हल्के–फुल्के में हमारा परिचय प्राप्त किया और अपना परिचय दिया। आज का दिन लगभग सभी गुरूजनों ने हमारा परिचय ही प्राप्त किया और हल्का सा पठन–पाठन हुआ। उसके उपरान्त मध्यान्तर हुआ और सभी धूप सेंकने मैदान में चले गए। उसके बाद स्टाफ रूम, पुस्तकालय, कैंटीन, प्राचार्य का कार्यालय आदि संसाधनों से अवगत हुआ।

महाविद्यालय के वर्गाकार भवन के आगे मैदान है। राठ महाविद्यालय के एक ओर नयार नदी बहती है तथा दूसरी ओर छोटा सा पुष्प उद्यान है। दोपहर के समय सुनहरी धूप खिली थी। मैं मंत्रमुग्ध सा चारों ओर निहारता रहा, लेकिन धीरे–धीरे दिन बीतते गए और मुझे एहसास हुआ कि कोई शिक्षण संस्थान बड़े–बड़े भवनों से नहीं बल्कि वहाँ के शिक्षक और छात्रों के जुनून से बड़ा होता है। ऐसे ही राठ महाविद्यालय श्रीनगर विश्वविद्यालय के मुकाबले छोटा है तथा इसमें संसाधनों का अभाव भी है, किन्तु यहाँ के शिक्षकों के प्रयास और जुनून से यह महाविद्यालय बी0एड0 प्रशिक्षण के लिए काफी सर्वोत्तम महाविद्यालय है।

*****

बेटी बचाओ

– नीलम मनराल
छात्रा, बी0पी0एड0

जब माँ ही जग में ना होगी
तो तुम जन्म किससे पाओगे ?
जब बहन न होगी घर के आँगन में
तो किससे रूठोगे किसे मनाओगे ?
जब दादी नानी न होगी
तो तुम्हें कहानी कौन सुनाएगा ?

जब कोई स्वप्न सुन्दरी ही न होगी
तो तुम किससे ब्याह रचाओगे ?
जब घर में बेटी ही न होगी
तो तुम किस पर लाड लुटाओगे ?
जिस दुनियाँ में स्त्री ही न होगी
उस दुनियाँ में तुम कैसे रह पाओगे ?

जब तेरे घर में बहु ही न होगी
तो कैसे वंश आगे बढ़ाओगे ?
नारी के बिन जग सूना है
तुम ये बात कब समझ पाओगे ?

*****

PHYSICS DEFINE ALL

Prashant Nawani
M.Sc. (Physics) B.Ed., 4th semester

From quantum particles to super massive black holes, from spinning electrons to spinning galaxies there is no such phenomenon any branch of science can explain better than physics.

"Physics is the king of science" Says Nobel Laureate Gross.

Surely physics is the king of science. King is someone who takes decisions on its own anyone. Who have studied physics is very well familiar with assumptions. In physics we assume so many things without any valid proofs and these assumptions determine vitals results. Physics is man's best attempt at modeling the universe and serves as the fundamental bridge between the abstractness of math and our observations. It is root of all the sciences. The deeper you dive in to one particular topic, the closer you will be to physics. An inquisitive botanist studying natural phenomenon in biology can ask a question that leads him closer to the realm of chemistry and diving even deeper still will ultimately lead him to physics same applies to engineering. It's one thing to know, how an electronic component work (like a transistor). It's a whole other thing to understand why it works in order to improve upon current understanding of modern electronics. Engineer must work with physicists who have a better understanding as to why there components work the way they do.

Beyond physics you get into applied mathematics and other advanced math topics that is to say, there is no other science larger in scope or more encompassing than physics so in order to have the deeper understanding of any science having a solid foundation in physics is imperative.

In simple words:

"It is the attempt at explaining the laws of our reality"

*****

SELF IMPROVEMENT

- Akriti Mamgain
B.Ed., 4th Semester

What is self improvement ? It is an inner process, aiming for a better, happier life, it is a process of inner change, adopting a positive mind set, getting rid of negative habits, and building new positive ones. Self improvement means building new positive habits, and changing one's behavior and attitude. It is a way to make ourselves better and happier people. Self improvement usually starts with awareness of us and our behavior, and the desire to impress and transform ourselves and our habits.

Things to do for self improvement……

- To improve yourself, you have to be courageous.
- Self-improvement is when you change yourself to the better.
- We can improve our skills such as, leadership skills, goals, organizational skills, communication skills and all our values within ourselves to make us a better person.
- Self - improvement deals with inner change, throwing away our negative habits and absorbing all the positive ones.
- Self – improvement is a genetic label and can be applied in various phases of life. This is also otherwise referred to as personal development.

Express your gratitude after waking up from sleep.

- After waking up in the morning, sit up in your bed and be thankful for all the things that you are obliged for.
- This may eventually kick things up and offers a momentum for the beginning of a good and successful day. Especially when compared to the other days where you wake up lazy, groggy and pushing yourself to start your day of work.

Meditation

- Meditation is not just an act of sitting in still position, closing your eyes. It is the art of living peace to the mind, letting out all the negative thought and taking in all the positive thoughts and vibrations, most of which prove to be profound with some obvious surprises within you.
- It must be included in our everyday routine, which is better than any work that you do to keep your mind and soul free.
- It will simply push out all the stress and depression away and helps you prevent then by mediating everyday or perhaps every time you feel like doing it.
- Every time you feel like you are broken down or when you go nuts about something or when you feel like you need a break from all the pressure then, the best way to relieve yourself from the stress is by getting yourself a private space and start quieting your mind.

BREAK YOUR ROUTINE –

- Routine can make your life systematic. That is never a good idea to draft your life. On the other hand it is never possible to drastically change your routine, it can gradually begin with small change and shifts in your regular routine.

- Keep trying something new every day, no matter how insane you think it is. Try going to a new restaurant instead of your usual one, listen to a different playlist on your phone.
- Changes in your routine will automatically help your upraise your level of life.

EXERCISE AND HEALTHY DIET –

- Exercise has abundant benefits, especially when it comes to self- improvement, this can be the best way to keep your life healthy.
- It improves your strength and helps to improve your body's immune system. Most importantly exercise keeps you in good shape, physically and mentally.
- It is very important to be conscious on what you consume. A proper diet is a very important issue to be considered in our day to day life.
- It is also important that you maintain a balanced diet with sufficient nutrients and proteins to help manage your immune system and supply you with the necessary energy.
- A self – sufficient diet and an hour of exercise would be the perfect thing for self-improvement as it keeps you in good shape and health.

SPEND SOME TIME ON READING –

- Though this habit is overshadowed by all the other habits, it is indeed a useful and intellective part of the time you will be investing on it.
- Reading is a special habit which improves our knowledge and language and helps develop a good grade of communication and also helps build confidence within an individual.

THE BOTTOM LINE –

- Self – improvement can be absolutely fun and rewarding. Simply look at all the people around you. Try to observe the way they behave. If you find out some negative qualities in someone, examine it with yours. If you find out that you have that quality then it will be appropriate for you to change it.
- It is something that teaches us to turn the negatives in to positive affirmatives. It enables a person to attain full potential. Through this we intend to understand ourselves better and make positive changes inside the world. Keep motivating yourself to make all the changes without any hesitations. This will help you to face all circumstances of life.
- Self – improvement gathers abundant confidence within an individual which helps invade the best position in the society. By improving yourself in accordance with every situation you face in life. You could lead a peaceful, happy and indeed a long life.

*****

'Education is that process of development in which consists the passage of human being from infancy to maturity, the process whereby he adapts himself gradually in various ways to his physical, social and spiritual environment.'

- T. Raymont

अनुशासनहीनता और मूल्य शिक्षा

– डॉ0 श्याम मोहन सिंह
असि0प्रो0– (बी0एड0), राठ महाविद्यालय पैठाणी

अनुशासनहीनता विगत कई दशकों से विद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों की एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। छोटे और बड़े, सरकारी और गैर–सरकारी, प्रायः सभी शिक्षण संस्थान इस समस्या का सामना कर रहे हैं। यह समस्या जितनी कला वर्ग में है, उतनी ही वाणिज्य, विज्ञान और तकनीकी वर्ग में भी। अनुशासनहीनता के दुष्परिणामों या उदाहरणों की चर्चा करने और उसके निदान एवं समाधान के उपाय खोजने से पूर्व, हमें यह जानना और समझना होगा कि, *'अनुशासनहीनता किसे कहते हैं'* ? सरल शब्दों में, **'अनुशासन का अभाव ही अनुशासनहीनता है।'** अब, *'अनुशासन क्या है'?* **'शासन का अनुसरण अनुशासन है।'** और *'शासन क्या है'?* **'सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए, घोषित और अघोषित नियमों और परम्पराओं का प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से पालन करना एवं करवाना तथा अन्यथा की स्थिति में दण्ड का भागीदार होना शासन है।'** इस प्रकार स्पष्ट है कि, अनुशासन का सम्प्रत्यय अत्यन्त सामान्य प्रतीत होते हुए भी अत्यधिक सारगर्भित है। इस दृष्टि से, शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासनहीनता की समस्या एक बेहद गम्भीर विमर्श का विषय है। ध्यातव्य है कि, शैक्षिक स्तर में उन्नयन के सापेक्ष, अनुशासनहीनता का ग्राफ भी विस्तृत होता चला जाता है। प्राथमिक स्तर से आगे बढ़ते हुए, हम ज्यों–ज्यों उच्च स्तर की ओर अग्रसरित होते हैं, त्यों–त्यों अनुशासनहीनता के उदाहरणों की संख्या और विभिन्नता दोनों में वृद्धि होती जाती है। यह सोचने और चिन्ता में डालने वाली बात है कि, 'जब वृद्धि और विकास के क्रम में बालक में ज्ञान, समझ, संवेदनशीलता, परिपक्वता इत्यादि का समय के साथ उत्तरोत्तर विकास होता रहता है और शिक्षण संस्थानों का परिवेश भी संसाधनों से समृद्ध होता जाता है, तो फिर अनुशासनहीनता की समस्या कम होने की जगह बढ़ती क्यों जाती है।'

किसी भी समस्या के समुचित निदान और समाधान में होने वाला अनावश्यक विलम्ब, छोटे से जख्म को नासूर बना देता है। अस्तु, अनुशासनहीनता की समस्या के कारणों को खोज कर उसका अविलम्ब उपचार प्रारम्भ करना अपरिहार्य हो गया है। जिस प्रकार, एक झूठ को बचाने के लिए सौ झूठ बोलने की नौबत आ जाती है; उसी प्रकार, **एक समस्या की अनदेखी समस्याओं की अनवरत श्रृंखला को पैदा कर देती है।** नतीजा यह होता है कि, हम समस्या के ठीक पूर्ववर्ती कारणों के उपचार में ही उलझे रहते हैं और समस्या के मूल कारण तक नहीं पहुँच पाते। फलस्वरूप, समस्या बनी रहती है और भिन्न–भिन्न परिवर्तित स्वरूपों में हमारे सामने किसी मायाविनी की तरह प्रस्तुत होती रहती है। जैसे– बताये गये निर्देशों का पालन न करना, अपने काम में टाल–मटोल करना, दिया गया कार्य पूरा न करना और पूछने पर बहाने बनाना, कक्षा के अन्दर ब्लैकबोर्ड, डेस्क या दीवारों पर अवांछित शब्द या वाक्य लिखना, कक्षा के फर्नीचर को क्षति पहुँचाना, क्यारियों में लगे फूल–पौधों और अन्य वृक्षों को क्षति पहुँचाना, सहपाठियों की अध्ययन सामग्री और अन्य वस्तुएँ चुराना, सहपाठियों से ईर्ष्या व द्वेष भाव रखना और उनके साथ खेलकूद में बेईमानी और झगड़ा करना, शिक्षकों का अनादर करना और यदा–कदा उनके साथ हिंसक दुर्व्यवहार करना, शिक्षकों के विरुद्ध आन्दोलन एवं नारेबाजी करना, पुस्तकालय और वाचनालय में शोर–शराबा करना, प्रयोगशाला में अनाधिकृत प्रयोग करने का प्रयास करना, नियमों का स्पष्ट रूप से उल्लंघन करना, जैसे– ड्रेस कोड का पालन न करना, समय पर विद्यालय न आना, बिना सूचना के अनुपस्थित होना, चुपके से कक्षा से भाग जाना इत्यादि।

अनुशासनहीनता के उपर्युक्त उदाहरणों को एक ही कोटि में रखने के सम्बन्ध में विद्वत्जनों से मेरा मत–मतान्तर हो सकता है और इसीलिए समस्या के निदान और समाधान के उपायों के सम्बन्ध में भी बहुरूपता देखने को मिल सकती है। परंतु, मैंने व्यापक दृष्टिकोण का आश्रय लेकर उपर्युक्त प्रकार के सभी दृष्टान्तों को एक ही कोटि में रखकर उनके मूल का निदान और समाधान खोजने का प्रयत्न किया है। अनुशासनहीनता के उपर्युक्त सभी उदाहरणों के मूल में हमें सामान्यतः दो बातें दिखाई पड़ती

हैं- या तो अज्ञान या फिर अवज्ञा की भावना। या तो बालकों को इस बात का पता ही नहीं होता कि जो वे कर रहे हैं, वह उन्हें नहीं करना चाहिए, या फिर वे जानबूझकर वह काम करते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए। अज्ञान का सम्बन्ध बुद्धि और विवेक से होता है तथा अवज्ञा का सम्बन्ध आचरण एवं व्यवहार से। इस प्रकार अनुशासनहीनता की स्थिति में बालक की बौद्धिक और चारित्रिक दोनों ही न्यूनताएँ प्रगट होती हैं।

अब हम मूल की तरफ़ और एक कदम बढ़ने का प्रयास करते हैं। हमने हमेशा ही यही सुना और पढ़ा है कि, '**शिक्षा बालकों का बौद्धिक और चारित्रिक विकास करती है।**' परंतु, ऊपर जो निष्कर्ष मैंने देखा है, उसका इसके साथ व्याघात सिद्ध होता है। शैक्षिक प्रक्रिया से जुड़ जाने के बाद, आगे बढ़ने के क्रम में, बालकों का उत्तरोत्तर बौद्धिक और चारित्रिक विकास होने की बजाय, उनके आचरण और व्यवहार में अनुशासनहीनता दिनों-दिन कैसे बढ़ती जाती है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि, *'हमारे बालक अपने समाज और विद्यालय से जो भी अनौपचारिक एवं औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उसकी सामग्री, उसकी संरचना, उसके स्वरूप में ही कुछ कमी है, जिसके कारण बालकों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में शिक्षा के वांछित या अभीष्ट उद्देश्यों की उपलब्धि नहीं हो पा रही है।'* एक ऐसी मूलभूत कमी, जिसके कारण शैक्षिक अभिवृद्धि के बाद भी बालक अनुशासनहीन होता जाता है। एक ऐसी मूलभूत कमी, जिसके कारण बालक आगे चलकर धन, पद, प्रतिष्ठा, सुख, सुविधाएँ इत्यादि तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन एक अच्छा आदमी नहीं बन पाता। 'यह कौन सी कमी है'? 'यह मूल्यों की कमी है।'

'मूल्य' सर्वोत्तम अच्छाई के सर्वोत्तम मानक होते हैं और इसीलिए इन्हें 'आदर्श' के रूप में स्वीकार किया जाता है। 'आदर्श' अर्थात् 'जिनका अनुसरण किया जाना चाहिए।' **मूल्यवान् आदर्शों का अनुसरण करके ही कोई व्यक्ति श्रेष्ठ और महान मनुष्य बन सकता है।** हमारी प्रचलित शिक्षा व्यवस्था और हमारे सामाजिक जीवन में प्राय: आदर्शों और मूल्यों की स्पष्ट कमी परिलक्षित होती है। अगर कहीं मूल्यों या आदर्शों की विद्यमानता है भी, तो वह सैद्धान्तिक रूप में और नाममात्र को है। *मूल्यों की वास्तविक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध न होने के कारण ही बालकों के व्यक्तित्व एवं व्यवहार का समुचित उन्नयन नहीं हो पाता और वे सही और गलत के वास्तविक ज्ञान के अभाव में उचित और अनुचित व्यवहार में अन्तर नहीं कर पाते और अनुशासनहीनता के संक्रमण का शिकार बन जाते हैं।*

देखा जाय तो, बच्चों को मूल्यों की वास्तविक शिक्षा प्रदान करने और उन्हें अनुशासनप्रिय बनाने की दृष्टि से, हम घर-परिवार और विद्यालय दोनों ही जगह हाशिए पर हैं। शिक्षा के माध्यम से बालकों का सामाजीकरण करने की बात हो या फिर उन्हें संस्कारी और अनुशासनप्रिय बनाने की, दोनों ही स्थितियों में हमें *बालकों को कुछ आदर्शों, मानकों और मूल्यों को 'अपनाने' का, अर्थात् 'उनका ज्ञान प्राप्त करने, उनका महत्त्व समझने और तदनुसार आचरण करने' का, समुचित प्रबन्ध करना होगा।* सरल शब्दों में कहें तो '**बालक की शिक्षा के प्रारम्भ से ही मूल्य शिक्षा का प्रबन्ध करना होगा।**' यह प्रबन्ध औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में, विद्यालय तथा घर-परिवार दोनों जगह करना होगा। वस्तुत: घर-परिवार में मूल्य के बीजारोपण और अंकुरण का प्रयत्न होना चाहिए और विद्यालय में उनके संतुलित विकास, पल्लवन, पुष्पन, प्रतिफलन और दृढ़ीकरण का कार्य होना चाहिए। माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिका प्रारम्भिक और महत्वपूर्ण होती है। **मूल्यों का पहला पाठ, बच्चा अपने घर-परिवार में ही सीखता है।** स्वामी दयानन्द सरस्वती ने माता-पिता को बच्चे का प्रारम्भिक और मूलभूत शिक्षक बताया है। अत: माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को, न केवल अपने बच्चों अपितु पास-पड़ोस के बच्चों के लिए भी, प्रेरणास्पद, मूल्यपरक, संस्कारी और अनुकरणीय आचरण प्रस्तुत करना चाहिए तथा साथ में ऐसे आचरण के सम्बन्ध में बच्चों की जिज्ञासा भी शान्त करनी चाहिए और उसके महत्व का भी निरूपण करना चाहिए। **क्योंकि, प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे विश्वास और अनुकरण के आधार पर ही सीखते हैं।**

घर-परिवार के बाद, **विद्यालय में वास्तविक मूल्य शिक्षा का व्यावहारिक और प्रायोगिक प्रबन्ध होना चाहिए।** विद्यालयी अथवा शैक्षिक पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में स्थान दिया जाना चाहिए। महात्माओं और सन्तों की जीवनियाँ, महान् व्यक्तियों की जीवनगाथाएँ, नीतिपरक कहानियाँ, उपदेशात्मक आख्यान और आध्यात्मिक तथा नैतिक शिक्षाओं की पुस्तकें बच्चों को प्रारम्भ से पढ़ाई जानी चाहिए। इसके समानान्तर, पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ भी आयोजित की जानी चाहिए और उनके माध्यम से सीखे हुए ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोगों पर बालकों से अमल करवाया जाना चाहिए। **अगर कक्षा में बच्चों को पारस्परिक सहयोग के बारे में कोई ज्ञानात्मक बात बताई जाए तो उसके पश्चात् उनको परस्पर सहयोगपूर्ण कार्य करने का अवसर भी प्रदान किए जाना चाहिए।** इस दौरान, शिक्षक द्वारा उनकी निगरानी की जानी चाहिए और जहाँ कहीं वे मार्ग से भटकें, शिक्षक द्वारा उन्हें सही दिशा में प्रेरित किया जाना चाहिए। इस सारी कवायद में, शिक्षक का आचरण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। शिक्षकों को सदैव अपने आचरण को लेकर सतर्क और सचेत रहना चाहिए। **महात्मा गांधी** ने इसी कारण यह बात कही थी कि, **'बच्चे शिक्षक द्वारा पढ़ाई गई पुस्तक से ज्यादा उनके आचरण से सीखते हैं।'** दरअसल वे 'शिक्षक' को 'विद्यार्थियों की पाठ्य-पुस्तक' मानते थे, जो अपने आचरण द्वारा अपने शिष्यों की आत्मा को झकझोर देने की सामर्थ्य रखता है। इसके अतिरिक्त, न केवल शिक्षकों अपितु विद्यालय के अन्य सभी कार्मिकों को भी, अपने-अपने कार्यो में अनुशासित आचरण का प्रदर्शन करना चाहिए। **बच्चे अपने आसपास के उन सभी लोगों के आचरण से प्रभावित होते हैं, जो उनसे प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं।** बच्चों के आचरण में मूल्यों का विकास करना और उन्हें अनुशासन का पाठ पढ़ाना, किसी व्यक्ति विशेष की जिम्मेदारी न होकर उन सभी लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है जो उसकी शिक्षा से, उसके व्यक्तित्व के विकास से, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि, *'बच्चों में अनुशासन का स्वाभाविक विकास करने के लिए, वास्तविक और व्यावहारिक मूल्य-शिक्षा का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।' इसका आरम्भ घर-परिवार से होना चाहिए, जहाँ माता-पिता और अन्य सदस्यों द्वारा बच्चों के अन्दर मूल्यों और संस्कारों की नींव रखी जाय। तत्पश्चात् विद्यालय में, शिक्षकों द्वारा, उस नींव पर बालक के उत्तम व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास का कार्यक्रम संचालित किया जाय।* एक तरफ, पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से उन्हें मूल्यों, संस्कारों, आदर्शो, कर्त्तव्यों, नियमों आदि का सैद्धान्तिक ज्ञान और महत्व आत्मसात् कराया जाय तथा दूसरी तरफ, शिक्षकों और अन्य लोगों द्वारा अपने आचरण को अनुकरणीय दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत कर उनमें अनुशासन की सहज और स्वाभाविक वृत्ति का विकास किया जाय। **बच्चों को, वास्तविक और व्यावहारिक मूल्य-शिक्षा के माध्यम से, जब कतिपय मूल्यों का अधिगम कराया जाएगा, मूल्यों को जान और समझ कर तदनुरूप व्यवहार करना सिखाया जाएगा तो उनका आचरण उन मूल्यों के अनुरूप उन्नत, संशोधित, परिष्कृत और परिमार्जित हो जाएगा और तब उनके आचरण में अनुशासन की सहज और स्थाई आदत का विकास हो जाएगा और अनुशासनहीनता का प्रश्न पूर्णतया तिरोहित हो जाएगा।**

*****

'We want that education by which character is formed, strength of mind is increased, the intellect is expanded and by which one can stand on one's own feet'
- Swami Vivekanand

अमर शहीद श्रीदेव सुमनः व्यक्तित्व व कृतित्व

- जितेन्दर डोभाल
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर 2019-2021

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ भारत की जनता का संघर्ष सड़कों तक पहुँच चुका था। राष्ट्रीय आजादी के लिये क्षेत्रीय स्तर पर भी आन्दोलन हो रहे थे। जिसका प्रभाव टिहरी रिसायत के अनेक नौजवानों पर पड़ा था जिससे कई समर्पित जननेता सामने आये। उसमें से एक श्रीदेव सुमन का जन्म 25 मई 1916 को टिहरी रिसायत की धरती पर चम्बा के निकट जौल गाँव में हुआ इनके पिता वैध पं0 हरिराम बडौनी एवं माता तारा देवी थी।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्रीदेव सुमन देहरादून में विद्याध्ययन के दौरान छात्र जीवन से ही साहित्यिक क्षेत्र में सक्रिय हो गये और इसी में स्वयं को स्थापित करना चाहते थे किन्तु अपने चारों ओर टिहरी रियासत के सामंतशाही अत्याचार व जन निराशा के वातावरण को देखकर उन्होंने खुले रुप से सोये हुये समाज को जगाने एवं जनता में नवचेतना विकसित करने का बीड़ा उठाया और एक समर्पित जननेता के रुप में सामने आये।

नौजवान श्रीदेव सुमन की मात्र 24 साल की उम्र में ही 23 जनवरी 1939 को उनकी नेतृत्व क्षमता व लगन के कारण देहरादून में गठित टिहरी राज्य प्रजा मण्डल में मंत्री पद पर चुन लिया गया था। इसके बाद 17 व 18 फरवरी 1939 को लुधियाना में हुये अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की बैठक में श्रीदेव सुमन सम्मिलित हुए जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने टिहरी रियासत की कारगुजारियों की बात रखी। इसी बैठक में इन्हें इसकी स्थायी समिति में हिमालय क्षेत्र से प्रतिनिधि चुना। सन् 1940 में 25 वर्ष की अवस्था में श्रीदेव सुमन पर रियासत में भाषण देने पर प्रतिबन्ध लगाया गया। 9 मई 1942 को उन्हें रियासत की मुनि की रेती ले जाया गया और इसी दिन से रियासत में बिना आज्ञा के उनके प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। 22 नवम्बर 1942 को उन्हें दो अन्य सत्याग्राहियों के साथ सेण्ट्रल जेल आगरा भेज दिया गया, जहा0161 वह पूरे एक वर्ष तक रहे।

सेण्ट्रल जेल में लिखित दो प्रमुख कवितायें -

यह कवितायें सुमन जी के राष्ट्रप्रेम, जन्मभूमि के प्रति सच्चा प्रेम व उनकी मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करती है-

आह्वान

आज अवनी उगलती है, अग्नियुत अंगार माँ जी।
आज जगती कर रही है, रक्त का श्रृंगार माँ जी।
इधर मेरे मुल्क में स्वाधीनता संग्राम माँ जी।
उधर दुनियाँ में मची है, मारकरट महान माँ जी।

ओ हिमञ्चल, भाल भारत,
बाल गढ़ क्या भूल बैठे,
स्वाधीनता सेनानियों को ?
उन भड़ो को भूल बैठे ?

स्वातंत्रय को शीतल समीरण,
देश को दी थी तुम्हीं ने।
विश्व में नव जागरण की,
शँख ध्वनि की थी तुम्हीं ने।

बंगाल को तुमने जगााया।
था जगा पञ्चाल तुम से।
महाराष्ट्र और सौराष्ट्र भी।
ये सब जगे तब ध्वनि से।

आज फिर क्यों मौन होकर
देखते खाली तमाशा ?
ऐ लाड़ले, गढ़देश की क्या
पूर्ण होगी अब न आशा?

गढ़ भूमि शुचि 'भागीरथी' माँ।
आज क्यों तू रो रही है ?
आंसुओं से हरित आँचल
मौन बन क्यों धो रही है ?

मानस सरो में दुग्ध तेरा
आज लहरे ले रहा है।
आज प्यारा वत्स तेरा
प्राण की बलि दे रहा है।

सत्य के सिद्धान्त पर ही, सत्य-आग्रह ये हमारा।
देश हित बलिदान होंवे, हिंसा रहित पथ हमारा।
आज आँचल में सुमन बस एक लघु उपहार माँ जी।
सह चरण रज में मिले, या कंठ का ही हार माँ जी।

वास्तव में श्रीदेव सुमन के लिए अपना कुछ भी नहीं था। वे जब जेल में रहे तो, उन्होंने अपनी राष्ट्रीय सोच को अपने परिजनों तक पत्रों कविताओं के माध्यम से पहुँचाया। 19 नवम्बर 1943 को उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। पुनः (सुमन जी) ने रियासत में भीतर पहुँचकर अपना संघर्ष कार्य प्रारम्भ ही किया था कि 30 दिसम्बर 1943 को उन्हें चम्बा में कैद करके टिहरी जेल में डाल दिया।

उन्होंने अपने ऊपर हो रहे अत्याचार व जनता को न्याय दिलाने सम्बन्धित माँगों को लेकर 3 मई 1944 से ऐतिहासिक अनशन प्रारम्भ कर दिया था। 209 दिनों के अनशन काल में से जिसमें 84 दिनों की ऐतिहासिक भूख हड़ताल भी शामिल है, उन्हें डरा धमकाकर अनशन तुड़वाने की कोशिश की गई। परन्तु मातृभूमि का वह सच्चा सपूत इतिहास की अनुठी और कठिनतम लड़ाई लड़ते हुये 25 जुलाई 1944 की रात को शहीद हो गया।

श्रीदेव सुमन की शहादत से टिहरी रियासत की सामंतशाही से मुक्ति का रास्ता खुल गया था और अन्ततः दो तीन वर्ष बाद ही श्रीदेव सुमन जी का स्वप्न साकार हो गया। इस प्रकार श्रीदेव सुमन का नाम इतिहास एवं राष्ट्र की जनता के दिलों में हमेशा के लिये अमर हो गया। ऐसे देशभक्त मातृभूमि के सच्चे हितैषी अमर शहीद श्रीदेव सुमन को मेरा कोटि कोटि नमन।

*****

'दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है' - ***कांट***

गुरू

- कु0 पूजा कोली
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

एक प्यारी पहेली है,
जो सबसे अलबेली है।
भगवान से पहले
और माता-पिता के बाद
क्यों माना जाता है गुरू को
जीवन का आधार खास।
माता-पिता का काम है
बच्चों को संस्कार देना
थोड़े से बड़े होते हैं बच्चे,
जब उनको गुरू के पास छोड़ दिया जाता है।
ना उन्हें पता होता शिक्षा क्या है?
ना उन्हें पता है पढ़ाई क्या है ?
ना उन्हें पता कि बैठना कैसे है?
ना उन्हे पता होता कि बात कैसे करते हैं?
तब गुरू उनको ये सब सिखलता है
बच्चे को बोलने से लेकर
पढ़ना तक सिखाता है।
गुरू का दिल बहुत बड़ा होता है
जब कुछ ना आये बच्चे को
तो ये ना सोचता एक गुरू
कि इसने मेहनत नहीं की,
और भी दोषी मानता है स्वयं अपने को गुरू।
बच्चो में हमेंशा प्यार बाँटना
और सहानुभूति से रहना सिखलाता है गुरू,
इसीलिये भगवान के पहले
और माता-पिता के बाद
गुरू को माना जाता है
जीवन का आधार खास।

*****

'हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बने।'
*- **स्वामी विवेकानन्द***

आधुनिक भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति

– **श्रीमती बन्दना सिंह**
स0प्रा0–(शिक्षा संकाय), राठ महाविद्यालय पैठाणी

''आप किसी भी राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति देखकर उस राष्ट्र के हालात को बता सकते हैं'' – पं0 जवाहरलाल नेहरू

किसी भी राष्ट्र के अस्तित्व की परिकल्पना महिलाओं के बगैर नहीं की जा सकती है। कोई भी राष्ट्र अधिक से अधिक समृद्ध व सम्पन्न तभी होगा जब उसमें महिलाओं का योगदान अधिक से अधिक रहेगा। किसी भी राष्ट्र में महिलाएं सभ्यता एवं संस्कृति की प्रतीक होती हैं। मानव सभ्यता की कल्पना महिलाओं से परे नहीं की जा सकती है। किसी भी सभ्य समाज की स्थिति का ज्ञान उस समाज में रह रही स्त्रियों की दशा को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। आज आजादी के सात दशक बाद भी हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है और इसका कारण है, हमारे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के प्रति संकीर्ण मानसिकता, रुढ़िवादी विचारधारा व महिलाओं का अशिक्षित होना या कम पढ़ी–लिखी होना। शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है। शिक्षा सिर्फ हमारा सर्वांगीण विकास ही नहीं करती बल्कि हमें समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों और रुढ़िवादी विचारधाराओं से लड़ने की शक्ति भी प्रदान करती है एवं साथ ही हमें अपने कर्त्तव्यों व अधिकारों के प्रति सचेत भी करती है।

प्रत्येक समाज की संरचना स्त्री एवं पुरुष दोनों के सामूहिक दायित्वों पर आधारित होती है। महिलाएँ सदैव से ही पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाओं की आधार रही हैं। भारतीय समाज में आदिकाल से ही महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था। **मनु स्मृति** में कहा गया है– **यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।** अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इसका अर्थ यह है कि जहाँ महिलाओं का सम्मान होगा, वही सभ्यता एवं संस्कृति सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त करेगी। किसी भी समाज में महिला एक बेटी, बहन, पत्नी व मां के रूप में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान देकर समाज की सभ्यता व संस्कृति को एक नई दिशा प्रदान करती है। समाज में महिलाओं की स्थिति जितनी सशक्त, सुदृढ़ और प्रभावशाली होती है, परिवार समाज व राष्ट्र उतना ही अधिक उन्नत, सभ्य और प्रगतिशील होता है।

स्वामी विवेकानन्द जी के कथनानुसार – **''कोई राष्ट्र तब तक अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता जब तक कि उसका प्रत्येक नागरिक राष्ट्र के विकास में भागीदार नहीं बनता।''**

भारतीय समाज पुरुष प्रधान है और पुरुष प्रधान समाज ने आज भी महिलाओं को दोयम दर्जा ही दिया है। भारतीय ग्रामीण समाज में आज भी महिलाओं की स्थिति दयनीय है। हालाँकि ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति कुछ हद तक ठीक है, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि आज भी देश की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है और वहाँ आज भी महिलाओं को लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज उत्पीड़न, कन्या भ्रूण–हत्या, कुपोषण, सामाजिक असुरक्षा एवं उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। आज भी महिलाएँ शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में पुरुषों की अपेक्षा काफी पिछड़ी हैं, जबकि कानूनी तथा संवैधानिक दृष्टि से महिलाओं को समान अधिकार प्राप्त है। इसके बावजूद भी हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है, इसका मुख्य कारण है – 'महिलाओं का अशिक्षित होना और अपने अधिकार व सम्मान के प्रति सचेत न होना।'

यह हम सबके लिए बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के 74 साल बाद भी हमारे देश में महिलाओं की साक्षरता दर कम है। हमारी केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा समय–समय पर महिलाओं के हित से सम्बन्धित बहुत सारी योजनाएँ चलायी

जाती रही हैं जैसे- बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, CBSC उड़ान योजना, मध्य प्रदेश की लाडली लक्ष्मी योजना, कर्नाटक की भाग्यश्री योजना, उत्तराखण्ड की हमारी कन्या हमारा अभिमान व मोनाल परियोजना (किशोर शक्ति योजना) आदि जिसका मुख्य उद्देश्य समाज की बेटियों और महिलाओं को आगे लाना है और उनका सम्मान व अधिकार दिलाना है। लेकिन फिर भी हमारे समाज में महिलाओं को पुरुषों के बराबर सामाजिक दर्जा प्राप्त नहीं है और उन्हे घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया जाता है।

आज जब हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, भारत विश्व में सुपर पॉवर बनने के लिए तेजी से प्रगतिशील है, आवश्यकता है पुरुष प्रधान समाज को महिलाओं के प्रति अपनी संकीर्ण सोच को बदलने की, रुढ़िवादी विचारधाराओं से बाहर निकलने की, बेटी-बेटा में अन्तर को समाप्त करने की। क्योंकि, अगर समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास करना है तो महिलाएँ जो परिवार समाज व राष्ट्र की प्रगति का आधार हैं, उनकी स्थिति को सुधारना होगा, उनको स्वस्थ, सशक्त व सुदृढ़ बनाना होगा, उनको वह सम्मान और अधिकार देना होगा जिसकी वे अधिकारिणी हैं। तभी देश तरक्की के सर्वोतकृष्टता को प्राप्त कर पायेगा।

''महिलाएँ हैं देश की तरक्की का आधार, उनके प्रति बदलो अपने विचार।''

*****

क्या है ये जिन्दगी

शिवानी ढींगरा
बी0ए0, चर्तुथ सेमेस्टर

अक्सर अकेले में सोचती हूँ मैं कि,
क्या है ये जिन्दगी?
कभी हँसाती तो कभी रूलाती है ये जिन्दगी।
अनेक रूप दिखाती है ये जिन्दगी।।
कभी बेटी, कभी बहू, कभी सास भी कहलाती है ये जिन्दगी।
अपमान के घूँट भी पिलाती है यें जिन्दगी।।
दुनियाँ को हमारी कदर नहीं,
क्या है ये जिन्दगी ?
रोज नया कुछ सिखाती है ये जिन्दगी।
रोज नई कहानी बनाती है ये जिन्दगी ।।
अक्सर अकेले में सोचती हूँ मैं कि,
क्या है ये जिन्दगी?
कभी अपनो के पास तो कभी अपनो से दूर ले
जाती है ये जिन्दगी।।
कभी सुख तो कभी दुख दे जाती है ये जिन्दगी।
कभी ना भरने वाले जख्म दे जाती है ये जिन्दगी।।
डरती हूँ कभी-कभी खो ना दूँ अपनो को पर समझ,
में नहीं आता क्या है यें जिन्दगी?
अक्सर अकेले में सोचती हूँ मैं कि,
क्या है ये जिन्दगी ?
क्या है ये जिन्दगाी ?

*****

'दर्शन बोध क्रिया का विज्ञान और उसकी आलोचना है' - ***कांट***

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

- **अजय सिंह**
बी0ए0, पंचम सेमेस्टर

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' महिला एंव बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय एंव मानव संसाधन विकास का एक संयुक्त पहल के रूप में सम्बन्धित और अभिसरित प्रयासों के अर्न्तगत बालिकाओं को संरक्षण और सशक्त करने के लिये 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना की शुरूआत 22 जनवरी 2015 को की गई है ।

इसे निम्न लिंगानुपात वाले 100 जिलों में प्रारम्भ किया गया है। सभी राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को कवर करते हुए 2011 की जनगणना के अनुसार निम्न बाल लिंगानुपात के आधार पर प्रत्येक राज्य में कम से कम एक जिले के साथ 100 जिलों का एक पायलट जिले के रूप में चयन किया गया है।

रणनीतियाँ :-

1. बालिका और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक आंदोलन और समान मूल्य को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान का कार्यान्वयन करना ।
2. इस मुद्दे को सार्वजनिक विमर्श का विषय बनाना और उसे संशोधित करते रहना।
3. निम्न लिंगानुपात वाले जिलों की पहचान पर ध्यान देते हुए गहन और एकीकृत कार्यवाही करना।
4. सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्थानीय महिला संगठनों एवं युवाओं की सहभागिता लेते हुये पंचायती राज संस्थाओं, स्थानीय निकायों और जमीनी स्तर पर जुड़े कार्यकर्ताओं को प्रेरित एंव प्रशिक्षित करते हुए सामाजिक परिवर्तन के प्रेरक की भूमिका में ढालना, जिला /ब्लॉक /जमीनी स्तर पर अंतर -क्षेत्रीय और अंतर-संस्थागत समायोजन को सक्षम करना ।
5. देशव्यापी अभियान 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' शुरू करने के साथ यह कायक्रम प्रारम्भ होगा, जिसमें बालिका के जन्म को जश्न के रूप में मनाने के साथ उसे शिक्षा ग्रहण करने में सक्षम बनाया जाएगा।
6. अभियान का उद्देश्य लड़कियों का जन्म पोषण और शिक्षा बिना किसी भेदभाव के हो और समान अधिकारों के साथ वे देश की सशक्त नागरिक बनें ।

सुकन्या समृद्धि योजना :-

बेटी बचाओ योजना के अंतर्गत सुकन्या समृद्धि योजना सबसे मुख्य घटक है, जिसमें कन्या भ्रूण हत्या निषेध और बालिकाओं को फाइनेंसियल मदद मिलेगी ।

सुकन्या योजना के तहत छोटी बच्चियों के लिए एक खाता खोला जाता है। जो कि छोटी बच्चियों के लिए खोला जाता है। यहाँ उनके माता-पिता या अभिभावक अपनी बेटियों के लिए पैसे की बचत करते हैं। जिसका उपयोग उनकी शिक्षा एवं शादी के लिए किया जाता है। इस खाते में कोई टैक्स की अवधि नहीं है यह उनके परिवार की वित्तीय स्थिति को सुधारने में मदद करेगा ।

पैसे की निकासी :-

इस योजना के तहत बेटियों के माता -पिता उनके नाम से पैसा जमा कर सकते हैं। और इसे वे लड़की की 21 साल तक की उम्र तक जारी रख सकते है। जैसे ही लड़की की उम्र 21 वर्ष होगी या यदि वह 18 से 25 साल तक की उम्र के बीच में

शादी करने का फैसला लेती है तो यह फण्ड परिपक्व हो जायेगा और यह फण्ड स्वत: खाते में पहुँच जायेगा। केवल लड़की ही इस खाते से पैसे निकाल सकेगी।

योजना की देख-रेख :-

इस योजना की शुरूआत केन्द्रीय सरकार द्वारा की गई है लेकिन इसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का भी संयुक्त रूप से समर्थन प्राप्त है। ताकि कन्या भ्रूण हत्या जैसे गुनाह समाप्त हों और संतुलित एवं शिक्षित समाज को बढ़ावा दिया जा सके।

योजना के चरण :-

पहला चरण - यह अभियान राष्ट्रीय, राज्य एंव जिला स्तर पर आयोजित किया गया है। शुरूआत में इसे देश के चुने गए 100 जिलों में शुरू किया गया था ।

दूसरा चरण - इस योजना के दूसरे चरण में 11 राज्यों एंव केन्द्रशासित प्रदेशों के 61 और जिलों को इसमें शामिल किया गया हैं।

इस योजना का पैन इंडिया विस्तार - इस योजना को प्रधानमंत्री जी ने, इस साल के अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर पैन इंडिया विस्तार प्रदान किया है। अब इस योजना को पूरे देश के सभी 600 जिलों में लागू किया जाना है।

योजना के लिए आवेदन :-

इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिये उम्मीदवारों के माता-पिता या अभिभावक को सबसे पहले सुकन्या समृद्धि योजना के तहत अपनी बेटी के नाम से अकांउट खुलवाने के लिए सहायक बैंक अथवा पोस्ट ऑफिस से संपर्क करना होता है। सहायक बैंक अकांउट में अकांउट खोलने के लिए फॉर्म में पूछी जाने वाली सभी जानकारी को सही-सही भरकर एवं सभी आवश्यक दस्तावेजों को इसमें अटैच कर जमा करना होता है। और इस तरह से आपका अकांउट खुल जाता है ।

इस योजना के माध्यम से सरकार समाज को विकसित करना चाहती हैं। ताकि अन्य देशों की तरह हमारा देश भी संतुलित एंव सम्पन्न हो। यह योजना बेटियों की सुरक्षा एवं शिक्षा को बढ़ावा भी देती है, जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल हो सकें।

योजना के लिए आवश्यक दस्तावेज :-

आवासीय प्रमाण पत्र- इस योजना का लाभ भारतीय नागरिकों को दिया जाना है। इसलिए प्रत्येक आवेदकों को उनका आवासीय प्रमाण पत्र देना आवश्यक है।

बच्ची का जन्म प्रमाण पत्र- इस योजना को 10 साल तक की छोटी बच्चियों के लिए शुरू किया गया है। इसके लिए उनका जन्म प्रमाण पत्र भी जमा करना आवश्यक है। योजना में कोई भी धोखाधड़ी न हो इसके लिए प्रत्येक उम्मीदवार के माता-पिता या अभिभावक को उनके पहचान का प्रमाण देना जरूरी होता है ।

*****

'वास्तविक शिक्षा वह है जो उपयोगी वस्तुओं की वास्तविक प्रकृति को जानने और उनके उपयोग करने और उनसे वास्तविक जीवन की रक्षा करने में सहायता करती है'

- रविन्द्रनाथ टैगोर

कुछ रह तो नही गया

– रोहित पाण्डेय
बी0पी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

अत्यधिक छोटे बच्चे को बाई के पास रखकर नौकरी पर जाने
वाली माँ ने पूछा....
कुछ रह तो नही गया? पर्स, चाबी सब ले लिया ना ?
अब वो कैसे हाँ कहे,
पैसे के पीछे भागते–भागते सब पाने की चाह में जिसके लिए
सब कुछ कर रही है वह ही रह गया।
शादी में दुल्हन को विदा करते ही कमरे को ठीक
करते हुए दुल्हन की बुआ ने पूछा... भैय्या कुछ रह तो
नहीं गया ना।
पिता दुल्हन के कमरे में गया तो वहाँ कुछ फूल सूखे पड़े थे।
सब कुछ तो पीछे रह गया..... 25 साल जो नाम लेकर
जिसको आवाज देता लाड से....... वो ही नाम पीछे रह गया।
भैय्या देखो, कुछ पीछे तो नहीं रह गया? आँसू छुपाते
पिता मुँह से नहीं बोले पर दिल से यही कहा........
सब कुछ तो यहीं रह गया.......
श्मशान से लौटते हुए किसी ने पूछा कुछ रहा तो नहीं ?
नहीं कहते हुए वो आगे बढ़ा.........
एक बार पीछे मुड़कर देखा........ चिता की सुलगती आग देखकर
मन भर गया भागते हुए गया, जलते हुए चेहरे की झलक
तलाशनें की असफल कोशिश की और वापस लौट आया। दोस्त ने पूछा,
कुछ रह गया था क्या? भरी आँखो से बोला...... नहीं कुछ भी नहीं रहा
अब......... और जो कुछ भी रह गया है, वह सदा मेरे साथ रहेगा।
जिन्दगी की इस भाग दौड़ भरी दुनिया में एक बार समय निकालकर
सोचे शायद ख्वाहिश को पाने की चाहत में रिश्तों की नजदिकीयों
की राह में आज को भुला आने वाले कल की चाहत में पाया जो है,
उसे छोड़ नए किसी के आने की राह में कही कुछ रह तो नहीं गया?

*****

'True education consists in knowing the use of any useful material that has been collected, to know its real nature and to build along with life a real shelter for life' ***- Ravindranath Tagore***

पंचेश्वर घाटी की यादें

- डॉ0 बीरेन्द्र चन्द
असि0प्रो0- रक्षा एवं स्त्रा0 अध्ययन, राठ महाविद्यालय पैठाणी

पाँच नदियों के संगम स्थल पर पिथौरागढ़ एवं चम्पावत जनपदों के मध्य भारत–नेपाल सीमा पर पंचेश्वर में प्रस्तावित महाकाली बाँध परियोजना के शुरू होने की सम्भावना के साथ ही लगभग 240 गाँव कुछ प्रमुख कस्बे और सैकड़ों हेक्टेयर कृषि भूमि जलमग्न हो जाएगी। एक लाख से अधिक लोग विस्थापन की त्रासदी झेलने को मजबूर होंगे। भारत में काली नदी, नेपाल में महाकाली एक ही नदी का नाम है। भारत–नेपाल सीमा पर एशिया की इस सबसे बड़ी परियोजना से 6480 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर महाकाली में दोनों देशों के बीच जो 230 किमी0 लम्बी रेखा खीची गई है, जिसमें बाँध बनना है उसने एक बार फिर हलचल पैदा कर दी है। इस परियोजना के अन्तर्गत पंचेश्वर क्षेत्र में केवल एक ही बाँध प्रस्तावित नहीं है बल्कि दो और छोटे–छोटे बाँध भी प्रस्तावित हैं। मुख्य बाँध महाकाली और सरयू के संगम पंचेश्वर में प्रस्तावित है। दूसरा मंच तामली (चम्पावत) के नजदीक रूपालीगड़ में और तीसरा पूर्णागिरि के नजदीक बूम में महाकाली और उसकी सहायक नदियों के किनारे बसे करीब 240 गाँव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होंगे। बाँध से विस्थापन की बहुत बड़ी त्रासदी भी झेलनी होगी।

उद्देश्य :- पिथौरागढ़ एंव चम्पावत जनपदों के मध्य भारत–नेपाल सीमा पर पंचेश्वर में महाकाली बाँध के सर्वेक्षण एंव डीपीआर तैयार करने में ही अर्द्धसदी गुजर गई है। इस बाँध के प्रस्ताव की बुनियाद दरअसल भारत की आजादी से पूर्व ही ब्रिटिश शासकों के दिमाग में तैयार हो चुकी थी।

परियोजना का काम जल्द ही शुरू होने की सम्भावना है। इसलिए विस्थापितों की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना पूरे क्षेत्र के मठ, मन्दिर, पौराणिक धरोहर, गाड़–गदोरों, गलितों को काटकर बनाई गयी है, वह सब डूब जायेगी। नेपाल के वेतड़ी, डणेलधूरा दार्चुला जिले के सीमावर्ती गाँव की संस्कृति हमेशा के लिए विलुप्त हो जायेगी। रोटी–बेटी का रिश्ता हमेशा के लिए बिछड़ जाएगा। त्यौहारों में पकने वाले पकवान चावल के आटे की रोटी 'माणा', चावल के आटे की जलेबी, 'सेल' च्यूरॉ, जिसके तेल से वनस्पति घी निकलता है, उससे बनने वाले पकवान यह सब उसी घाटी में पाये जाते हैं ।

आराध्य कुल देवी–देवताओं का इतिहास, झोड़ा खेल, हाथबन्द, चॉचरी, छपेली आदि पूरी घाटी की एक परम्परा है। इस घाटी की सभी परम्पराओं, रीति–रिवाजों, संस्कृति, बोली, भाषा, गाँवों, मन्दिरों, खेत–खलिहानों आदि हर एक चीज का बारीकी से इतिहास लिखना, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी करना जरूरी हैं। क्योंकि आने वाले भविष्य के लिए यह इतिहास बन जायेगा। कुछ क्षेत्रों को पूर्ण डूब क्षेत्र में एवं कुछ क्षेत्रों को आंशिक डूब क्षेत्र में रखा जाता हैं। जो क्षेत्र पूर्ण डूब क्षेत्र है वहाँ के लोगों को जल्दी से विस्थापित कर दिया जाता है और जो आंशिक डूब क्षेत्र है वहाँ से विस्थापन धीरे–धीरे होता है।

बाँध को बनाने के लिए किसी जगह से पत्थर तो किसी जगह से मिटटी लाकर बाँध का निर्माण किया जाता है। इससे उस जगह की जनता या गाँव वालों का जीना दुश्वार हो जाता है। उस क्षेत्र में तमाम तरह की समस्याएँ आती हैं। किसी के गाँव के रास्ते में बैरियर लग जायेगा, कोई गाँव दरकने लगेंगे क्योंकि टनल बनाने के लिए विस्फोट करना पड़ता है। इसके लिए गोदाम भी बनाने पड़ते हैं जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा में भी विवाद उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जायेगी। अतः सभी बिन्दुओं का अध्ययन करना जरूरी हैं। आज भी टिहरी बाँध बनने के बाद रैली या अनशन, बाजारबन्दी जैसे दृश्य देखे जाते हैं। कुछ ऐसा ही हिमालय प्रदेश में विस्थापितों के साथ हो रहा हैं। नर्मदा बाँध के विस्थापितों का हक दिलाने की लड़ाई श्रीमती मेधा पाटेकर लड़ रही हैं। पूरा पंचेश्वर क्षेत्र आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, सड़क से कोसों दूर है। विस्थापन करने में भी बहुत कठिनाई आयेगी इसलिए इन सभी बिन्दुओं का अध्ययन किया जाना बहुत जरूरी हैं ।

एक मिथक यह भी हैं- घाटी के निवासी अपने सिंचित भूमि, बाग-बगीचों को छोड़ना हरगिज नहीं चाहेंगे। स्थानीय लोगों को अपने आराध्य देवी-देवताओं पर अटूट विश्वास है और वे मानते हैं कि बाँध तो बनेगा नहीं क्योंकि बाँध के प्रस्ताव को लगभग एक सदी बीत चुकी है। वह अभी तक नहीं बना तो अब क्या बनेगा? काली सरयू पार 'चौमू भगवान' किसी भी सूरत में बाँध बनने नहीं देगा। लेकिन सरकार द्वारा घाटी में सड़क पहुँचाने का कार्य युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। नेपाल की तरफ से और भारत की तरफ से भी टनकपुर तक रेल लाईन का विस्तार डबल लाईन के रूप में हो गया है। क्षेत्रीय लोग कह रहे हैं कि इस बहाने सड़क पहुँच रही हैं और क्षेत्र का विकास हो रहा है। सरकार अपना कार्य कर रही है उसे करने दो लेकिन बाँध नहीं बनेगा यह निश्चित है।

*****

जीना सीख गई हूँ

- पूनम नेगी
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

चली है जिन्दगी इतनी रफतार से
कि अब तो में रूकना भूल गई हूँ।
तन्हा रही हूँ इतने अर्सो तक
कि अब तो मैं खुद के ही एहसासों
से लिपटना भूल गई हूँ।
किस्मत ने आजमाया है मुझे इतना
कि अब तो मैं भी कुछ हद तक
अपनी किस्मत को आजमाना सीख गई हूँ।
ऐ जिन्दगी बहुत कुछ भूल गई हूँ मैं,
मगर तुझे जीना नही भूली।
रोयी हैं मेरी आँखें इतनी
कि अब लाख लतीफे सुना जाए कोई
तो मैं खुशी के आँसू तक
छलकाना भूल गई हूँ।
भले ही मुस्कुराना तक भूल गई हूँ मगर
ऐ जिन्दगी, मैं तुझे जीना सीख गई हूँ।

*****

इन्सानियत

- अमित
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते हैं
पराया दर्द जो अपनायें उसे भगवान कहते हैं।
कभी सुख है कभी दुख है इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किलों से न घबराये उसे इन्सान कहते हैं,
ये दुनियाँ एक उलझन है कही धोखा कही ठोकर है।
जो गिरकर फिर संभल जाये उसे इन्सान कहते हैं।
अगर गलती रूलाती है तो ये राह भी दिखाती है
जो गलती करके पछताये उसे इन्सान कहते हैं।
यों भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं
जो मिल-बांट कर खाये उसे इन्सान कहते हैं।

*****

राठ क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी : माँ बूँखाल कालीका

- वैभव नेगी
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।

उत्तराखण्ड के पौड़ी जिले के थैलीसैण विकासखण्ड के बूँखाल गाँव में बूँखाल कालिका का भव्य मंदिर स्थित है। माँ काली आस-पास के गाँवों से मिलकर बने समस्त राठ क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी हैं। राठ क्षैत्र के मुख्य गाँव नलई, बूँखाल, गोदा, चोपड़ा, बहेड़ी, मरगाँव, छोईया, पैठाणी आदि है। माँ के प्रति समस्त राठ क्षेत्रवासियों की अटूट श्रद्धा, आस्था व विश्वास है। उत्तराखंड में वर्षभर होने वाले मेलों में बूँखाल मेले का विशिष्ट स्थान है। कोई प्रमाणिक इतिहास न होने के कारण बताया जाता है कि यह मन्दिर करीब 1800 ई0 में बनाया गया था। पहले मन्दिर का निर्माण पत्थरों द्वारा किया गया था। वर्तमान में मंदिर को आधुनिक रूप दिया जा चुका है। जनश्रुतियों के अनुसार कई वर्ष पहले की बात है, राठ क्षेत्र के चोपड़ा गाँव के एक परिवार में एक कन्या का जन्म हुआ। वह अपने माता पिता की लाडली कन्या थी। उस समय बाल विवाह का प्रचलन था। इसलिये उस कन्या के थोड़े बड़े होने पर नलई गाँव में शादी तय कर दी गई। एक दिन वह कन्या अपने दोस्तों के साथ खेल-खेल में एक गड्ढे में गिर गई तो किसी दोस्त ने गड्ढे के ऊपर पत्थर की पठाल रख दी इस कारण से दम घुटने से उस कन्या की मृत्यु हो गई।

रात तक बालिका का इंतजार किया गया। उसे खोजने के प्रयास किये गये परन्तु वह नही मिली। उस रात वह कन्या अपने माता-पिता के स्वप्न में आई और बोली कि मुझे ढूँढने का प्रयास मत करना मैं काली का रूप धारण कर चुकी हूँ। कहते ही कहते उसके हजारों हाथ व कई सिर हो गए। तब से लेकर आज तक वह कन्या बूँखाल काली के नाम से जानी जाती हैं। यहाँ के लोगों का इस दैवीय शक्ति पर विश्वास इतना हैं कि माँ अपने सच्चे भक्तों की मनोकामना पूर्ण करती हैं तथा उन्हे, स्वप्न में आशीश देकर सुख सम्पन्नता का वरदान देती हैं। दिसम्बर माह में बूँखाल मन्दिर में भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमे हजारों की संख्या मे भीड़ उमड़ती हैं। लगभग तीन दिन पहले से इस मेले के आयोजन की तैयारी शुरू हो जाती है। पहले यहाँ बलि प्रथा का विशेष महत्व था, जिसे काली का प्रसाद माना जाता था। लेकिन समय के साथ-साथ परिस्थितियाँ बदली है। आज माँ को केवल नारियल प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। राठ महाविद्यालय का छात्र होने के नाते मुझे वर्ष 2018 के बूँखाल मेले में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, ऐसे पुनीत शक्तिपीठ को मैं बारम्बार हृदय की गहराईयों से प्रणाम करता हूँ।

*****

'Education is the development of all those capacities in the individual which will enable him to control his environment and fulfill his possibilities.'
- John Dewey

मानव संसाधनों के निमार्ण में शिक्षा की भूमिका

- श्री अरविन्द कुमार

असि0प्रो0- (बी0एड0 विभाग), राठ महाविद्यालय पैठाणी

शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा छात्र-छात्राओं में नवीन ज्ञान, कला, कौशलों का विकास किया जाता है। महात्मा गाँधी जी के अनुसार 'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के सर्वागीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।' जे0एस0 मैकेन्जी के अनुसार 'शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव के द्वारा इसका विकास होता है।' शिक्षा मानव के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए अति महत्वपूर्ण कार्य करती है। तथा यह व्यक्ति के जन्म से प्रारम्भ होकर जीवनपर्यन्त चलती रहती है। देश के आर्थिक विकास में विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों का होना आवश्यक है, जिनसे देश की आवश्यकताओं के अनुसार उत्पादों को तैयार किया जा सकता है। प्रकृति प्रदत्त संसाधनों को उपयोगी बनाने में मानव अपने ज्ञान और कौशलों का उपयोग कर उत्पादों को बनाता है। साथ ही देश की प्रशासनिक और राजनीतिक एंव अन्य क्रियाकलापों को करने के लिए कार्यकुशल नागरिकों की आवश्यकता होती है। अर्थात देश में सभी नागरिक विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को करके अपनी व समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, जिनको कि मानवीय संसाधन कहा जाता है।

किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अच्छी शिक्षा व्यवस्था योग्य नागरिकों का सृजन करती है। विश्व के विकसित देशों के विकास में वहाँ की शिक्षा व्यवस्था के योगदान को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिसमें कि वे अपने देश की आवश्यकताओं व सामाजिक परिवर्तन के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था को बनाने में सफल हुए हैं। परिणामस्वरूप जितने भी आविष्कार हम वर्तमान समय में देखते हैं उनमें इन विकसित देशों का प्रतिशत अधिक मिलेगा। भारत में भी आधुनिक शिक्षा का व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ है, जिसके कारण हम विकासशील देशों की श्रेणी तक आने में सफल हुए हैं। स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न शिक्षा आयोग जैसे विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, माध्यमिक शिक्षा आयोग, कोठारी आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 आदि ने देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का अध्यन कर सुझाव दिये हैं। तत्कालीन सरकारों के द्वारा इनके क्रियान्वयन का प्रयास किया गया।

आधुनिक विकासशील भारत की आर्थिक व सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में भी व्यापक आवश्यक परिवर्तन की आवश्यकता है। वर्तमान में अधिकतर विद्यालयों की शिक्षा में सैद्धान्तिक ज्ञान व ज्ञान को रटने पर बल दिया जाता है और प्रयोगात्मक ज्ञान की कमी दिखाई देती है। इस प्रकार से हम समाज को शिक्षित तो कर सकते हैं पर नवीन ज्ञान व आविष्कारों को करने योग्य नागरिकों का सृजन नहीं कर सकते हैं न ही कार्यकुशल व्यक्तियों को तैयार कर सकते हैं। देश के महानगरों व शहरों में आर्थिक रूप से सम्पन्न लोगों के बच्चों को तो अच्छी शिक्षा प्राप्त हो जाती है पर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में हमें अनेक कमियाँ दिखाई देती हैं। ऐसी स्थिति में हम अच्छे मानव संसाधनों का विकास करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। देश के विकास में सभी नागरिकों का योगदान होता है। चाहे वे देश के किसी भी क्षेत्र विशेष में रहते हों।

वर्तमान समय में ऐसी शिक्षा व्यवस्था को बनाने की आवश्यकता है, जो कि छात्र-छात्राओं को सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान कर सके, जिससे कि वे भावी जीवन में कार्यकुशल बन सकेंगे और प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तर के आर्थिकी व अन्य क्रियाकलापों में सफलता प्राप्त करेंगे। आधुनिक तकनीकी का प्रयोग वर्तमान समय में व्यापक रूप से किया जा रहा है, जिसमें कि छात्र-छात्राओं की रूचि होती है। कक्षा शिक्षण में तकनीकी ज्ञान के प्रयोग पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। छात्र-छात्राओं में वैज्ञानिक, तार्किक एंव सृजनात्मक चिन्तन का विकास करने की भी अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है, जिससे कि उनमें नवीन ज्ञान व आविष्कारों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होगी। सामाजिक गुणों के विकास के लिए विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक व खेल की क्रियाओं को रूचि के अनुसार करने के अवसर प्राप्त होने चाहिए। शिक्षण प्रशिक्षण में भी विषेश ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षण प्रक्रिया के सैद्धान्तिक व व्यवहारिक ज्ञान के साथ ही समाज व देश पर शिक्षा प्रक्रिया के प्रभाव का अध्यन की भी आवश्यकता है। वर्तमान समय में भी शिक्षण प्रशिक्षण में व्यापक परिवर्तन किया गया है। वर्तमान में प्रस्तावित शिक्षा नीति 2020 में भी सरकार के द्वारा व्यापक परिवर्तन किया जा रहा है और शिक्षा के द्वारा देश के लिए आवश्यक विभिन्न कौशलों का प्रयोगात्मक व व्यवहारिक ज्ञान छात्र-छात्राओं को प्रदान करने पर बल दिये जाने को कहा गया है।

*****

भारत में नारी विकास के बदलते आयाम : महिला खिलाड़ियों के विशेष संदर्भ में

– **डॉ0 गोपेश कुमार सिंह**

विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी

शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा को पूजने वाला राष्ट्र भारत प्राचीन काल से ही मातृ-शक्ति को नमन करता रहा है। भृगु स्मृति में विशेष रूप से स्त्रियों की शिक्षा और उनके वेदाध्ययन का उल्लेख मिलता है। ऐसा नहीं कि यह केवल भारत तक ही सीमित था। नाइजेरिया के अका संस्कृति में महिला अपने बल पर शिकार करती थी। इजिप्ट में क्लियोपेत्रा जैसी प्रसिद्ध महिला शासिका थी। भारतीय परिदृश्य में भी गार्गी, मैत्रेयी, जीजाबाई, लक्ष्मीबाई आदि महिलाओं ने समाज में अपनी अमिट छाप छोड़ने का कार्य किया।

समय, काल एवं परिस्थितियों के बदलाव के फलस्वरूप महिलाओं पर अंकुश लगाने का दौर भी चला, जो उनके परिवार, कुटुम्ब और समाज द्वारा लगाया गया। अक्सायी चीन में बेटियों को अपने बाप-दादा की आज्ञा का पालन, पत्नियों को अपने पति और विधवाओं को अपने बेटों की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। भारत जैसे राष्ट्र में भी महिलाओं की स्थिति में गिरावट आती गयी, लेकिन बीज को तो थोड़ी मिट्टी और हवा की आवश्यकता होती है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी अपने प्रखर भाव से मिट्टी का सीना चीरते हुए अंकुरित होता है और एक वृक्ष का रूप ले लेता है।

महात्मा गाँधी जी के अनुसार स्त्रियाँ किसी भी राष्ट्र की आधारशिला होती हैं। किसी राष्ट्र की उन्नति में महिलाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। प्रत्येक कालखण्ड में नारियों ने आसुरी शक्तियों से लोहा लेते हुए अपने को प्रतिस्थापित ही किया है। भारतीय सन्दर्भ में पी0टी0 ऊषा, कर्णम मलेश्वरी, सिंधू, साक्षी और दीपा जैसी खिलाड़ी महिलाओं ने अपने को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करते हुए राष्ट्र का गौरव बढ़ाने का कार्य किया है।

हरियाणा जैसे राज्य, जहाँ का लिंगानुपात 1000 : 879 है, ऐसे राज्य से गीता, बबीता और साक्षी जैसी महिला पहलवानों का मिलना यह बताता है कि अगर मन में जीतने की जिद हो तो किसी भी सपने को हकीकत में बदला जा सकता है।

मदर टेरेसा के शब्दों में, यदि कोई व्यक्ति जुनून और समर्पण के साथ काम करता रहे, तो हर परिस्थिति से उबरकर सफलता हासिल कर सकता है। आज महिलाएँ अब अपने हिजाब को उतारकर फुटबॉल खेल रही हैं। कश्मीर में भी खिलाड़ी महिलाएँ नादिया निगहत, साक्षी, सिंधू और दीपा बनने की ओर अग्रसर है। महिलाओं की ऊर्जा, जोश व जुनून ने मूर्धन्य पहलवानों के मुँह पर तमाचा मारने का कार्य किया है। उन्होंने यह बता दिया है कि कलम से खिलाड़ी पैदा नहीं होते है और न ही खिलाड़ी रातों-रात तैयार होते हैं।

ऐसी विषम परिस्थितियों में जहाँ खेल-संस्कृति का अभाव हो, जिस देश को अनेकों वर्षो तक गुलामी की जंजीरो में जकड़ा गया हो, जिसे पुरूष प्रधान देश माना जाता हो और जिस देश में शोभा डे जैसी विद्योत्तमा मौजूद हो ऐसे में विश्व पटल पर राष्ट्र ध्वज को लहराते हुए साक्षी, सिंधू और दीपा ने खेल जगत की लाज नहीं बचाई होती तो रियो ओलम्पिक में भारत के प्रदर्शन पर रूदन का स्वर और अधिक ऊँचा होता।

अब वक्त आ गया है कि केन्द्र सरकार अपने देश के खेल संघो को आधुनिकता का जामा पहनाते हुए खेल संघो में खिलाड़ी महिलाओं की जिम्मेदारी भी तय करें। महिलाओं को केवल ब्रांड एम्बेस्डर बना देने से बात नहीं बनेगी। उन्हें खेलों को सुधारने के लिए हो रहे प्रयास में भी सक्रिय भागीदारी देनी होगी तभी अधिकाधिक महिलाएँ खेलों के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकेंगी।

आज नारी शक्ति को पुनः अपने मन को एकाग्र करना होगा। आडम्बर की बेड़ियों को अपने सामुहिक प्रयास से तोड़ने का प्रयत्न करना होगा। इन प्रयासों में पूरे समाज को अपना अमूल्य योगदान भी देना होगा, क्योकि किसी बगीचे को खूबसूरत बनाने में अच्छे बीज, खाद, पानी एवं उसको संरक्षण देने वाले माली की आवश्यकता होती है तभी भारत में नारी विकास के बदलते आयाम को और अधिक मजबूत किया जा सकता है।

यह उथल-पुथल उत्ताल लहर, पथ से न डिगाने पायेगी।
पतवार चलाते जायेंगे, मंजिल आयेगी-आयेगी।।

****

कन्या भ्रूण हत्या

- रचना नेगी
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः''

हमारे देश में कहा जाता है कि 'जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।' लेकिन जब कन्या भ्रूण हत्या जैसे आँकड़ें सामने आते है तो यह बातें निरर्थक व झूठ के अलावा कुछ नहीं लगती है।

कन्या भ्रूण हत्या :- माँ के गर्भ मे पल रहे बच्चे का लिंग परीक्षण करके लड़की होने पर गर्भ में ही उसे मार डालना। कहने को हम 21वीं सदी में रहते हैं लेकिन मॉडर्न साइंस के अनमोल आविष्कारों का जिस प्रकार से दुरुपयोग हमारी सोच ने किया है वह अत्यन्त घृणित है ।

यह सिलसिला करीब 2-3 दशकों से शुरू हुआ जब अल्ट्रासाउंड तकनीकी का अविष्कार हुआ। इसका आविष्कार माँ के गर्भ मे पल रहे बच्चे के स्वास्थ्य परीक्षण के लिये हुआ। लेकिन घृणित सोच व कुविचार ने इसका उपयोग कन्या भ्रूण हत्या के लिये किया। कन्या भ्रूण हत्या केवल गरीब के घर में पनपता कीड़ा नहीं है अपितु शिक्षित अमीर लोगों की संक्रमित मानसिकता का परिणाम भी है। कन्या भ्रूण हत्या लड़कियों को उपभोक्ता और लड़कों को उत्पाद मानने का परिणाम है। दहेज जैसी कुप्रथा भी इस समस्या का मूल कारण माना जाता है।

सरकार के द्वारा भी इस दिशा में अनेक कदम उठाये गये है। पहली बार कन्या भ्रूण हत्या कानून का उल्लंघन करने पर 5 साल की सजा 50000 रुपये जुर्माना तथा दूसरी बार ऐसा करने पर 5 साल की सजा 100000 रुपये जुर्माना, मेडिकल लाईसेंस रद्द करने का प्रावधान है। बालिका बचाओ योजना में भी भ्रूण हत्या को रोकने के लिये रोडमैप तैयार कर शिशुओं की परवरिश व शिक्षा का खर्च उठाने आदि के प्रयास किये गये हैं। लेकिन ये प्रर्याप्त नहीं हैं। इन सब प्रयासों के बावजूद कन्या भ्रूण हत्या के आँकड़ें चौकाने वाले हैं।

आँकड़ों के अनुसार -

1. 1961 में 102.4 पुरूष पर 100 महिलायें थीं।
2. 1981 में 104.1 पुरूष पर 100 महिलायें थीं।
3. 2001 में 107.7 पुरूष पर 100 महिलायें थीं।
4. 2011 में 108.8 पुरूष पर 100 महिलायें थीं।

ये आँकड़ें चिन्ताजनक हैं और ये बताते हैं कि हमारा समाज अंधेरे कोने में जा रहा है। सयुंक्त राष्ट्र ने भी वक्तव्य जारी किया है कि भारत में बढ़ती कन्या भ्रूण हत्या चिन्ता का विषय है, जो देश में कई तरह के जुर्म को जन्म देगा। बाल विवाह, बाल अत्याचार जैसी समस्यायें उत्पन्न होंगी। इसके अलावा स्कूल, कॉलेज व समाज को इससे पनपने वाले खतरों के बारे में बताकर जागरूक करना होगा ।

हर एक को स्वयं ही ऐसी सोच का अन्त करके अपने परिवार, गाँव, समाज में आवाज उठानी होगी क्योंकि कहीं न कहीं हम भी आज तक इस विचारधारा से जकड़े हुए हैं। हमारे घर, परिवार, समाज में आज भी वंश बढ़ाने जैसी परम्परा के कारण इस सोच को बढ़ावा मिला है। इसलिये हमें अपनी आने वाली पीढ़ी की सोच बदलनी होगी। नि:सदेह शिक्षा ही इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है ।

*****

नई शिक्षा नीति 2020 की समीक्षा

- डॉ0 अखिलेश कुमार सिंह
सह0प्रा0- बी0एड0, राठ महाविद्यालय पैठाणी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की नई शिक्षा नीति है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। सन् 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में पहला नया परिवर्तन है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के0 कस्तूरीरंगन को अध्यक्षता वाली समीति की रिर्पोट पर आधारित है। प्रमुख बातें निम्न हैं-

1. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 100% लाने का लक्ष्य रखा गया है।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6% हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।
4- पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा में मातृ भाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रुप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही मातृ भाषा को कक्षा-8 और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
5. देश भर के उच्चशिक्षा संस्थानो के लिये ''भारतीय उच्च शिक्षा परिषद'' नामक एक एकल नियामक की परिकल्पना की गई है।
6. स्कूलो में 10+2+3 फार्मेट के स्थान पर 5+3+3+4 फार्मेट को शामिल किया जायेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षको के प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। व्याापक सुधार के लिये शिक्षक प्रशिक्षण और सभी शिक्षा कार्यक्रमों को विश्व विद्यालय या कॉलेज के स्तर पर शामिल करने की सिफारिश की गई है। शिक्षण के माध्यम के रुप में पहली से पांचवी तक मातृ भाषा का इस्तेमाल किया जायेगा। इसमें रटंत विद्या को खत्म करने की भी कोशिश की गयी है, जिसको मौजूदा व्यवस्था की बड़ी खामी माना जाता है। किसी कारणवश विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच में ही कोर्स छोड़ के चले जाते हैं। ऐसा करने पर उन्हें कुछ नहीं मिलता एवं उन्हें डिग्री के लिये दोबारा से नई शुरुआत करनी पड़ती है। नई नीति में पहले वर्ष मे कोर्स को छोड़ने पर प्रमाणपत्र दूसरे वर्ष मे छोड़ने पर डिप्लोमा एंव अंतिम वर्ष में छोड़ने पर डिग्री देने का प्रावधान है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा के उपरान्त बुद्धिजीवियों, आम जनता एंव शिक्षा जगत में मिली-जुली प्रतिक्रिया रही। वहीं मुख्यता इसमें घोषित बदलावों का स्वागत किया गया है। लेकिन इसके कई लक्ष्य के पूरा होने पर संदेह व्यक्त किया गया। शिक्षा पर जीडीपी का 6% खर्च करने का लक्ष्य बहुत ही पुराना है, जिसे फिर से दोहराया गया है।

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान एवं लोकसभा सांसद शशि थरुर का कहना है कि ''इस नीति में रखे कई लक्ष्य ऐसे है, जिनकी पूर्ण होने की संभावना कम हैं''।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संगठन डुटा (DUTA) ने इसकी कड़ी आलोचना करते हुये इसे आपत्तिजनक माना है, जिसका कहना है कि इसके द्वारा विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता को बोर्ड ऑफ गवर्नर के जिम्में झोंक देना अनुचित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कुछ ऐसी घोषणाएँ भी कर दी गई हैं जिनकों अमल में लाना सम्भव प्रतीत नहीं होता है। उदाहरण के लिये इसमे शिक्षा पर जी0डी0पी0 का 6% खर्च करने की बात है, जो आजादी के बाद से लगातार दोहराई जाती रही है। बहरहाल व्यापक बदलाव की उम्मीद जगाती नयी शिक्षा नीति अमल की कसौटियों पर कितना खरा उतरती है, यह देखने के

*****

शिक्षा में निवेश सर्वाधिक प्रतिफल

– प्रदीप चन्द्र गौड़
बी0एड0, प्रथम वर्ष

ज्ञान के संदर्भ में दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 नेल्सन मंडेला जी ने कहा कि ज्ञान वह शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप समस्त संसार की तस्वीर बदल सकते हैं। इस प्रकार ज्ञान प्राप्त करने के लिये खर्च किया गया धन कभी बेकार नही जाता बल्कि उससे कई गुना सूद समेत वापस मिलता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति का शिक्षित होना अति आवश्यक है। महात्मा गाँधी जी के अनुसार– 'आत्मा की व्यथा ज्ञान से ही बुझती है।'

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि –

विद्या नाम नरस्य कीर्तितुला भाग्यक्षये चाश्रयो।
धेनुः कामदूधा रतिश्च विरहे नेत्रं तृतीय च सा।।

सत्यकारायतनं कुलस्य महिमा रत्नैर्विना भूशणम् ।
तस्मादन्यमुपेक्ष्य सर्वविषयं विद्याधिकारं कुरू।।

अर्थात् ज्ञान अनुपम कीर्ति है और भाग्य का नाश होने पर आश्रय देती है, कामधेनु के समान है, विरह में रीति समान है। विद्या को तीसरा नेत्र भी कहा गया है। यह सत्कार का मन्दिर है, कुल महिमा है, बिना रत्न का आभूषण है। इसलिए अन्य सभी विषयों को छोड़कर हमें ज्ञान का अधिकारी बनना चाहिए अर्थात् ज्ञान वह एक मार्ग है जिसकी सीढ़ी को पार करके एक इन्सान अपने जीवन का मूल्य समझ पाता है तथा जीवन के तरीकों को जान पाता है।

ज्ञान की महत्ता का परिचय इस बात से चलता है कि दुनिया के प्रसिद्ध विद्वान महापुरूष स्वामी विवेकानन्द जी शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन के अवसर पर जितने देर तक भाषण देते रहे उतनी ही देर तक दर्शक निश्ंचित भाव से भाषण को सुनते रहे। स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि ''शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' उनका सपना भारत को अशिक्षा से मुक्त करना था। वे भारत की दुर्दशा का मूल कारण अशिक्षा को मानते थे ।

इस प्रकार यह देखा जाये तो शिक्षा एक अति महत्वपूर्ण निवेश और मानव विकास के लिए एक अनिवार्य तत्व है। अर्थव्यवस्था में शिक्षा को उद्योग के रूप में ही देखा जाता है। क्योंकि शिक्षा आर्थिक विकास का एक अति महत्वपूर्ण साधन है। यह राष्ट्र निर्माण, नागरिक निर्माण एवं समाज निर्माण का माध्यम है।

हमारी राष्ट्रीय अवधारणा में ज्ञान सभी के लिये आवश्यक है। यह हमारी बहुमुखी विकास में अग्रणी भूमिका निभाता है। यह समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा लोकतन्त्र के लक्ष्य को आगे बढ़ाता है। शिक्षा वर्तमान एवं भविष्य का विशिष्ट निवेश हैं। शिक्षा का मतलब अपने दिमाग में सूचनाओं एवं जानकारियों का सही उपयोग है। उपर्युक्त बातें शिक्षा में निवेश के लिए प्रोत्साहित करती हैं। वर्तमान में शिक्षा में निवेश हमारे समाज एवं देश की जरूरत बन चुकी है। आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो जब तक कोई राष्ट्र अपने संसाधनों का एक बहुत बड़ा हिस्सा ज्ञान में निवेश नहीं करता तब तक वह देश अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में पिछड़ी अवस्था मे बना रहता है, क्योंकि इस पृथ्वी पर जो कुछ अनुभूति प्राप्त होती है वह ज्ञान के बदौलत ही है। उत्पादन के सभी साधनों में सब का महत्व है, परन्तु ज्ञान, कौशल एवं तकनीक के अभाव में उन साधनों पर गर्व करना अनुचित प्रतीत होता है। इन समस्त संसाधनों का क्रियान्वयन मनुष्य के अन्दर छिपे हुए ज्ञान पर ही निर्भर है। अतः शिक्षा में पूँजी निवेश

के बिना न तो एक सफल जिन्दगी जी पायेंगे और न ही अपने देश एवं समाज को अच्छे संस्कार दे पायेंगे। वर्तमान समय में दुनियाँ में ज्ञान प्राप्ति के लिए होड़ लगी हुई है। एक साधरण आय वाले व्यक्ति भी अपने बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में नामांकन कराकर बेहतर शिक्षा प्राप्त कराते हैं। शिक्षा पर निवेश पहले की अपेक्षा काफी बढ़ा है, क्योंकि इसका प्रतिफल बहुत ही सुखदायक होता है। हमें निवेश करते समय इस बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि निवेश सही दिशा में हो रहा है या नहीं और क्या निवेश बच्चों के अनुकूल हो रहा है अथवा नहीं।

पूंजी निवेश किए बिना हम अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। जब शिक्षा अच्छी गुणवत्ता वाला होगी तब हम उन्नति भी उसी तरह करेंगे। हमारा राष्ट्र जब विकसित होगा, तब हम आत्मनिर्भर बन जायेंगे एवं दूसरो पर निर्भरता समाप्त होगी। हमारा समाज जब तक ज्ञान से सराबोर नहीं होगा, तब तक एक स्वस्थ समाज का सपना नहीं देख पाएंगे। तभी तो आज जितने भी विकासोन्मुख राष्ट्र है सभी शिक्षा के क्षेत्र में काफी निवेश कर रहे है। उदाहरण के तौर पर देखा जाये तो चीन, ब्रिटेन, अमेरिका, जापान आज विकसित देशों की श्रेणी में इसलिये गिने जाते है, क्योंकि उन्होंने अपने देश के विकास के लिये, अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में प्रगति के लिये शिक्षा के क्षेत्र अर्जन करने में अपनी पूँजी को तत्परता से निवेशित किया है। संसार में ज्ञान एवं ज्ञानी की ही पूजा होती है, मूर्ख की नही। ऐसा कहा जाता है कि एक राजा अपने सम्पूर्ण राज्य भर में ही पूजा जाता है लेकिन एक विद्वान एवं ज्ञानी पुरूष जहाँ भी जाते है, अपने ज्ञान की रोशनी से अन्धेरे को दूर करके चारों ओर उजाला फैलाते है।

आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा में पूँजी कब, कैसे और कहाँ निवेश किया जाना चाहिये। बच्चों की शिक्षा में पूँजी निवेश तब शुरू कर देना चाहिए जब बच्चा बाल्यावस्था में रहता है। उस समय अगर हम पूँजी निवेश करते है, तो हमारा निवेश सार्थक हो सकता है बशर्ते की हम उसका क्रियान्वयन ठीक से करते रहें। बच्चे की शिक्षा में सरकार उसके माता-पिता, शिक्षक एवं सामाजिक परिवेश सब की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिये। बिना भागीदारी के कुछ भी खूबसूरत नहीं होने वाला, भागीदारी ही सब कुछ है। आजकल माता-पिता सोचते हैं कि बच्चे को स्कूल में डाल दिया तो उनका सारा दायित्व खत्म हो गया, यह चलन रूकना चाहिये। अतः मैं अपने शब्दों को रोकते हुये यही कहना चाहता हूँ कि हम अपने बच्चों, जो कि कल के भविष्य हैं, उनमें पूँजी निवेश करके, उन्हें उचित वातावरण में रखकर उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देनी चाहिए ताकी वे दुनियाँ के हर क्षेत्र में तरक्की कर सकें।

****

'शिक्षा कार्य सम्बन्धी अर्जित आदतों का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण में उचित स्थान देती है।'

– ***जेम्स***

जश्ने आजादी

- श्री प्रशान्त डबराल
स0प्रा0- बी0एड0, राठ महाविद्यालय पैठाणी

वक्त बीता, काल बीता, किन्तु यह दुर्भाग्य है,
हम वहीं हैं कल जहाँ थे, और उनका हाथ है।

रंग बदला, रूप बदला, पर वही हालात हैं,
भोर देखी ही नहीं, बस एक अंधेरी रात है।

डूबते सब आंसुओं में, कैसी ये बरसात है,
लुट रहा अपना वतन है, हाय कैसी मात है।

आह निकली थी कभी, पर अब न ऐसी बात है,
सिसकियाँ भी थम गई, बस आंसुओं का साथ है।

मांगने से मिल गयी, आजादी तुमको था ये भ्रम,
दी गयी थी कुर्बानियाँ, महँगा पड़ा था ये वतन।

उफ करो एक बार तो, नासूर बनने मत दो इसे,
मिट गया एक बार जो, अपना कहोगे फिर किसे।

वक्त है एहसास का, और एक अदद प्रयास का,
बुझ रही चिंगारियाँ, पर साथ है एक आस का।

उम्मीद है, विश्वास है, राह चाहे हो कठिन,
बढ़ चले तो पा ही लेंगे, फिर वही अपना वतन।

दो कदम ही तुम चलो, पर संग सबका साथ हो,
कुछ इस तरह तुम बढ़ चलो, हर हाथ में एक हाथ हो।

साथ छूटे, साँस टूटे, अब न हो कोई भी गम,
गर जश्ने आजादी मिले, फिर जान भी जाये तो कम,
गर जश्ने आजादी मिले फिर मौत भी आये तो कम।

*****

CORONA

- Rajneesh Tyagi
B.Ed., 4th Semester

An Invisible monster
Crying humanity, crying nature
Lamenting both of the souls
What a pandemic air flows.
In the lamp, tears are crying and goes.

Excuse us ! Invisible monster
Do you dare to teach us war?
Our roots from the humanity
Even war stays so far.

Perhaps, you remind us
To believe in the supreme soul
Mortality has killed the humanity for beauty
You may have this destiny and goal.

But you please release us
From the cage of pestilence
A child unable to go in lap
He is scare to see your presence.

Traditionally, we table the examination
When, He thought you so well
Knowingly you made the several pits
And laugh, if we fell.

Days, weeks, months gone
Gone, several hours
Look at that Prick, you gave
Still no Curve, No covers.

Wordsworth, Shelly no more today
Their work still in the world
There was no place of your introduction
Nor, they have created a word.

I beg you from the all humanity
And promise to keep in touch with soul
Physical relations not so significant
Your character must be a memorable roll.

'Education is a natural, harmonious and progressive development of man's innate powers' ***- Pestalozzi***

पुस्तकालय नेटवर्किंग एवं स्वचालन

- Mr. M.S. Bhandari
Assist. Librarian

विश्वव्यापी संचार व्यवस्था में आये प्रौद्योगिकीय विकास के कारण अभिकलन की शक्ति में एक नये युग का सूत्रपात हुआ है। दो या दो से अधिक कम्पूटरों को किसी माध्यम से आपस में जोड़ने को नेटवर्किंग कहते हैं। नेटवर्क ने राष्ट्रों की संचार व्यवस्था को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिससे आज सूचना का अभिगम काफी सुगम एवं प्रभावी हो गया है। नेटवर्किंग ने पूरे युग को सूचना क्रान्ति के युग में परिवर्तित कर दिया दिया है। राष्ट्रीय स्तर के कुछ महत्वपूर्ण नेटवर्क निम्नवत हैं।

1. **अरनेट ARNET -** 1986 में भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग द्वारा अरनेट विकसित किया गया। वर्तमान में IIT मुम्बई, IIT कानपुर, IIT खड़गपुर, IIT मद्रास, IIS बंगलूरु, नेशनल सेन्टर फॉर सॉफ्टवेयर टेक्नॉलोजी मुम्बई तथा इलेक्ट्रॉनिक विभाग भारत सरकार नयी दिल्ली इसके सदस्य हैं। 1989 में इन संस्थाओ को डायल अप पिन PSTN द्वारा एक दूसरे से जोड़ दिया गया। इस समय इसमें देश के 250 से अधिक शिक्षा संस्थान आमंत्रित सदस्य के रुप में कार्य कर रहे हैं।

2. **निकनेट NICNET-** इसे राष्ट्रीय सूचना नेटवर्क कहा जाता है। इस नेटवर्क से दिल्ली, पूना, हैदराबाद व भुवनेश्वर केन्द्रों को सम्बद्ध किया गया है। जिसमें 20 राज्य, 4 संघीय क्षेत्र तथा सम्पूर्ण देश के 440 जनपदीय केन्द्रों की स्थापना की गई है। निकनेट की सेवा में ई–कॉमर्स, वीडियोकॉन्फ्रेसिंग, इन्टरनेट सेवा, वेवसाइट निमार्ण आदि शामिल हैं।

3. **डेलनेट DELNET-** 1988 में इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर नयी दिल्ली द्वारा इसको विकसित किया गया। इसके द्वारा सद्य सुचियाँ व डेटावेस सेवायें प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त सूचना संकलन, संग्रह एवं संप्रेषण,पुस्तकालय कम्प्यूटरीकरण व प्रशिक्षण का कार्य भी किया जाता है।

अन्तराट्रीय स्तर पर कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकालय नेटवर्क निम्नवत हैं –

1. **ओ.सी.एल.सी. (Online Computer Library Center) -** यह अमेरीका का विश्वस्तरीय सूचना नेटवर्क है। वर्तमान में यह विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय नेटवर्क है। विश्व के 76 देशों में स्थापित 40000 सदस्यों को यह लाभ रहित सदस्ता प्रदान करता हैं। इसका मुख्य उददेश्य कम मुल्य पर सूचनाओं का अभिगम प्रदान करना है। इसके द्वारा विश्व में 6600 पुस्तकलयों को सात मिलियन ग्रन्थों का आदान प्रदान किया जा चुका है। यह 4000 वर्ष में संग्रहित ज्ञान की 400 भाषाओं से सम्बन्धित 7084080,705 स्थानों का प्रतिनिधित्व करता है।

2. **जैनेट (JENT)** – इसका उपयोग इंग्लैण्ड में शैक्षणिक अनुसंधान के लिए किया जाता है। इसके द्वारा www,e-mail,usenet व वीडियोकॉन्फ्रेसिंग की सेवा प्रदान की जाती है। यह अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर नेटवर्किंग का कार्य करता है।

3. **कर्ल CURL) -** ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में यह सहकारिता परियोजनाओं को केन्द्रीय संसाधन प्रदान करता है। इसमें कैम्ब्रिज, एडिनवर्ग, ग्लासगो, लोड्स, लन्दन, मैनचेस्टर, ऑक्सफोर्ड आदि विश्वविद्यालय प्रमुख हैं। यह कैट्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करता है।

4. **ब्लेज (BLEZ) -** यह 1970 में स्थापित ऑनलाइन सूचना पुन: प्राप्ति सेवा है। इसके द्वारा ब्लेज ऑनलाइन, ब्लेज लिंक, सूचीकरण, डाटावेस, सम्पादक सॉफ्टवेयर आदि सेवायें, विशेष रूप से यू0के0 तथा यूरोप में प्रदान की जाती हैं।

5. **इन्फ्लिबनेट (INFLIBNET) -** यह पुस्तकालय एवं सूचना नेटवर्क कम्प्यूटर और संचार प्रौद्योगिकी के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके प्रमुख कार्य देश के पुस्तकालयों तथा सूचना केन्द्रों को मानक रूप से कम्प्यूटरीकृत करना है। इसके अतिरिक्त इसका कार्य अर्न्तराष्ट्रीय सूचना केन्द्रों तथा नेटवर्को को डेटाबेसों का अधिगम प्रदान करना तथा सूचना संसाधन उपलब्ध कराना है।

LIBRARY AUTOMATION ; Library Automation is a process in which Computer performs all the Library works automatically & software used in these whole process are known as Library Software. Few popular Library Automation Software are as follows :-

S. N.	LIBRARY AUTOMATION SOFTWARE	DEVELOPER ORGANISATION
1.	Acquas	Over Information System Kolkata.
2.	Archives	Minifax Information System Kolkata.
3.	CDS/ISIS	UNESCO.
4.	D-Space	-
5.	E-Granthalaya	N.I.C. New Delhi.
6.	GOLDEN LIBRA	INSDOC New Delhi.
7.	Integrated Library Management Software	Pragati Computers Pvt. Ltd.
8.	KOHA	Katipo Communication Ltd. Newzealand.
9	LIBMAN	Detapro Consultancy, Pune.
10.	LIBRA	I.V.V. System Ltd. New Delhi.
11.	LIBRARIAN	Soft-Ed, Pune.
12.	Library Management	Detametics Pvt.Ltd. Mumbai.
13.	Library Management	Indo Informatics, Bangluru.
14.	Library Management	Reyan Systematics, Bangluru.
15.	Library Management	U & I Software Pvt. Ltd. Mumbai.
16.	Library Manager	System Deta Control Pvt.Ltd. Mumbai.
17.	Libsoft	E.T.&T Corporation New Delhi.
18.	Libsys	Libsys Corporation New Delhi.
19.	Listplus	Computer System Bangaluru.
20.	Loansoft	Computec Computer System.
21.	MECSYS	MECON, Ranchi.
22.	MAITRAYEE	NISSAT.
23.	NIRMALS	Nirmal Institute.
24.	NLIS	Asmita Consultant, Mumbai.
25.	SALIM	Uptron India Ltd.New Delhi.
26.	SLIM-1.1	Algorithm, Mumbai.
27.	SOUL	UGC. New New Delhi.
28.	Tulips	TATA Unisis Ltd.Mumbai.
29.	ULISYS	Wipro Information Ltd.Secundrabad.
30.	Vertua	Vergenia America.
31.	WILSYS	Wipro India, Bangaluru.

*****

उत्तराखण्ड के नृत्य

- अलका पन्त
छात्रा, बी0एड0

हमारे उत्तराखण्ड में लोक नृत्यों की परम्परा बहुत प्राचीन समय से चली आ रही है। विभिन्न अवसर पर लोक गीतों के साथ या बिना लोक गीतों के ही बाजों की धुन पर नृत्य किये जाते हैं।

प्रमुख लोक नृत्य निम्नलिखित हैं -

1. **थड़िया नृत्य -** थड़िया नृत्य उत्तराखण्ड का एक लोकप्रिय नृत्य है। यह गढ़वाल क्षेत्र में बसन्त पंचमी से बिखोत तक विवाहित लड़कियों द्वारा घर के आंगन में थड़िया गीत गाकर नृत्य किए जाते हैं।

2. **सरों नृत्य -** यह नृत्य उत्तराखण्ड में ढोल के साथ किया जाने वाला युद्ध नृत्य है। यह उत्तराखण्ड के टिहरी, उत्तरकाशी जिले में खूब प्रचलित है।

3. **हारुल नृत्य -** यह नृत्य उत्तराखण्ड में जौनसारी जनजातियों द्वारा किया जाता है। इसकी विषयवस्तु पाण्डवों के जीवन पर आधारित होती है। इस नृत्य के समय रमतुला नामक वाद्ययत्र अनिवार्य रूप से बजाया जाता है।

4. **मण्डाण नृत्य -** उत्तराखण्ड के लगभग सभी जिलों में मण्डाण नृत्य किया जाता है। यह नृत्य अधिकतर देवी-देवता के पूजन, शादी-ब्याह के मौकों पर जाता है। इस नृत्य में एकाग्रता होना जरुरी होता है। इस नृत्य को 'केदार नृत्य' के नाम से भी जाना जाता है। यह नृत्य अधिकतर टिहरी एंव उत्तरकाशी जिले में किया जाता है।

5. **चौंफला नृत्य -** यह नृत्य भी उत्तराखण्ड का एक लोकप्रिय नृत्य है, इसमें स्त्री-पुरुष द्वारा एक साथ या अलग-अलग टोली बनाकर किया जाता है। यह नृत्य एक श्रृगांर भाव प्रधान नृत्य है। ऐसा माना जाता है कि इस नृत्य को पार्वती ने शिव को प्रसन्न करने के लिए किया था। इसमें किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसमें हाथों की ताली, पैरों की थाप, झांझ की झंकार, कंगन व पाजेब की सुमधुर ध्वनियों के द्वारा नृत्य किया जाता है।

6. **तांदि नृत्य -** यह नृत्य उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी और टिहरी जिले में किसी विशेष अवसर पर माघ महीने में गाया जाता है। जिस गीत में नृत्य किया जाता है, वह किसी तात्कालिक घटनाओं, प्रसिद्ध व्यक्तियों के कार्यो से सम्बन्धित होते हैं।

7. **जागर नृत्य -** उत्तराखण्ड के गढ़वाल एवं कुमाऊँ क्षेत्रो में पौराणिक गाथाओं पर अधारित होता है। यह नृत्य भी पस्वा द्वारा कृष्ण-पाण्डवों, भैरो-काली आदि को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है।

8. **छोपती नृत्य -** उत्तराखण्ड के गढ़वाल क्षेत्र मे यह प्रेम एवं रुप की भावाना से युक्त स्त्री-पुरुष का एक संयुक्त नृत्य है।

9. **घुघती नृत्य -** यह नृत्य भी गढ़वाल क्षेत्र के छोटे-छोटे बाल-बालिकाओं द्वारा मनोरंजन के लिए किया जाता है।

10. **रणभूत नृत्य -** यह नृत्य वीर गति प्राप्त करने वालों के लिए उनकी आत्माओं की शान्ति के लिए उस परिवार के लोगों द्वारा रणभूत नृत्य किया जाता है। इस नृत्य को देवता धिरना भी कहते हैं।

11. **झोड़ा नृत्य -** कुमाऊँ क्षेत्र में यह माघ के चाँदनी रात्रि में किया जाने वाला स्त्री-पुरुष का श्रृंगाारिक नृत्य है। यह एक आकर्षक नृत्य है, जो पूरी रात किया जाता है। इसका प्रमुख केन्द्र बागेश्वर है।

12. **बैर नृत्य -** कुमाऊँ क्षेत्र का गीत-गायन प्रतियोगिता के रूप में दिन-रात में किया जाने वाला नृत्य है।

13. भगनौल नृत्य – कुमाऊँ क्षेत्र का यह नृत्य मेलों में आयोजित किया जाता है। इस नृत्य में हड़का और नगाड़ा प्रमुख वांद्य यंत्र होते हैं।

14. छोलिया नृत्य – कुमाऊँ क्षेत्र का यह एक प्रसिद्ध युद्ध नृत्य है, जिसे शादी या धार्मिक आयोजन में ढाल व तलवार के साथ किया जाता है। यह नृत्य नागराज, नरसिंह तथा पाण्डव लीलाओं पर आधारित नृत्य है। इन सभी नृत्यों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य नृत्य है जैसे– लोटा नृत्य, पवाड़ा या भड़ों नृत्य, भैला नृत्य आदि, जिनकी कहीं न कहीं अपनी एक विशेषता है। उत्तराखण्ड के ये सभी नृत्य एक लोक प्रिय नृत्य हैं। इन सभी नृत्यों का किसी न किसी से सम्बन्ध होता है। हम भी कह सकते हैं कि ये नृत्य किसी उद्देश्य को लेकर किए जाते हैं।

*****

स्कूल के दोस्त

– कु0 रीना
बी0ए0, तृतीय सेमेस्टर

था पहला कदम दुनियाँ में आने का
थे अनजान इस दुनियाँ से ।
हुये जब रूबरू इस दुनियाँ से
समझे कुछ रिश्ते माँ से ।
हुये कुछ बड़े तो
हुये शामिल स्कूल में।
था पहला दिन स्कूल में
गया था माँ के संग ।
कुछ सवाल भरे मासूमियत से
और कुछ सपने मासूम से ।
ढलते गये दिन, हफ्ते, महीनों में सालों में
बन गये दोस्त स्कूल में।
होने लगी शरारतें दोस्तों संग
यूँ ही बीतता गया समय उनके संग ।
हुये जब कुछ बड़े दोस्तों के संग
समझ आया किताबी ज्ञान ।
बाँटते थे प्यार और मस्ती जिनके संग
टीचर की डाँट खाना उनके संग
खाना भी खाना उनके संग
एक पल ऐसा आया छूट गया स्कूल
छूट गयी वो स्कूल की यारी
चल पड़ी जीवन की सवारी ।
चल पड़े सभी अपने मंजिल की ओर
करने पूरा सपने अपने ।
हुये पूरे कुछ के सपने
रह गये अधूरे कुछ के सपने ।
बड़ने लगी उम्र समय के संग
धुंधलाने लगी स्कूल की यादें ।
बैठा जब शान्त छाँव में
तो कुछ याद आये स्कूल के पल ।
याद आयी स्कूल की वो यारी
कुछ खुशी निकली तो कुछ आँसू संग निकले
क्या मस्ती थी उनके संग ।
काश सारी जिन्दगी बिताते
उस मस्ती उन शरारतों
और स्कूल के दोस्तों संग ।

*****

‘शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सदगुणों की प्राप्ति होती है।’ – ***हरबार्ट***

सोशल मीडिया : कसौटी पर सार्थकता

- डॉ0 राजीव दूबे

असि0प्रो0- इतिहास, राठ महाविद्यालय पैठाणी

आज के दौर में मीडिया राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था में पारदर्शिता लाने के संदर्भ में लोकतंत्र के चौथे खम्भे के रूप में अपनी सार्थकता को नये आयाम दे रही है। यदि इसकी व्यापकता की तरफ दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि सूचना प्राप्ति का अधिकार, अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिलाने में मीडिया का योगदान अविस्मरणीय रहा है और इसे भारतीयों के हित को ध्यान में रखते हुये लागू किया गया। काले धन और देश में बढ़ते हुये भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक सशक्त अभियान चलाने और निर्णायक दौर में पहुँचाने में भी मीडिया के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। सत्ता का निर्माण हो अथवा सत्ता के परिवर्तन का अजब-गजब खेल, इस सन्दर्भ में भी मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज कैसे किया जा सकता है? आज के परिप्रेक्ष्य में यदि देखा जाय तो हम यह कह सकने की स्थिति में हैं कि जैसे-जैसे मीडिया की स्वतन्त्रता बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे इसके दायरे में भी पर्याप्त वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है।

21वीं शताब्दी के वर्तमान दौर में मीडिया का एक नया अवतार पूरी दुनिया को अपनी जद में ले लिया है, जिसे हम सोशल मीडिया के नाम से अभिहित करते हैं। ट्वीटर, फेसबुक, व्हाट्सएप, गूगल जैसे सोशल नेटवर्किंग साइट ने मीडिया के पूरे ढाँचे को ही परिवर्तित करके रख दिया है। आज के दौर में वे दिन अब लापता हो गये हैं, जब लोग खबरों के लिये सुबह-शाम एक निश्चित समय का इंतजार किया करते थे। अब तो स्थिति यह हो गयी है कि फेसबुक जैसे सोशल नेटवर्किंग साइट ने टी0वी0 का स्थान लेना प्रारम्भ कर दिया है और समाचारों इत्यादि के लिये इस माध्यम का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से आज जनता एवं मीडिया के बीच की दूरी समाप्त सी होने लगी है।

यदि हम आज के दौर से 20-25 वर्ष पीछे दृष्टि डालेते पायेंगे कि तत्कालीन जीवन में इन्टरनेट नाम का अलादीन का चिराग अपने अस्तित्व में नहीं था, और 13-14 वर्ष पूर्व तक सोशल मीडिया जैसे- फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर यू-ट्यूब, इन्स्ट्राग्राम का नामोनिशान भी नहीं था। फेसबुक तो 2004 में हार्वर्ड विश्वविद्यालय के छात्र जुकरवर्ग द्वारा फेसमास के नाम से स्थापित हुआ था। जबकि ट्वीटर का अवतार 2006 में हुआ। यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम इत्यादि तो वर्तमान दशक के अन्तिम वर्षो की संकल्पना है। इस दौर में लोग ई-मेल नहीं वरन् खतों के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति किया करते थे। यह वह दौर था जब डाकिये का इंतजार बेसब्री से हुआ करता था। लोग-बाग आपस में गप्पे मारते हुये यत्र-तत्र दिख जाते थे लेकिन आज वे नजारे प्राय लुप्त हो गये है और न केवल शहर बल्कि गाँवो की गलियाँ भी सूनी-सूनी हो गयी हैं तथा आपस में बातचीत के स्थान पर लोगो का अधिकांश समय चैटिंग करने में व्यतीत हो रहा है। एक आँकड़े के अनुसार आज केवल भारत में 2.5 करोड़ से अधिक लोग इन्टरनेट का प्रयोग कर रहे हैं और व्हाट्सप पर प्रति सेकेण्ड 250,000 से अधिक संदेशों का आदान-प्रदान हो रहा है। वहीं यू-ट्यूब पर प्रति सेकेण्ड लगभग एक लाख वीडियो सब्सक्राइव किये जाते हैं।

पिछले लगभग दो दशको से इन्टरनेट ने हमारी जीवनशैली में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है और हमारी आवश्यकतायें, कार्यप्रणाली, अभिरूचियाँ तथा आपसी संबधों का सूत्रधार भी काफी हद तक कम्प्यूटर बन बैठा है। आज सामाजिक संबंधों के ताने-बाने को बुनने में कम्प्यूटर की महत्वपूर्ण भूमिका का अन्दाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि हम घर बैठे ही दुनियाँ भर के ऐसे लोगों से संबंध स्थापित कर रहे हैं, जिन्हें हम जानते तक नहीं अथवा जिनसे वास्तविक जीवन में दो-चार भी नहीं हुये हैं। इतना ही नहीं इनके माध्यम से हम अपने बचपन, स्कूल एवं कॉलेजों के पुराने दोस्तों को ढूँढने में सफल हो जा रहे हैं, जिन्हें जीवन के आपाधापी में हमनें कहीं खो दिया था।

वास्तव में इन्टरनेट आधारित यह अवधारणा यानी सोशल मीडिया को आपसी संवाद में मंच के रूप में देखा और समझा जा सकता है। यह वह स्थान बन चुका है, जहाँ तमाम ऐसे लोग हैं जिन्होंने एक दूसरे को प्रत्यक्ष रूप से कभी देखा भी नहीं है, आपस में भलीभाँति परिचित हो चुके है। यहाँ पर आपसी सुख–दुख से लेकर मौज–मस्ती तथा सपनों की बाते भी होती हैं।

जहाँ तक सोशल मीडिया के प्रभाव क्षेत्र के विस्तार का प्रश्न है तो हम 2011 में हुये अरब आंदोलन का जिक्र कर सकते हैं, जिसमें मोबाइल, फेसबुक एवं ट्वीटर नें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। शिक्षा एवं मनोरंजन के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरा एवं विकसित हुआ है। आज–कल चुनाव खत्म होने के बाद भी लोग मुद्दे एवं रोजमर्रा की आवश्यकताओं के लिये आपस में जुड़े रहते हैं। सोशल मीडिया जनता को उनके चुने हुये प्रतिनिधियों से सीधे तौर पर संपर्क में रहने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इसकी बानगी हम भारत में देख सकते हैं। वर्तमान समय में अधिकांश निर्वाचित प्रतिनिधि फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सएप जैसे माध्यमों से जनता से सीधे संवाद स्थापित कर रहे हैं। यहाँ तक कि प्रशासनिक अधिकारी भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने क्षेत्र की कानून–व्यवस्था आदि के प्रश्न पर सामान्य जनता से संवाद स्थापित करते दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज यह सुखद आश्चर्य है कि केन्या जैसे देश का एक पूरा गाँव व्हाट्सएप से जुड़ा है और इनमें उनके प्रतिनिधि भी शामिल हैं। फेसबुक के संस्थापक मार्क जूकरवर्ग के अनुसार भारत से लेकर इंडोनेशिया तक यूरोप से लेकर यूनाइटेड स्टेट तक हमने उन प्रतिनिधियों को आम चुनावों में जीत दर्ज करते हुये देखा है, जो फेसबुक पर सबसे ज्यादा जुड़े रहते हैं। वर्तमान समय में भारत में लोकसभा चुनाव के सन्दर्भ में यदि सोशल मीडिया की भूमिका को देखा जाय तो यह स्पष्ट हो रहा है कि सभी बड़े एवं छोटे राजनीतिक दल सोशल मीडिया के माध्यम से जनता के बीच में अपनी पैठ सुनिश्चित कर रहे हैं। ये राजनीतिक दल बकायदे आई0टी0 सेल स्थापित करके सोशल मीडिया पर अपना प्रचार करते हुये देखे जा सकते हैं। यद्यपि इस सन्दर्भ में इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है कि इन आई0टी0 सेलों के माध्यम से तमाम ऐसे सन्दर्भ प्रस्तुत किये जा रहे है, जिनका कोई सैद्धान्तिक या वैचारिक आधार नहीं है। यद्यपि हम इसको आम अवधारणा के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि किसी के हार एवं जीत का कारण केवल फेसबुक इत्यादि नहीं हो सकते। इसके पीछे अन्य कारण भी अपनी भूमिका निभाते हैं। जूकरवर्ग आगे बताते हैं कि इसके (फेसबुक) के माध्यम से वे जनता से सीधा संवाद बनाते हैं और लोगों की समस्याओं को ठीक से समझ पाते हैं। जूकरवर्ग महोदय की यह मान्यता है कि इसके माध्यम से सम्पूर्ण दुनियाँ को कम्युनिटी बनाया जा सकता है।

सोशल मीडिया की तमाम सकारात्मक खूबियों के बाद भी कुछ ऐसे नकारात्मक पक्ष है, जिसके आधार पर इस पर नियंत्रण अथवा सेंसरशिप की माँग की जाती हैं। हम यह भी देख सकते है कि हाल के वर्षो में इण्टरनेट अथवा सोशल मीडिया पर सेंसरशिप की प्रवृत्ति बढ़ी हैं। वास्तविकता यह है कि इसके पक्ष में तमाम तर्को के बाद भी भिन्न–भिन्न देशों में सेंसरशिप अपने भिन्न–भिन्न रूपों में अस्तित्ववान है। कहीं इंटरनेट पर नियंत्रण के लिये इसको ब्लॉक किया जाता है तो कहीं पर मानहानि, अवमानना, कॉपीराइट इत्यादि को हथियार के तौर पर प्रयोग किया जाता है। बानगी के तौर पर हम भारत में हार्दिक पटेल के पाटीदार आन्दोलन को देख सकते हैं। इस आन्दोलन को देखते हुये गुजरात राज्य में इन्टरनेट को बन्द कर दिया गया था, तो वहीं शिवसेना प्रमुख रहे बाला साहेब ठाकरे के निधन पर एक लड़की के कमेंट और उसकी सहेली द्वारा उस कमेंट को लाइक करने के एवज में जो दुर्गति झेलनी पड़ी वह जग–जाहिर है। इसके अतिरिक्त विगत दिनों सरकार द्वारा लोगों को यह आदेश जारी किया गया था कि लोग व्हाट्सएप के संदेशों को 90 दिनों तक अनिवार्य रूप से सुरक्षित रखें। लेकिन इस आदेश का चौतरफा विरोध होने पर सरकार द्वारा इस आदेश को वापस ले लिया गया। भारत के पड़ोसी देश चीन में तो इन्टरनेट के ऊपर सशक्त सरकारी नियंत्रण स्थापित है, जिसका विरोध समय–समय पर वहाँ की जनता द्वारा करने का प्रयास किया जाता है।

एक समय लोगों की सुबह व्यायाम, भजन और अखबार के साथ शुरू होती थी। लेकिन आज बहुसंख्यक लोगों की सुबह उपकरणों के साथ होती है। आज हम सुबह जगने के साथ ही सर्वप्रथम स्मार्टफोन उठाते हैं और व्हाट्सएप, फेसबुक,

इंस्ट्राग्राम इत्यादि खंगालने लगते हैं। यहाँ तक की कॉलेज या कार्यालय पहुँचने के बाद भी सोशल मीडिया के साथ तारतम्यता बनाये रखते हैं। इंटरनेट या सोशल मीडिया के प्रयोग की लत की गंभीरता को यदि आँकड़ों के आइने में देखा जाय तो ई–मार्केटर के अनुमान कहते हैं कि भारत का वयस्क प्रतिदिन लगभग साढ़े चार घण्टे सोशल मीडिया का प्रयोग करता है। 2013 में यह आँकड़ा लगभग 2 घण्टे 50 मिनट का था। अब अनुमान यह है कि 2020 तक सोशल मीडिया के प्रयोग का समय 5 घण्टे को भी पार कर गया है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और इण्डियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च के शोध के अनुसार लगभग 63 प्रतिशत छात्र प्रतिदिन चार से सात घण्टे का समय स्मार्ट फोन या सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं। इन आँकड़ों के आधार पर यह स्पष्ट है कि हममें से अधिकांश लोग सोने, कामकाज और आवश्यक गतिविधियों के बाद बचे हुये समय को सोशल मीडिया के नाम कर देते हैं। अब तो भारत समेत दुनियाँ भर के दशों में सोशल मीडिया या उपकरणों की लत से मुक्ति पानें का प्रयास कर रहे हैं। भारत में पिछले कुछ सालों में खुले सोशल मीडिया डी–एडिक्सन सेंटर अर्थात् सोशल मीडिया की लत छुड़ाने वाले केन्द्र इन्हीं प्रयासों का एक भाग है। ये सेंटर्स प्रायः सभी प्रमुख अस्पतालों और गैर सरकारी संगठनों द्वारा संचालित किये जा रहे हैं।

इन बहुतेरे समस्याओं के बाद भी वर्तमान समय में अभिव्यक्ति के सशक्त विकल्प के रूप में सोशल मीडिया के औचित्य को नकारा नहीं जा सकता। एक माध्यम के रूप में यह सम्पूर्ण विश्व को अपने जद में लेने के लिये नित नये प्रतिमानों की तरफ अग्रसर है।

*****

इन्टरनेट का जाल

– अतुल नेगी
छात्र, राठ महाविद्यालय पैठाणी

मोह माया का जाल भगवान बुन गये
इंटरनेट का जाल इंसान बुन गया।
गुजर गये वो लम्हें जिनका मोह माया से नाता था
सिमट कर लम्हें रह गये हैं व्हाट्सएप के चैटों में।
जिन्दगी जीने के लाये थे चार दिन
दो टेलीविजन ले गया और दो इंटरनेट।
मोह माया का जाल भगवान बुन गये
इंटरनेट का जाल इंसान बुन गया।
गुजर गये वो लम्हें जब चिन्ता थी मोह माया की
सिमट कर रह गये वो व्हाट्सएप ग्रुपचैट की चिन्ता में।
चार दिन जिन्दगी के मजे लेने आये थे
दो दिन व्हाट्सएप ले गया और दो फेसबुक।
मोह माया का जाल भगवान बुन गये
इंटरनेट का जाल इंसान बुन गया
व्यस्त रहता था मोह माया के कामों में
अब व्यस्त हो गया इंटरनेट से जुड़े मोबाइल एपों में।
बेरोजगारी दूर हो गयी हर हाथ को काम मिल गया
मोह माया का जाल भगवान बुन गये
इंटरनेट का जाल इंसान बुन गया ।

*****

'शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण तथा प्रगतिशील विकास है' – ***पेस्टालॉजी***

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नारी की स्थिति

– डॉ0 राकेश कुमार
असि0प्रो0– बी0एड0 विभाग, राठ महाविद्यालय पैठाणी

प्राचीन समय में नारी को पुरूष के समान सम्मान प्राप्त नही था, लेकिन जैसे–जैसे समय परिवर्तित हुआ वैसे–वैसे इसी समाज ने नारी को पुरूष के बराबर सम्मान भी प्रदान किया है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि महिलाओं की सुरक्षा हेतु एक प्रस्ताव भी पारित किया गया और महिला हेल्प सेन्टर भी स्थापित किये गये हैं। आज समाज में बालिकाओं को शिक्षित करने हेतु अच्छी संस्थाओं को स्थापित किया। यह उसी का ही परिणाम है कि हमारे देश की महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में हमारे देश का नाम रोशन किया है। आज महिलायें सेना, पुलिस बल, शिक्षा, चिकित्सा, खेल जगत, अन्तरिक्ष, राजनीति एवं विभिन्न व्यवसायों में भी अपने योगदान से समाज को लाभान्वित कर रही हैं। सरकार भी उनकी हर सम्भव सहायता के लिए प्रयास कर रही है। भारत जैसे विशाल लोकतान्त्रिक देश का प्रधानमंत्री एक महिला भी रह चुकी है। इसके अलावा श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने तो संयुक्त राष्ट्र महासभा की अध्यक्षता कर महिलाओं को गौरवान्वित किया।

आज सरकार द्वारा महिलाओं को पिता एवं पति की सम्पत्ति में भी अधिकार प्रदान किया गया है। महिलायें आज समाज में सम्मानित जीवन व्यतीत कर रही हैं। वह केवल घर की लक्ष्मी ही नहीं बल्कि घर से बाहर समाज के अन्य दायित्वों का निर्वाह करने के लिए भी आगे बढ़ रही है तथा कन्धे से कन्धा मिलाकर पुरूषों के समान देश के निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर समाज की विकलांग दशा के सुधार हेतु कार्य कर रही है। वर्तमान युग में एवरेस्ट पर्वत पर पताका फैलाने वाली बछेन्द्री पाल, प्रथम पुलिस अधिकारी किरन बेदी, प्रथम महिला वायु सुरक्षा अधिकारी प्रेम माथुर, प्रथम महिला घुड़सवार रोशन सोढ़ी, प्रथम महिला राफेल लड़ाकू पायलट शिवांगी सिंह, प्रथम महिला पायलट सुरेक्षा यादव, प्रथम महिला नेवी पायलट शिवांगी एवं सिडनी में हुए ओलम्पिक खेल में भारोत्तोलक में पदक जीतने वाली एक मात्र भारतीय कर्णम मल्लेश्वरी ने नारी समाज व देश का नाम गौरवान्वित किया। 19 वें राष्ट्र–मण्डल खेल दिल्ली में भारत की महिलाओं ने आश्चर्यचकित कर देने वाले प्रदर्शन से देश व दुनियाँ में अपना नाम व सम्मान हासिल किया। आज हर माता–पिता अपनी पुत्री को साइना नेहवाल, कल्पना चावला, ज्वाला गट्टा, सानिया मिर्जा, अनीसा सैयद, किरन बेदी, बबीता फौगाट जैसा बनाने का सपना देखने लगे हैं।

इसके साथ ही मैं यह कहना चाहूँगा कि महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार होने के बावजूद कुछ अपवाद भी हैं। आज भी ऐसी बहुत सी बालिकायें हैं जो शिक्षा पाने से वंचित हैं। उन बालिकाओं को पर्याप्त सुविधायें नहीं मिल पा रही हैं, जो समाज में निर्धन हैं। इसके लिए कहीं न कहीं हमारी सरकार व इसके द्वारा बनायी गयी नीतियाँ भी दोषपूर्ण हैं। समाज में इतना विकास होने के बावजूद भी महिलाओं को पूर्ण रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं है। जैसे शबरी बाला मंदिर में एवं मस्जिदों में महिलाओं को जाने की अनुमति नहीं है। हमारे देश की बहुत सी महिलाओं को विभिन्न मुस्लिम देशों में देह व्यापार के लिए भेजा जाता है और इनके साथ बहुत ही अमानवीय व्यवहार किया जाता है। उन्हें घर में नग्न रखा जाता है ताकि वह बाहर न जा सकें। आये दिन समाचार पत्रों में महिलाओं के साथ बलात्कार की घटना अब सामान्य हो गयी है। कभी–कभी परिवार में कुछ सगे सम्बन्धी इस जघन्य अपराध को अंजाम देते हैं। अभी तक हमारे देश में ऐसे अपराधियों हेतु कठोर कानून नहीं बना है, इसलिये अपराधियों के मन में कोई भय नहीं है। इसके साथ ही आज इस समाज में दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, स्त्री बन्ध्याकरण, बाल विवाह, बेमेल विवाह, इस्लाम धर्म में बहुपत्नी विवाह जैसी कुरीतियाँ समाज में प्रचलित है। बेमेल विवाह का एक प्रचलित उदाहरण सोमालिया 100 वर्षीय अहमद मोहम्मद घोरे है, जिन्होंने 17 वर्षीय साफिया अब्दुले से 100 लोगों की उपस्थिति में विवाह किया जबकि उनकी 2 पत्नियाँ पहले से ही हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था यूनीसेफ ने सर्वेक्षण के माध्यम से कहा कि भारत में आधुनिकता के दौर में दुनियाँ के एक तिहाई बाल विवाह सम्पन्न होते हैं। आज कोई पिता अपनी

बेटी का गला घोंटने पर मजबूर होता है तथा कुछ मातायें अपनी बेटी के साथ ट्रेन के आगे कूदकर जान देने को विवश है। आज किसी के घर में स्टोव व दीपक जलाने के लिए भले ही तेल न हो लेकिन बहु–बेटियों को जलाने के लिए पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाता है। यें घटनायें किसी आदिवासी नक्सल प्रभावित क्षेत्र की नहीं है और न ही किसी अफ्रीकी गाँव या शहर की। बल्कि यह भारतीय महानगरों की हैं, जो मैट्रो कल्चर का प्रतिनिधित्व करते हैं। उच्च शिक्षित व आर्थिक रूप से सम्पन्न महिला चिकित्सक ही लिंग निर्धारण का कार्य कर कन्या भ्रूण हत्या में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं। अगर महिलाओं को शिक्षित करने के लिए 15 वर्षीय मलाला यूसुफजई अगुवाई करती है तब कट्टरपन्थी तालीबान द्वारा उस पर जानलेवा हमला किया जाता है। इन कट्टरपंथियों के द्वारा बालिकाओं के चेहरे पर तेजाब फेंका जाता है, जिसके कारण उनकी जीवित रहने की उम्मीद रहती है और यदि वह जीवित रह भी जाती है तो ऐसा जीवन मृत्यु से भी ज्यादा दुखदायी होता है। आज भी हमारे समाज में महिलाओं पर बहुत सारे अत्याचार देखने को मिलते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उत्तरी ईराक के कोचो गाँव की नादिया मुराद बसी ताहा (शांति की नोबेल पुरस्कार विजेता) की आत्मकथा ‘‘द लास्ट गर्ल: माई स्टोरी ऑफ कैप्टिविटी एण्ड माई फाइट अगेंस्ट द ईस्लामिक स्टेट’’ में मिलता है, जिसमें उसकी माँ और 6 भाईयों की निर्दयता के साथ हत्या कर दी गयी। इसमें यह भी बताया गया कि दुनियाँ के सबसे दुर्दांत व कट्टर आंतकवादी संगठन द्वारा ईजीदी समुदाय की लड़कियों को अगवा कर उनका यौन एवं शारीरिक शोषण किया जाता था। इस प्रकार संक्षेप में समाज में घूम रहे ऐसे दरिंदों को समाज के द्वारा बहिष्कार के साथ ही मृत्यु दण्ड मिलने का प्रावधान होना चाहिए, जिससे लोगों के मन में भय रहेगा तथा अपराध कम होंगे। अंत में मैं यह कहना चाहूँगा कि नारी पुरूष से श्रेष्ठ थी और रहेगी क्योंकि नारी जगत जननी है, नारी से पुरूष है ना कि पुरूष से नारी।

*****

सीख

– मनोज रमोला
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

आगे की रणनीति बनाकर,
भूतकाल को कभी न देखो।
कल क्या होगा बिना विचारे,
वर्तमान में जीना सीखो ।।
ना पहुँचे दु:ख चंचल मन को,
सोच समझ ऐसा कार्य करों ।
अंधकार में दिया जलाकर,
जीवन में ज्योति प्रकाश भरों ।।

एकाग्र धैर्य की कुँजी लेकर
लक्ष्य भेदने के गुर सीखो।
संघर्ष नित्य का नियम बनाकर,
वर्तमान संग जीना सीखो ।।
प्रभु सुमिरन नित नियम बनाकर
दु:ख को सुख में बदलना सीखो ।
आत्म चेतना को जाग्रत कर,
शक्तिमान बन जीना सीखो ।।

दु:ख विषाद का समय भूलकर,
वर्तमान के क्षण को समझो ।
उचित कार्य को उचित जगह में
उचित समय पर करना सीखों ।
सदविचार, सदगुरू संग कर,
शिष्टाचार का पालन करो,
सदाचरण का संपादन सीखो ।।

*****

'The influence of the environment on the individual with a view to producing a permanent change in his habits of behavior, thought, and attitude.'
- G.H.Thomson

स्त्री जाति एक वरदान

- **सृष्टि लूथरा**
छात्रा, बी0पी0एड0

आज कल जमाना बदल रहा है। प्राचीन तथा आधुनिक युग की स्त्री में बहुत बड़ा अंतर है। यदि हम प्राचीन इतिहास देखें तो पता चलता है कि प्राचीनकालीन स्त्री भी किसी से कम नही थी। रानी झांसी, अमृता प्रीतम, दलीप कौर, रजिया बेगम, भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी, क्या यह स्त्रियाँ नहीं थी?

आज जब हम यह कहते हैं कि स्त्री पुरूषों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं तब हमारे मन में कई तरह के प्रश्न उठते हैं। जिस तरह जमाने में बदलाव आ रहा है, क्या उसी तरह स्त्रियों में भी बदलाव आ रहा है? क्या आजकल भी लड़कियों के साथ पहले जैसा व्यवहार नहीं हो रहा है ? क्या लड़कियों द्वारा की गई आत्महत्या या उनकी हत्याओं का समाचार नहीं सुनाई देते? इन सभी बातों को सोचकर यह महसूस होता है कि समय आगे बढ़ रहा है परन्तु हमारी सोच नहीं बढ़ रही है।

यदि हम इस तरफ देखें तो पाएँगे कि लड़की को जन्म से ही अशुभ मानकर तिरस्कृत किया जाता है। यह कितना दुखद है कि माँ भी बच्चे को अच्छा नहीं समझती। लड़कियों को माता-पिता के प्यार का कम अधिकारी समझा जाता है। सच्चाई यह है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन बन जाती है। समाज में स्त्री को तभी ऊँचा दर्जा मिल सकेगा जब स्त्री की स्त्री से दुश्मनी खत्म होगी।

इतना सब कुछ करने के उपरांत भी स्त्री की दुर्दशा क्यों है? परमार्थ द्वारा विचार करें तो सबमें परमात्मा ही है और सबके अंदर एक ही परमात्मा की जोत है। इसी प्रकार स्त्री में भी वही जोत है। इससे स्पष्ट होता है कि औरत का निरादर करना परमात्मा का निरादर करना है।

आज जो मनुष्य स्त्री के प्रति तिरस्कार पूर्ण व्यवहार करता है, उसे भी तो किसी औरत (माँ) ने ही जन्म दिया है, किसी बहन ने उसे स्नेह दिया है। उसके लिए भी किसी औरत या छोटी बहन ने सुख माँगा है और वह किसी औरत (पत्नी) संग जीवन बिता रहा है। पुरूष कहीं बाहर गया होता है तो स्त्री उसके आने के इंतजार में दरवाजे की तरफ नजर लगाए बैठी होती है। जिसे वह पति परमेश्वर मानकर पूजा करती है, किन्तु उसे ही घरेलु हिंसा का शिकार भी होना पड़ता है। स्त्री कि ऐसी हालत देख सुन बहुत दुख होता है जिसे कि बयां नहीं किया जा सकता। आखिर स्त्री को कब समझेगा पुरूष?

माता-पिता को चाहिए कि अपनी बच्चियों को योग्य शिक्षा के साथ-साथ घरेलु और सामाजिक आचार-विचार और विशेष रूप से अच्छा आचरण भी सिखाना चाहिए। एक महान लेखक का कथन है- 'FASHION IS THE SEED OF BAD CHARACTER' अर्थात् फैशन बुरे आचरण के लिए एक बीज का काम करता है। इस लिए बच्चों को सादगी भरा जीवन जीने की प्रेरणा दी जानी चाहिए।

*****

'Education is the organization of acquired habits of such action as will fit the individual to his physical and social environment.'
- James

संस्कृत भाषायाः वैशिष्ट्यं सौष्ठवं च

- अभिषेक बधानी
छात्र बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

'सम+कृ+क्त' इति संस्कृत शब्दस्य व्युत्पतिः इयं संस्कृत भाषा सर्वाभ्यः भाषाभ्यः सर्वोच्च भाषा वर्तते। अतः संस्कृत भाषा सर्वेसां भाषाणां जननी कथ्यते। संस्कृत भाषा सर्वदा सम्भावेन सर्वत्र व्यवहार वर्त्य न्यवर्तते। भाषाषु रुपार्थेऽस्य शब्दस्य प्रयोगः प्रथम तो बाल्मीकि रामायणे एव प्राप्यते-

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातीरिव संस्कृताम्।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

संस्कृत भाषा देव वाणी अपि कथ्यते। संस्कृत भाषायां मानव संस्कृतेरितिहासः सुरक्षितो अस्ति। प्रायः सर्वेषामपि आर्य धर्मा लम्बिनां धार्मिक साहित्यं प्राचुर्येण देववाण्यामेव विद्यते। संस्कृत भाषायाः साहित्यः बहु प्राचीनः वर्तते। भारतीय भाषाणां उद्‌गमस्थान भूता च एषां देववाणी एत्तद्वारेण विभिन्न देशेषु लैटिन, ग्रीक, इंग्लिश फ्रेंच, जर्मन इत्यादि रुपैः उपलभ्य मानया आर्य भाषाया अस्माकं सम्बन्धः भुवि विश्रुतः। अर्थ गाम्भीर्य भाव सौन्दर्याद्यपेक्षयां अपि संसार भाषाणां-न केवलं प्राचीनानां किन्तु आधुनिकीनामपि शिरोमणि भूतैव नो देव वाणी। उपनिषदो, दर्शन षास्त्राणि, भागवतम्, उत्तर रामचरितम, इत्यादि अलौकिक साहित्य रत्नैरजंकृता सा-सहसैव अन्य भाषा अति-क्रामति धर्मार्थकाममोक्षाख्यान् खिलानेव च पुरुषा लक्ष्मीकृत्य प्रवृंत तत्साहित्यं अत एव च सर्वागं पूर्णम।

अति महत्वपूर्णे मिदं संस्कृत साहित्य।

इयं प्राचीन तायां-सर्वातिशायीति पूर्वमविदितमेवा एतन्महत्वे प्रमाणनि यथा-

संस्कृत साहित्य न केवल भारतवर्ष एवं किन्तु भारताद् बहिरपि विभिन्न देशेषु प्रचारितः प्रसारितः च। इयं साहित्यं चीन, जापान, कोरिया प्रभृति वासिना मपि लोकानां मिति वृतं लंका, मलय द्वीपादि वासिनाञ्च इति वृतं सुरक्षित रुपेण गोपायति। मंगोलिया देशेऽपि संस्कृतम् अस्ति। तभ अनेके संस्कृत ग्रन्थाःलब्धाः। महाभारताधाराणि तब्दाषानिबद्धति बहूति नाटकान्पितत्र लब्धानि। मेषु हिडिम्ब वधं प्रधानम्।

विशुद्ध कलादृश्यापि संस्कृत साहित्य अतिमहत्वशाली। अत्र कलिदास सदृश कविः भवभूति तुल्यो नाटककारः बाणभट्ट समो गद्यलेखकः जयदेव समो गीत प्रणेता च अजायन्त। यदीयाभिस्तत काव्य सृष्टिभिः शुद्धकला रुपेणापि विनोदितं च भुवनम।

अतः अस्माभिः एषा समृद्धा सर्वविध ज्ञान विज्ञान सम्भारवती, चतुर्वर्ग प्रदान सक्षमा संस्कृत भाषा आत्मश्रेयसे लोकस्थेयसे चसर्वदा समाश्रयणीयेति। सेयं संस्कृत काव्यधारा विच्छिन्नां चिरायानुवृत्ताऽग्रेपि सतत् शत धारतामुपैतु इति।

"भारतमेक सूत्रे पूरयितु माबद्ध मितुं वा।
संस्कृताध्ययनमत्यावश्यक मपेक्षितमेवास्ति"।।

अर्थात् भारत को एक सुत्र में बाँधने के लिय संस्कृत का अध्ययन अत्यावश्यक एवं अपेक्षित है।

'Education is a natural, harmonious and progressive development of man's innate powers' ***- Pestalozzi***

प्रोफेशनलिज्म–वर्तमान उच्चशिक्षा की आकांक्षा

– श्री उमेश चन्द बंसल
असि0प्रो0– (बी0एड0), राठ महाद्यिालय पैठाणी

किसी भी राष्ट्र समाज, तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। वास्तव में शिक्षा, समाज–संस्कृति और व्यक्ति के लिए पोषण का कार्य करती है। शिक्षा एक अविरल प्रक्रिया है। नि:संदेह शिक्षा को मानव जीवन का शाश्वत मूल्य माना जाता है। शिक्षा की नैमेत्तिक एवं व्यवहारगत प्रकृति के कारण ही शिक्षा, मानव के मूल प्रवृत्तियों, स्वभावों और जन्मजात शक्तियों का निरंतर परिष्करण तथा परिशोधन करता रहता है। शिक्षा मानव के संदर्भ में पूर्णता का द्योतक है। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को सार्वभौमिक दृष्टिकोणों, आदर्शो, कौशलों और विधाओं को ग्रहण करने तथा समझने हेतु प्रेरित कर जीवन को स्वनियत्रिंत, स्वनिर्देशित, परिमार्जित तथा आजीवन चहुमुखी विकास के पथ पर अग्रसरित करती है। यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सीखने सीखाने की द्विमुखी एवं त्रिमुखी प्रक्रिया है। अंग्रेजी में शिक्षा– को ऐजूकेशन कहते हैं। अत: ऐजूकेशन लैटिन भाषा के ऐडूकेटम से बना है। जो इ+डयूको के संयोग से बना है। ई का अर्थ है अन्दर से और डयूको का अर्थ है आगे बढ़ना या अग्रसर होना। अर्थात् हमारी अंतर्निहित शक्तियों का प्रकाशन होना। मनुष्य को शिक्षा अनेक विधि–विधानों के माध्यम से प्राप्त होती है। जैसे– सूचना, शिक्षण–प्रशिक्षण, अनुदेशन, अनुकरण तथा प्रतिपादनों आदि के अलावा उपाधियों एवं डिग्रीयों के माध्यम के रूपों में, क्योंकि इस प्रक्रिया में शिक्षा सार्वभौमिक एवं विशिष्ट उद्देश्यों की ओर ध्यानाकार्षण भी करती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझते हुए शिक्षा के कुछ अति आवश्यक कार्य भी हैं। जैसे शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सदगुणों का परिमार्जन करना। परन्तु वर्तमान समय में हमारे देश की उच्च शिक्षा के लक्ष्य एवं विशिष्ट उद्देश्य वास्तविक शिक्षा के सकारात्मक पक्षों के रूप में नहीं मिल पा रही है।

उच्च शिक्षा का अर्थ है कि, सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से भी ऊपर की शिक्षा। उच्च शिक्षा का सम्बन्ध किसी विशेष गूढ़ शिक्षा या विशद शिक्षा से है। समकालीन भारतीय परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा प्राय: विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्यूनिटी महाविद्यालयों, चिकित्सासंस्थानों, प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन आदि संस्थानों के द्वारा प्रदान की जाती है। इस स्तर पर स्नातक, परास्नातक, व्यावसायिक एवं प्रशिक्षण आदि सम्बन्धी डिग्रीयाँ दी जाती हैं। यदि हम सूक्ष्म रूप से गहन चिंतन करें तो यह पता चलता है कि, भारतीय उच्चशिक्षा का तंत्र विश्व में तीसरे स्थान पर अवस्थित है। भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर नये सम्प्रत्ययों का प्रयोग होता रहा है। इन सम्प्रत्ययों की सार्थकता कहाँ तक सिद्ध हो पा रही है? यह एक चिंतनीय विषय है। इन नवीन प्रत्यारोपित सम्प्रत्ययों ने उच्च शिक्षा के शिक्षको को नये स्वरूप एवं दृष्टिकोणों में देखने की लालसा पैदा कर दी है। दुर्भाग्यवश उच्च शिक्षा के समस्त शिक्षक वर्ग दो फाड़ों में विभक्त हो चुके हैं। एक वर्ग का दृष्टिकोण यह है कि, हम केवल एक अच्छे सुगमकर्ता, सम्यकज्ञानदाता, सम्यकमननकर्ता या पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान को ज्यों का त्यों सम्प्रेषणकर्ता हैं। अर्थात् हम हॉस्पिटैलिटी पारेषणकर्ता के साधन हैं। इनका तर्क है कि, समाज की सरकारें तथा नीति निर्धारक और लोक सेवक हमारी परम्परागत मुख्य भूमिकाएँ, उत्तरदायित्व और अधिकारों का शोषण कर रहे हैं। क्योंकि वे हमको बलपूर्वक पेशेवरता की गर्त में धकेल रहे हैं। ये समस्त संगठन और संस्थायें हम पर पेशेवरता का तगमा लगाना चाहते हैं। जबकि दूसरे शिक्षक वर्ग की सोच तथा दृष्टिकोण इस पक्ष में नही है। उनकी माँग है कि, शिक्षण अघिगम कार्य को एक ऐसे पेशे के रूप में प्रतिष्ठित किया जाय, जो वास्तविक रूप में नवीन पेशे की तर्ज पर उदीयमान हो। अर्थात् प्रत्येक व्यवसाय को एक पेशे के रूप में स्वीकृति मिलें। तब एक नया विश्वसनीय प्रयोग सत्यापित माना जायेगा। जबकि अधिकांश शिक्षक हर एक पेशे को भिन्न–भिन्न नजरिये से देखते है। इसलिए उनकी धारणा तथा बौद्धिक शक्ति में संज्ञानात्मक अंतर है।

कुछ लोगों का परम्परागत नोशन है कि, पेशेवर व्यक्ति वह है, जिसे उस कार्य के लिए जीविकोपार्जन हेतु भुगतान किया जाता है। सामान्यतया लोग पेशे को अनेक नामों से पुकारते हैं। जैसे जीविका का साधन, व्यवसाय, रोजगार, कामधन्धा, नौकरी,

श्रम आदि। कुछ लोगो की मान्यता है कि पेशेवर होने के लिये कोई खास योग्यताएँ या अर्हताऐं ज्यादा मायने नहीं रखती हैं। जबकि दुनियाँ का सबसे पुराना पेशा धन कमाने वाला कैरियर है। दुनियाँ में शौकिया या इच्छुक व्यक्ति एक पेशेवर की तुलना में ज्यादा सुयोग्य हो सकता है। लेकिन शौकिया व्यक्ति को सत्कार, सम्मान एवं उसकी गरिमा को प्रोन्नयन नहीं किया जाता है। इसलिए वह मात्र शौकिया ही रह जाता है। पेशेवर नैतिकता को नैतिक विज्ञान की शाखाओं मे से एक माना जाता है। प्राय: रोजमर्रा की जिन्दगी में हम इस सम्प्रत्यय को नैतिकता के संहिता के अर्थ के रूप में प्रयुक्त करते हैं। आचार संहिताओं का ऐसा समूह जो कुछ व्यवसायों, पेशों तथा नौकरशाहियों के सदस्यों को माार्ग प्रशस्त करता है। अत: यह पशेवर नैतिकता के अवधारणा की पहचान कहलाता है।

पेशेवरता किसी पेशा या व्यवसाय का एक ऐसा सदस्य होता है, जिसे विशिष्ट शैक्षणिक प्रशिक्षण के आधार पर चुना जाता है। पारम्परिक रूप से पेशेवरता का आशय है कि, वह व्यक्ति जिसने किसी विशिष्ट क्षेत्र में कौशल, महारथ या डिग्री अर्जित की हो। प्रोफेशनल शब्द का प्रयोग सामान्यतया सफेदपोश स्तर पर कार्य करने वाले उन व्यक्तियों या जिनमें जन्मजात कौशलता निहित होती है या वे शौकिया तौर पर काम करने हेतु स्वप्रेरित होते हैं, के लिए किया जाता है। दूसरी ओर पश्चिमी सभ्यता में प्रोफेशनल शब्द उन व्यक्तियों के लिये प्रयोग किया जाता है, जो उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्तकर्ता होने के साथ ही अन्य वेतनभोगी कर्मियों के रुप में कार्य करते हैं। अर्थात् जो अपने कार्य में काफी स्वायत्त और बेहतर पैकेज का लाभ उठाते हैं। आमतौर पर वे पेशेवर लोग जो रचनात्मक व बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण कार्यो में सम्मिलित रहते हैं। दूसरे शब्दों मे यह कहा जा सकता है, कि वे लोग सृजनात्मक, नवाचारी तथा गूढ़ अनुसंधान कार्यो को करने में उच्च दक्षता रखते हैं। एक पेशे द्वारा संयुक्त लोगों की संस्कृति व समान हितों या आवश्यकताओं के आधार पर की गयी पेशेवर नैतिकता की परम्परा, पेशेवरता के विकास के साथ विकसित होती है। पेशेवरता के लिए सिद्धान्तों और सामाजिक मानदण्डों को विधायी स्तर पर या नैतिकता के स्वीकृत मूल्यों के माध्यम से भी व्यक्त किया जा सकता है। पेशेवरता की आम धारणा है कि, यह एक या अधिक पेशों के सिद्धान्तों के साथ प्राकृतिक रूप से जुड़ी हुई होती है। जिसका सम्बन्ध मानवीय व्यवहारों तथा नैतिक मूल्यों से प्रतिस्थापित होती है। जैसे हिप्पोक्रेटिक शपथ और चिकित्सा गोपनीयता आदि। इन सभी पेशों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव जीवन के नैतिक व्यवहारों आदर्शो, आचरण तथा मान्यताओं के अलावा सामाजिक हितों और मानवीय भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता से होता हैं। समाज का चौथा स्तम्भ माने जाने वाला पत्रकारिता पेशा भी सत्य एवं प्रामाणिक घटनाओं पर आधारित निष्पक्ष प्रस्तुति का वर्णन करना, उनकी पेशेवरता में साफ-साफ झलकता है। वर्तमान में पशेवरता के मानकों के विकास और सुधार हेतु अथक प्रयास किये जा रहे हैं। कुछ हद तक अपेक्षित बदलाव भी गिनाये जा सकते हैं। किन्तु उच्चशिक्षा में पेशेवरता का ग्राफ औंघेमुंह गिर रहा है। इस कारण भारतीय उच्चशिक्षा की दशा एवं दिशा दोनों की तस्वीर उभरते वैश्विक स्तर पर निरंतर पिछड़ी हुई है। यदि हम भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक विकास क्रम पर सूक्ष्मदृष्टिपात करें तो नि:संदेह भारतीय शिक्षा (ज्ञान), सभ्यता एंव संस्कृति विश्वभर में अग्रणी है, क्योंकि भारतीय ज्ञान व शिक्षा वास्तव में संस्कृति और सभ्यता का अनुपम द्योतक है। हमारी ज्ञान प्रणाली सदैव वैश्विक स्तर पर उन्नति, विकास, सद्भावना, परम्परागत ज्ञान, सतत् एवं सम्पोषणीय शिक्षा, प्राकृतिक प्रदत्त शक्तियों की पहचान और प्राचलन हेतु अभिव्यंजानात्मक प्रमा की ओर ले जाने का संकेत बारम्बार करती है। अत: हमारी सभ्यता और सांस्कृतिक ज्ञान में लेशमात्र मात्र भी कुटिलता व भौतिकता नहीं थी। वास्तव में मानव जीवन को परम्परागत ज्ञानदर्शन, अर्न्तज्ञान, अर्न्तबोध, प्रातिभज्ञान, अंतप्रज्ञा ज्ञान, और आत्मचेतना की ओर निरंतर प्रेरित तथा पुनर्बलित करती थी।

भारतीय चिति के संदर्भ में खंडन किया जाय तो, हमारी प्राचीनतम शिक्षा पद्धति एक नवीन जीवटता प्रदान करने वाली थी। वर्तमान उच्चशिक्षा प्रणाली में नित-नित नये प्रयोगों ने निश्चित रुप से समकालीन शिक्षा को पक्षाघात की अवस्था में खड़ा कर दिया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय चित्त के अनुरूप शिक्षा को युक्तिपूर्ण ढंग से पोषित नहीं कर पा रही है। इसका प्रमुख कारण यह है कि, हम अपने परम्परागत ज्ञान की विधियों, प्रविधियों, पद्धतियों, व्यूहरचनाओं, नवाचारों, अन्वेषणात्मक

प्रवृत्तियों, तकनीकियों, कलाओं, प्रणालियों और स्वंय सिद्धियों तथा सहजबोध ज्ञान का पूर्णरूपेण परित्याग कर चुके हैं। इसलिए आज हम केवल सूचनात्मक ज्ञान, स्मृतिज्ञान, जीविकोपार्जन ज्ञान, व्यावसायिक ज्ञान तथा भौतिकता व बिलासिता सम्बन्धी आवश्यकताओं के जाल में फँस चुके है। आज का युग वैज्ञानिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी तथा डिजीटल युग है। जिसको आधुनिक काल का चमचमाता युग भी कहा जाता है। जबकि दूसरी ओर हमारी उच्चशिक्षा की गुणवत्ता एवं साख दिनों दिन वैश्विक स्तर पर गिरती जा रही है। भारतीय शीर्ष स्तर वाले कुछ संस्थायें वैश्विक स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज भी नहीं करा पा रही है। इसके अनेक कारण गिनाये जा सकते हैं। भारतीय छात्रों का उच्च शिक्षा में वैश्विक दृष्टि से बहुत कम प्रवेशीकरण होता है, जिसका मुख्य कारण भारतीय छात्रों का उच्च शिक्षा के प्रति कम रूझान है। इसको दूर करना में भारत सरकार के भी पसीने छूट रहे हैं। दूसरी समस्या यह है कि, भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली की बेतरतीब नीतिगत एवं प्रशासनिक फैसले भी उच्चशिक्षा के लक्ष्यों को चकनाचूर करने में पीछे नही हैं। इसलिए हमारे बेरोजगार युवा, अप्रशिक्षित की गर्त में फँसते जा रहे हैं। आज उच्चशिक्षा प्रणाली में राजनैतिक हस्तक्षेप, रूढ़िवादी सोच, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मोड तथा शिक्षा का बाजारीकरण आदि का प्रचलन बढ़ गया है। हमारी सम्पूर्ण उच्चशिक्षा की ढांचागत प्रणाली और उसके लक्ष्य, आदर्श, मूल्य, नैतिकता तथा क्रियान्वयन की प्रक्रिया चरमरा गयी है। दूसरी ओर भारतीय समाज का दृष्टिकोण भी उच्च शिक्षा के प्रति उदासीन तथा अविश्वासपूर्ण हो गया है। इसका खामियाजा शिक्षक वर्ग को झेलना पड़ रहा है। अध्यापक को मानव निर्माण का शिल्पकार माना जाता है। लेकिन वे अध्यापक भी हमारे समाज की एक उपज है। उसका दृष्टिकोण एवं नजरिया भी अपने पेशे के प्रति नकारात्मक है। इसलिये यह एक गम्भीर विचारणीय प्रश्न है।

उन शिक्षकों का ध्येय भी उच्चशिक्षा को प्रदान करने में मात्र सुगमकर्ता, अनुदेशककर्ता व सम्प्रेषणकर्ता आदि के रूप में बन गया है। अध्यापक का मूल ध्येय छात्र को केवल सही मार्ग में ले जाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अर्मूत की ओर किसी अधिष्ठान या लक्ष्य तक ले जाने से भी ऊपर या उससे भी पार, अंतिम सत्ता तक प्रतिष्ठित करने वाला होता है। वास्तव में शिक्षक को अपनी पेशेवरता के प्रति अतिसंवेदनशील होकर उच्चशिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों को सुनहरे कल का सपनें तथा क्षितिज के पार ले जाने के लिए वैज्ञानिक, इंजीनियरिंग, तकनीकि, प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर सांइस, अनुसंधान, नैतिकमूल्यों तथा सार्वभौमीकरण की शिक्षा के प्रति गम्भीर रूप से प्रत्यायन कर सफल करना होगा। उनको एक वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर तथा वकील के तौर पर कार्य करने की आवश्यकता है। जिस प्रकार हिप्पोक्रेटिक शपथ के आधार पर उपरोक्त पेशेवर व्यक्ति अपने उत्पादों या सुनहरे भविष्य को तरासने का कार्य करके सफलता प्राप्त करते हैं। उसी प्रकार हमारे शिक्षकों को भी अपने पेशेवरता में हिप्पोक्रेटिक शपथ लानी होगी। हमारे शिक्षकों को उच्च शिक्षा के मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखकर छात्रों को कुशल नागरिक, अनुसंधानकर्ता, नवाचारी, कुशल नेतृत्वकर्ता, वैज्ञानिक अभिवृत्ती, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षणकर्ता, नैतिक मूल्यों का निर्वहन करने वाला, सतत एंव सम्पोषणीय विकासकर्ता, नवीन ज्ञान पिपासु, प्रौद्योगिकी तकनीकि और कौशलों का सद्विकास करने वाला बनाना होगा। जब हम भारतीय उच्चशिक्षा प्रणाली का बारीकी से आकलन और मूल्यांकन करते हैं, तो हमें यह पता चलता है कि, उच्चशिक्षा के लक्षित उद्देश्यों से हम तीव्रगति से विमुख होते जा रहे हैं। जिस कारण भारतीय उच्चशिक्षा की ग्रोथरेट वैश्विक स्तर पर शून्यता की ओर निरन्तर गिरती जा रही है।

शोधों से यह पता चला है कि, समकालीन भारतीय शिक्षण पद्धति में शिक्षकों को पेडागॉजी और एन्ड्रोगॉजी का सम्पूर्ण ज्ञान न होने के कारण भारतीय उच्चशिक्षा की दुर्गति हो रही है। पेडागॉजी का दूसरा नाम शिक्षणशास्त्र है। इसमें शिक्षण अधिगम का वैज्ञानिक और कलात्मक अध्यापन शैली या नीतियों का विवरण होता है। पेडागॉजी के आधार पर शिक्षक, अध्यापन कार्य करते समय विभिन्न प्रकार के शिक्षण सूत्रों, व्यूह रचनाओं, युक्तियों, प्रविधियों, विधियों और प्रणालियों का समुचित प्रयोग कर अधिगमकर्ता का सर्वागीण विकास करता है। दूसरी ओर एंडोगॉजी में उन प्रोढ़ों का अध्ययन किया जाता है जिनके कंधों पर देश का भविष्य प्रतिस्थापित होने वाला है। शैक्षिक पिरामिड ढांचा की स्थिति के अनुसार निश्चय ही हमारी उच्चशिक्षा का स्तर ऊपरी

शिखर पर विद्यमान है, जिसको हम विश्वविद्यालयी शिक्षा कहते है। यहाँ पर प्रबुद्ध व्यक्तियों के मध्य सर्वदा अंत:क्रिया होती रहती है, किन्तु निष्पति प्राय: न्यून मात्रा में ही प्राप्त हो रही है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि, शिक्षण एक प्रतिष्ठित पेशेवराना के रूप में अपना चिरकालिक स्वरूप पैदा कर सकता है। यदि उच्चशिक्षा में अध्ययन अध्यापन सम्बन्धी कार्य सामूहिक वाद-विवाद, नवाचारों, मस्तिष्क उद्धेलन, ह्यूरिस्टिक आयामों, सेमीनार, वर्कशॉप, विचार गोष्ठी, क्रिया-प्रतिक्रियों के आधार पर सुनिश्चित हो तो संभवत: हमें उच्चशिक्षा के लक्ष्य हासिल करने में कोई कठिनाई महसूस नहीं होगी। हमारे शिक्षक वर्ग को शिक्षण अध्यापन कार्य को नौकरी, व्यवसाय कर्तव्यनिष्ठता, धंधा, रोजगार के सम्प्रत्यय से ऊपर उठकर इसको पेशेवरता की पैनी नजर से देखना होगा, वरन भारतीय उच्चशिक्षा प्रणाली का भविष्य धीरे धीरे ह्रास होगा।

आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करें कि, वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सोचने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है। इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त शिक्षण अधिगम परिवेश का निर्माण करना होगा। शिक्षक रोल मॉडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है, बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य की ओर उन्मुख करते हैं। दूसरी ओर शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि, व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो सके, जिससे वह दृढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक समुचित रूपरेखा एंव उत्पाद प्रणाली का विकास कर सके। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्जवलित करता है। आशा और मूल्याधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के मेरे शिक्षकों ने मुझे कई दशकों के लिए तैयार किया। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों को भविश्य के लिए तैयार करता है। शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद छात्रों में नेतृत्वकारी गुणों के साथ-साथ अभियोग्यता तथा अभिक्षमता की अभिवृद्धि उत्पन्न हो सके। यदि आप निष्ठावान हैं, तो अन्य कोई चीज का अर्थ मायने नहीं रखती। किन्तु आप निष्ठावान नहीं है, तो किसी भी दूसरी चीज का कोई अर्थ नहीं है। इस कथन से एक समीक्षात्मक संदेश मिलता है। अगर समाज में एक लाख योग्य, चरित्रवान एवं निष्ठावान छात्र हो जाएं तो वर्तमान कमजोर समाज को प्रत्येक पांच वर्ष में एक सुखद क्षण दिया जा सकता है। और यह कार्य शिक्षक जो गुरू हैं, उससे अन्य अध्यापक भी प्रेरणा लेते हैं। अंतत: शिक्षा का उद्देश्य सत्य की खोज करना होता है। इस सत्य की खोज का केन्द्र अध्यापक होता है। जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से उनके वास्तविक अधिगम व्यवहार परिवर्तन में सच्चाई का आउटकम ला सकता है। छात्रों की जो भी कठिनाई या जिज्ञासा होती हैं, या वे जो कुछ नवीन जानना भी चाहते हैं, तो उन सब के लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए अध्यापक एक तरह से एन्साइक्लोपीडिया (ज्ञान का भण्डार) है। जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हो सकते हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों को प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है, तो मौजूदा इक्कीसवीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जाएगी।

अंत में यह कहा जा सकता है कि हमारी शिक्षा प्रणाली, परीक्षा प्रणाली, छात्रों का अनुशासन, उनका सामाजिक आर्थिक और आदर्श, मूल्यों के अलावा उनको अनुसंधानकर्ता के रूप में तैयार करना होगा। उनमें बहुविषयक, अन्तरविषयक तथा अन्तराविषयक ज्ञान के प्रति वैज्ञानिक टेम्परामेंट विकसित करना होगा। यह हमारी पेशेवरता की सर्वोत्तम कृति होगी। शिक्षा वास्तव में पेशेवरता, औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों वातावरण में सीखने हेतु समर्थन करता है। इसलिए उच्चशिक्षा में पेशेवरता के सुधार के लिए हिपोक्रेटिक शपथ और कोर्गलियोलिटी जैसे सिद्धान्तो पर कार्य करना होगा। पेशेवरता विकास के लिए संज्ञानात्मक, भावात्मक, और कौशलात्मक प्रवृति के साथ ही उन्नत शिक्षण विधियों, प्रविधियों, शैक्षिक उद्देश्यों के नियमन के अलावा व्यक्तिगत विकास के लिए प्रासंगिक पशेवरता और शैक्षिक अनुसंधान, नवाचार, सृजनात्मकमता, रचनात्मकता, तथा मूल्यांकन तकनीकियों का विकास कर छात्रहित, समाजहित और राष्ट्रहित में व्यावहारिक एवं आत्मनिर्भर ज्ञान पर प्रतिबिंवित करना होगा।

*****

आधुनिक युग में स्वास्थ्य और धन

- श्री राजकुमार पाल
असि0प्रो0- शारीरिक शिक्षा विभाग

"स्वास्थ्य ही धन है'' एक प्रसिद्ध कहावत है, जो हमारे लिए स्वास्थ्य के महत्व को दर्शाता है। हम स्वस्थ नहीं हैं तो धन का मतलब हमारे लिए कुछ भी नहीं है। हमारा स्वास्थ्य वास्तविक धन है अत: हमें हमेशा स्वस्थ रहने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए क्योंकि दुनियाँ में एक सफल इन्सान बनने के लिए हमारा स्वास्थ्य ही हमारी वह पूँजी है जिसका हम बेहतर तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि हम स्वस्थ नहीं है तो वह निश्चित रुप से जीवन का आनन्द लेने के बजाय जीवन में स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

आज का यह आधुनिक जीवन बहुत ही व्यस्त और मुश्किलों से भरा हुआ है। हमारी दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन सब पूरी तरह से बदल चुका है। आज-कल बच्चें खेल के मैदान में न जाकर लैपटाप, मोबाइल, कम्प्यूटर आदि से खेलने लगे हैं, जिसके कारण बच्चें मानसिक रोग का शिकार होते जा रहे हैं। हम खान-पान में फास्ट-फूड जैसी चीजों का अधिक सेवन कर रहे हैं। हमें इस अनमोल स्वास्थ्य के बारे में सोचना चाहिए। हमकों पौष्टिक आहार जैसे- हरी सब्जियाँ, ताजे फल, दूध, दही, अण्डे, प्राकृतिक विटामिन, मिनरल, खनिज का उपयोग करना चाहिए।

आज के इस आधुनिक समय में टेक्नोलॉजी काफी बढ़ गयी है। टेक्नोलॉजी हमारे लिए जितना फायदेमन्द है उतना ही घातक भी है। टेक्नोलॉजी के कारण मनुष्य बहुत आलसी बन चुका है, जिसके कारण लोग कई प्रकार की बीमारियों से घिरे गए हैं। मनुष्य को प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और कई प्रकार की प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ रहा है, जिससे इस दूषित पर्यावरण और खाद्य-पदार्थो के कारण स्वस्थ जीवन जीना बहुत कठिन हो गया है। भोजन-पानी और पर्यावरण दूषित तथा संक्रमित हो चुके हैं। पुराने जमाने में लोग दिन भर ढेर सारा प्रिश्रम से भरा कार्य करते थे जिससे ढेर सारा व्यायाम होता था और पसीना बहता था पर आज के इस युग में लोगों का ज्यादातर काम मशीनें करती हैं, जिसके कारण मनुष्य का काम आसान हो चुका है। हमें पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाना चाहिए और आस-पास के मुहल्लों में भी पेड़-पौधों को लगाना बहुत आवश्यक है तथा यह ध्यान भी रखा जाना चाहिए कि कोई हमारी प्राकृतिक सम्पदा को नष्ट न करे।

आज के इस आधुनिक युग में ज्यादातर लोग कार्यालयों में 8-9 घण्टा सुबह से शाम बैठकर काम करते हैं। उसके बाद रात को घर लौटते हैं, खाना-पीना खाकर सो जाते हैं और अगले दिन पुन: ऑफिस में सुबह से शाम तक बैठे रहते हैं। यही प्रवृत्ति आज-कल स्वास्थ्य बिगड़ने का कारण बन गई है। अच्छे स्वास्थ्य की हानि से सभी खुशियाँ नष्ट हो जाती है।

महत्मा गाँधी जी ने कहा है कि "यह स्वास्थ्य है जो वास्तविक धन है, न कि सोने चाँदी के टुकड़े।" ज्यादातर लोगों की ऐसी धारणा होती है कि जो लोग देखने में हृष्टपुष्ट हैं वही स्वस्थ हैं लेकिन ऐसा नहीं होता है। स्वस्थ व्यक्ति वह है जो भीतरी रुप से अपने शरीर के सभी अंगो को उचित रुप से संचालन कर सकने के योग्य हो तथा बाहरी वातावरण में स्वयं को ढाल सके।

जे.एफ. विलियम ने कहा है कि स्वास्थ्य जीवन का वह गुण है जो व्यक्ति को अधिक सुखी ढँग से जीवित रहने तथा सर्वोच्च रूप से सेवा करने के योग्य बनाता है। इस मुश्किल भरे दिन में अपने जीवन को और बेहतर बनाने के लिए पैसा कमाने में हम इतना व्यस्त हो जाते हैं कि अपने स्वास्थ्य के बारे में भूल जाते हैं। क्या आपको लगता नहीं कि हमें सर्वप्रथम अपने इस अनमोल स्वास्थ्य के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि अगर स्वास्थ्य नहीं तो जीवन कैसे रह सकता है? एक अच्छा स्वास्थ्य हमेशा मन से चिंताओं को दूर रखता है। और बिना किसी रोग के खुशी भरा जीवन व्यतीत करते हैं और अगर आपकी तबीयत थोड़ी भी खराब होती है तो समय पर डॉक्टरों से जाँच जरूर करवाएँ। क्योंकि जीवन में स्वास्थ्य आपकी सबसे प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए एक अच्छे स्वास्थ्य और अच्छी आदतों को बनाये रखने के लिए बच्चों को बचपन से सिखाना बहुत आवश्यक है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए दैनिक आधार पर करने के लिए कई चीजों की आवश्यकता होती है। हमें ताजी हवा, स्वच्छ पानी, उचित धूप, संतुलित आहार, जंकफूड से दूर, स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण, हरियाली का वातावरण, सुबह की सैर, व्यक्तिगत स्वच्छता एवं उचित शिक्षा आदि की आवश्यकता होती है। स्वस्थ शरीर के लिऐ उचित समय पर भोजन एवं पानी बहुत आवश्यक है, जो केवल संतुलित आहर के माध्यम् से संभव है। यह हमारे शरीर के उचित विकास को बढ़ावा देता है जो हमें मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ रखता है।

आधुनिक समय में आमतौर पर लोग अपनी आलसी और निष्क्रिय आदतों के कारण अपने जीवन में एक अच्छा स्वास्थ्य बनाने में असफल हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं वह सब सही है। लेकिन जब तक वे अपनी गलती समझ पाते हैं उससे पहले ही समय निकल चुका होता है और वे कई तरह की बिमारियों से ग्रसित हो जाते हैं। तो आओ आज ही हम सभी संकल्प लें कि हम अपने स्वस्थ जीवन के लिए सर्वप्रथम अपनी दिनचर्या ठीक करें, अपने खान-पान को ठीक करें, पौष्टिक आहार लें, समय पर नींद लें, सही समय पर बिस्तर को छोड़ दें, भाग-दौड़, खेल-कूद, व्यायाम, योग करें क्योंकि व्यक्ति अगर अपने दिनचर्या में बदलाव करें तो वह स्वस्थ होकर एक स्वस्थ एवं खुशहाल भारत का निर्माण कर सकता है।

*****

मेरी माँ

- रविन्द्र सिह धीरवाण
बी0एड0, तृतीय समेस्टर

आज भी याद आता है मुझे अपना बचपन
वो माँ के आँचल में रहने की तड़प
कुछ पल दूर रहकर यूँ लिपट जाना माँ से
जैसे कि न मिला हूँ मैं अरसों से
होगी तुझे भी याद माँ मेरी आदतें
तुझसे रूठ कर यूँ छत पर जाना
और मुझे मनाने के लिये
तेरे आँखो से अश्रु धारा बहना
छुटपन की सुनहरी यादें
आज भी उभरती है जहन में बार-बार
होगा तुझे भी याद माँ
यूँ मुझे अपने हाथों से सँवारना
छोड़कर मेरा बचपन कब चला गया मुझे
रह गयी मीठी सी यादें बीते बसन्त की
संजोये रखी है वो बातें आज भी
तुझसा था न कोई तुझसा है न कोई

*****

मेरी माँ और मेरा बचपन
(जज़्बात)

– ममता
छात्रा, बी0एड0

जितना जाना है उतना माना है
तुझे ऐ जिन्दगी।
फिर भी मैं तुझे अपना
बना न सकी ऐ जिन्दगी।
तू रुठी–रुठी क्यों रहती है ऐ जिन्दगी
कोई तरकीब तो होगी तुझे मनाने की ऐ जिन्दगी।
मैं साँसे भी गिरवी रख दुँगी अपनी ऐ जिन्दगी
बस तू कीमत तो बता मुस्कुराने की ऐ जिन्दगी।
कहाँ खो गयी मेरी वो मुस्कान
जो कभी मुझमें खुशियों का एहसास दिलाए करती थी।
अपनी बाहों में भरकर
मेरे चेहरे में मुस्कान लाया करती थी।
आँखो में जो होते थे आंसू
माँ हर पल मुझे गोद में उठाया करती थी।
थक–हार के भी वो मुस्कराकर
मुझे सीने से लगाया करती थी।
वह दौर ही कुछ और था
जब माँ मुझे अपने हाथों से खाना खिलाया करती थी।
छुप–छुप के वो मुझको बुलाया करती थी।
माँ थी वो मेरी
उसकी दुनिया मुझमें समाया करती थी।
रातों को भी जागकर
वो मुझको सुलाया करती थी
कहाँ गयी वो जिन्दगी.....।
मेरी हर नटखट अदाओं में
माँ गीत गुनगुनाया करती थी।
माँ थी वो मेरी
वो अपनी दुनिया मेरे साथ जिया करती थी।
कहाँ गयी वो जिन्दगी.....
जो कभी मुझमें समाया करती थी.....।
मेरी रुह तू बसी है
तेरी रुह में हम सब
आखिर तू गई क्यों जिन्दगी
कसूर बता दे ऐ जिन्दगी
कसूर बता दे तू।
आज भी रातों को तेरा सपनो में आना
मुझे झकझोर देता है जिन्दगी
तू बता दे मूझे वो रास्ता
जहाँ तू मिल जाए मुझे ऐ जिन्दगी।
धरती पर ईश्वर का रुप है माँ
माँ के चरणों की धूल है हम
माँ जग में सबसे न्यारी
माँ के जैसे कोई न प्यारी।

*****

'व्यापक दृष्टि से शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और जीवन के प्रत्येक अनुभव के द्वारा इसका विकास होता है।'
– जे0 एस0 मैकेन्जी

सृजनशीलता का प्रतिविम्ब : माहाविद्यालयी पत्रिका

- मुकेश चन्द्र गोदियाल
कार्यालय अधीक्षक, राठ महाविद्यालय पैठाणी

मनुष्य धरती पर ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है। ईश्वर ने पृथ्वी को अनेकानेक तत्वों, विभिन्न तरह के जीव-जन्तुओं और प्राकृतिक संसाधनों से सुसज्जित किया है। मनुष्य अनादिकाल से ही उसका उपयोग संरक्षणात्मक तरीके से करते आया है। बुद्धिमान व विवेकशील होने के कारण वह उस 'सृजन' से कुछ न कुछ सीखता है, गढ़ता है और कुछ नया करने के लिए अन्वेषण करने की कोशिश करता रहता है, तब यही खोज उसे पल-पल उसे नया होने, नया करने की लालसा पैदा करती है। यही 'सृजन' उसके भीतर आनंद और उल्लास का पर्याय बनता है, जो मानव जीवन की सबसे बड़ी विशेषता और सर्वोत्कृष्ट गुण है।

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पहाड़ी राज्य उत्तराखण्ड का परिदृश्य ही ऐसा है कि पग-पग पर धरती का श्रृंगार कुछ न कुछ करने-सीखने-समझने-समझाने के लिए 'दृष्टि' प्रदान करती है। यहाँ की कल-कल करती सदानीरा नदियों का नाद हो, प्राकृतिक वन संपदा, विभिन्न प्रकार के पुष्पों, लतिकाओं से आच्छादित वन संपदा, यहाँ की धरती, ऊँची-नीची पहाड़ियाँ और खेत-खलिहानों का मनमोहक दृश्य किसी को भी सहजता से अपनाने में समर्थ है।

प्रकृति के अनुरूप यहाँ का जनमानस सदियों से जीता रहा है, परन्तु उसको समझने की दृष्टि ज्ञान आधारित शिक्षा ही उसे प्रदान कर सकती है। उसके लिए आवश्यक है, उसकी रचनाधर्मिता की पात्रता को समुन्नत करने की। किशोर और युवा मन को बोध होता है परन्तु वह अनुशासन में नहीं बँधता। वह इस सौंदर्य से प्रभावित तो होता है परन्तु सीखता कुछ नहीं क्योंकि उसके भीतर इसे समेटने और आनंद लेने की क्षमता का विकास नहीं होता। यही काम उसकी 'सृजनशीलता' को परिष्कृत करती है लेकिन जब तक वह युवा मन के भीतर विकसित नहीं हो जाती तब तक सिवाय भटकाव के कुछ हासिल नहीं होता। महाविद्यालय की 'पत्रिका' इस दिशा में एक बड़ा प्रयास है। यह युवाओं के सृजन के द्वार खोलेगी, अभिव्यक्ति को निखारेगी और दिशाबोध करायेगी। नये बच्चों के अंदर स्वयं को और स्वयं के अस्तित्व को समझने की दृष्टि इसी सृजनशीलता का परिणाम है। राठ महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'राठ गौरव' नवोदित पीढ़ी के युवाओं के लिए इसी सृजन की एक पहल है।

सामान्य सोच के विपरीत अब यह क्षेत्र 'राठ' विकास के नये प्रतिमानों को स्थापित कर रहा है। सूचना-प्रौद्योगिकी और यातायात के संसाधनों की सुविधा के कारण विकास के संसाधनों तक पहुँच बढ़ी है। राठ क्षेत्र का यह महाविद्यालय क्षेत्रीय नौजवानों के लिए उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र है। इसमें कोई संदेह नहीं की आजादी के बाद से ही इस क्षेत्र में शिक्षा का प्रसार नहीं के बराबर था। इसलिए पढ़े-लिखे लोगों के अभाव में क्षेत्रीय विकास, सभ्यता और आधुनिकता लगभग पिछड़ती रही और यही पिछड़ापन यहाँ के लोगों की 'पहचान' भी बनी। उच्च शिक्षित की बात छोड़िये एक सामान्य शिक्षित व्यक्ति भी ढुंढे नहीं मिलता था, जिस कारण क्षेत्र विकास के उजाले से कोसों दूर, निर्धनता, रूढ़िवाद, अन्धविश्वास व अनेक तरह की कुरूतियों से अभिशप्त था। यद्यपि एक समय में यहाँ के पूर्व विधायक व मंत्री डॉ0 शिवानंद नौटियाल के प्रयासों से क्षेत्र में माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का द्वार खुला। इलाके में जगह-जगह जुनियर हाई स्कूल, हाई स्कूल, इंटरमीडिएट कॉलेजों की स्थापना हुई लेकिन उच्च शिक्षा तब भी बड़ी बाधा बनीं रही। चाह कर भी यहाँ का प्रतिभावान बच्चा उच्च शिक्षा से वंचित था। परिवार के हालात ऐसे नहीं थे कि वह शहरी क्षेत्रों के कॉलेजों में अपनी उच्च शिक्षा ग्रहण करने की तमन्ना पूर्ण कर सके। तमाम प्रयासों के बावजूद भी इस क्षेत्र के मेधावी युवाओं को निराश, हताश ही रहना पड़ा। क्षेत्र में उच्च शिक्षा की शून्यता से उपजी उदासीनता ने जहाँ युवाओं को हतोत्साहित किया वहीं अच्छी नौकरियों में जाने के उनके सपनों को उड़ान भी नहीं मिल सकीं।

लेकिन सन् 2003 में अपनी मातृ भूमि के लोगों की इस पीड़ा को वास्तव में समझने वाले पहले युवा थे गणेश गोदियाल। जो मुम्बई में अपने कारोबार की गति को धीमा कर क्षेत्र में आये। अपने काम करने की विशिष्ट शैली से क्षेत्र में जल्दी ही चर्चित होने वाले धरती पुत्र श्री गोदियाल ने पहले तो कुछ जागरूक नागरिकों के साथ मिलकर शासन-प्रशासन से क्षेत्र में डिग्री कालेज खोलने के लिए आग्रह किये परन्तु शासन की हठधर्मिता और लेट-लतीफी से व्यथित होकर उन्होंने अपने ही निजी प्रयासों से पैठाणी ग्राम सभा 'पट्टी कंडारस्यू' की भूमि पर इस क्षेत्र का पहला उच्च शिक्षा संस्थान 'राठ महाविद्यालय' स्थापित किया। जो तमाम युवाओं को दिशा देने का काम कर रहा है। इस संस्थान के संस्थापक-प्रेरणापुंज श्री गणेश गोदियाल के अतिरिक्त उनके सुयोग्य प्राध्यापकों की टीम के परिश्रम का ही प्रतिफल है की महाविद्यालय निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर है। पहले कला संकाय के सात विषयों के साथ युवाओं का स्नातक बनने का सपना पूरा हुआ। बाद में बी0एड0 संकाय को जोड़कर उन युवाओं को जो शिक्षक-प्रशिक्षक बनकर समाज, राज्य और देश की सेवा करने का सपना देखते आये हैं, को यहाँ से शिक्षा स्नातक बनाकर पूर्ण करने का अवसर प्राप्त हुआ है। शारीरिक शिक्षा विभाग से बी0पी0एड0 की डिग्री प्राप्त करके क्षेत्र के युवाओं को सेना और अन्य क्षेत्रों में नौकरी प्राप्त करने के अनेक अवसर प्राप्त हो रहे है। अपितु स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में भी आम छात्रों को सजग होने का पूरा लाभ मिल रहा है। महाविद्यालय द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर नये प्रतिमान स्थापित किये जा रहे है। साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी सराहनीय कार्यो का सम्पादन भी महाविद्यालय द्वारा किया जा रहा है। 'राठ गौरव' पत्रिका का प्रकाशन भी एक ऐसा ही महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पत्रिका महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में अन्तर्निहित सृजनशीलता को पुष्पित और पल्लवित करेगी।

*****

हमारा पर्यावरण

- मनीषा रावत
बी0एड0, तृतीय सेमेस्टर

हरियाली खत्म हो रही नहीं कहीं है छाँव
हरे मैदान बीन रहे शहर प्रकृति को देकर घाव।

जिस तरह से मरघट पर नहीं पनपती हरियाली
वैसी ही कंक्रीट के जंगलों में नहीं आती खुशहाली।

प्रकृति को देना धोखा कैसा है यह पागलपन
कैसे भूल गए तुम यह प्रकृति तुम्हे है देती जीवन।

समझो इस बात को प्रकृति है हमारी माँ समान
प्रदूषण से रक्षा करके तुम इसे दो सम्मान।

ऐसा कार्य करो कि पृथ्वी पर पर्यावरण रहे स्वच्छ
तभी संभव है पृथ्वी पर जीवन सुरक्षित और सम्पन्न।

हरे भरे मैदान चाहिए या फिर पथरीले नगर
यह फैसला हमें करना है चुननी है हमें कौन सी डगर ?

पषाण काल से तरक्की प्राप्त मनुष्य फिर उसी ओर जाता है।
देखो हरे-भरे मैदान काटकर पत्थर के नगर बसाता है।

कोरोना कहर बन टूटा प्रकृति ने करवट बदली
आज बन गई प्रकृति देखो एक अबूझ पहेली।

तो आओ मिलकर प्रण ले करेंगे प्रकृति का सम्मान
अब से प्रदूषण फैलाकर नहीं करेंगे इसका अपमान।

प्रकृति का करो सम्मान पर्यावरण स्वच्छता का रखो ध्यान
पृथ्वी के हैं हम उत्तराधिकारी इसलिए करो इसका सम्मान।

'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण ही शिक्षा है।' *- अरस्तू*

फूलदेई त्यौहार

– सुधा राणा
बी0एड0, प्रथम सेमेस्टर

उत्तराखण्ड राज्य दुनिया भर में देवभूमि के नाम से जाना जाता है। उत्तराखण्ड राज्य न केवल प्राकृतिक परिदृश्य और प्राकृतिक सौंदर्य से समृद्ध है बल्कि इस प्रदेश की अपनी एक सांस्कृतिक परम्पराएँ और विरासत भी है। यहाँ की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराएँ मुख्य रुप से धर्म प्रकृति में निहित है यहाँ के हर त्योहार में प्रकृति का महत्व झलकता है। इसी क्रम में एक त्योहार है- फूलदेई।

फूलदेई उत्तराखण्डी परम्परा और प्रकृति से जुड़ा सामाजिक, सांस्कृतिक और लोक-परंपरा का त्यौहार है। हिन्दू नववर्ष चैत्र मास के प्रथम दिवस यानि 1 गते से उत्तराखण्ड के पर्वतीय अंचल में फूलदेई पर्व मनाया जाता है। यह त्यौहार चैत्र संक्रांति-चैत्र माह के पहले दिन से शुरू होता है और अष्टमी तक चलता है। इसे गढ़वाल में घोघा कहा जाता है।

फूलदेई त्यौहार का संबंध भी प्रकृति के साथ जुड़ा है। यह बसंत ऋतु के स्वागत का प्रतीक है। बसंत ऋतु में चारों ओर रंग बिरंगे फूल खिल जाते हैं, बसंत के आगमन से पूरा पहाड़ बुरांस बौर उसकी लालिमा और गांव आड़ू, खुबानी के गुलाबी-सफेद रंगों से भर जाता है। फिर चैत्र महीने के पहले दिन सुन्दर उपहार देने के लिये गाँव के सारे बच्चों के माध्यम से प्रकृति माँ का धन्यवाद अदा किया जाता है।

इस फूल पर्व में नन्हें-मुन्हें बच्चे प्रातः सूर्योदय के साथ-साथ घर-घर की देहरी पर रंग बिरंगे फूल को चढ़ाते हुए घर की खुशहाली की कामना के गीत गाते हैं। फूलों का यह पर्व कहीं-कहीं पूरे चैत्र मास चलता रहता है। बसंत आगमन के साथ पहाड़ के कोने-कोने में फ्योंली का पीला फूल खिलने लगता है। फ्योंली पहाड़ में प्रेम और त्याग की सबसे सुन्दर प्रतीक मानी जाती है।

क्रियाविधि :- फूलदेई पर्व में गाँव के बच्चे चैत्र संक्रांति से एक दिन पहले ही शाम को हाथों में कैणी से रिंगाल की टोकरी लेकर अपने खेतों में या आँगनों या जंगलों में जाकर फूलों (फ्योंली, बुरांस, लाई, कुंज, दुब, मेलु, घोला, मालू, सुतराज, आड़ू, खुमानी आदि सैकड़ों प्रजाति के पुष्प इस चैत्र मास में खिलते है।) को एकत्र करके लाते हैं। और सुबह सबेरे उन टोकरियों में भरे फूलों को सर्वप्रथम गाँव के मन्दिर में श्रद्धापूर्वक चढ़ाते हैं और फिर बच्चे घोघ देवता की डोली को सजाते हैं। एक थाली में चावल, हरे पत्ते, और जंगलों से तोड़कर लाये फूलों को सजाकर घोघा देवता की पूजा करते हैं और गीत गाते हुए बच्चे बारी-बारी से घोघा देवता की डोली को कंधे पर उठाकर नचाते हैं। घोघा देवता की डोली और फूलों की टोकरी लेकर बच्चों की टोली पूरे गाँव में घर-घर पर जाती है और हर घर की देहरी पर फूल डालकर फूलदेई के गीत गाते हैं साथ ही हर घर आँगन में घोघा देवता की डोली को नचाते हैं।

घर की गृहणियाँ इससे पहले ही गाय के गोबर से घर और देहरी (घर का प्रवेश द्वार) को लीप के रखती हैं और महिलाएँ घर आये बच्चों का स्वागत करती हैं, उन्हें भेंट में तिल-गुड़-चावल और पैसे एवं आर्शीवाद देती हैं। इस तरह से यह त्यौहार आठ दिन चलता है। आठवें दिन सारे बच्चें किसी सामूहिक स्थान पर भेंट में मिले तिल-गुड़-चावल से भोज तैयार करते हैं तथा इसमें बड़े लोग भी उनकी मदद करते हैं। इसके बाद बच्चे घोघा देवता की पूजा-अर्चना करते हैं एवं घोघा देवता को भोग लगाते हैं, उसके बाद ही भोजन को खुद ग्रहण करके सब गाँव वालों को भी खिलाते हैं। इस प्रकार प्रकृति-पूजा का यह फूलदेई त्योहार चैत्र मास के आठवें दिन सम्पन्न हो जाता है।

इतिहास और मान्यतायें :- फुलदेई त्यौहार के बारे में यह कहा जाता है कि एक राजकुमारी का विवाह दूर काले पहाड़ के पार

हुआ था, जहाँ उसे अपने मायके की याद सताती रहती थी। वह अपनी सास से मायके भेजने और अपने परिवार वालों से मिलने की प्रार्थना करती थी किन्तु उसकी सास उसे मायके नहीं जाने देती थी। मायके की याद में तड़पती राजकुमारी एक दिन मर जाती है और उसके ससुराल वाले राजकुमारी को उसके मायके के पास ही दफना देते हैं। कुछ दिनों के पश्चात् आश्चर्यजनक तरीके से जिस स्थान पर राजकुमारी को दफनाया था, उसी स्थान पर एक खूबसूरत पीले रंग का एक सुन्दर फूल खिलता है और उस फूल को "फ्योंली" नाम दे दिया जाता है। उसी की याद में पहाड़ में "फूलों का त्यौहार यानी कि फूलदेई त्यौहार" मनाया जाता है। तब से "फूलदेई त्यौहार" उत्तराखण्ड की परम्परा में प्रचलित है।

पकवान :- फूलदेई त्यौहार में विशेष रुप से सई (यह उत्तराखण्ड का एक लोक व्यंजन है। इसे चावल के आटे से बनाया जाता है। चावल के आटे को दही में गुंथा जाता है। उसे घी में काफी देर तक भूना जाता है, जब यह भुनकर भूरा होने लगे तो इसमें स्वादानुसार चीनी मिला दी जाती है) बनाकर आपस में बांटा जाता है इस त्यौहार में विशेष पकवान सई, तील-गुड़, चावल, दाल आदि से पारम्पपिक व्यंजन बनाते है।

गीत व नृत्य का आयोजन :- फूलदेई त्यौहार में सभी बच्चे एक साथ एक स्वर में फूलदेई गीत गाते हैं और घोघा देवता की डोली को कंधे पर उठाकर नाचते हुए यह गीत गाते हैं-

जय घोघा फ्योंलीया फूल
माता बोल्दा कीका फूल
हम बोल्दा फ्योली बुरांस का फूल
हथगनी मदगनी त्योल्ये धार
ऐगी छोरो फूलों बार
ताँबे तोली दूधो भात
फूलरी छोरां खुली रात
छोटी-छोटी डाली बड़ा-बड़ा आम
फूलरी छोरों भेर लगी घाम ।। जय घोघा......................

फूलदेई का महत्व :- उत्तराखण्ड की धरती पर ऋतुओं के अनुसार अनेक पर्व मनाए जाते हैं। पर्व हमारी संस्कृति को उजागर करते हैं तथा पहाड़ की परम्पराओं को भी बनाये रखते हैं।

1. फूलों का पर्व फूलदेई - हर रंग में एक आस है, विश्वास और अहसास है।
2. फूलदेई उत्तराखण्ड में एक लोक पर्व है। इस त्यौहार को फूल संक्रांति भी कहते है, जिसका सीधा संबंध प्रकृति से है।
3. फूलदेई बच्चों को प्रकृति प्रेम और सामाजिक चिन्तन की शिक्षा बचपन में ही देने वाला का आध्यात्मिक पर्व है।

*****

'अहिंसा प्रत्येक प्राणी के विरूद्ध द्वेष का अभाव है, यह प्रगतिशील दशा है इसका अर्थ चेतन रूप से कष्ट भोगना है। अहिंसा अपने सक्रिय रूप में जीवन के प्रति सदभावना है। यह शुद्ध प्रेम है।' ***-महात्मा गाँधी***

गुरु की शिक्षा

– **रविन्द्र सिंह नेगी**
छात्र, बी0पी0एड0

एक गाँव में एक दिनेश नाम का व्यक्ति रहता था। उसके पास एक तोता था जो उसका पालतू था तथा दिनेश सदैव उसे पिंजरे में रखता था, जो कि तोते को बिल्कुल पसंद नही था। तोते की लाख कोशिशों के बावजूद वह पिंजरे से आजाद न हो सका। एक बार जब दिनेश किसी काम से पड़ोस के गाँव जा रहा था, तो तोते ने दिनेश से कहा कि आप जहाँ जा रहे हो वहाँ मेरा गुरु तोता रहता है। उसको कहना आज सदगुरु को गुलाम तोते का नमस्कार।

जब दिनेश पड़ोस के गाँव पहुँचा तो उसने अपने तोते का संदेश यह संदेश सुनते ही गुरु तोता जमीन पर तड़पने लगा और तड़प-तड़प कर मर गया। इसके पश्चात् दिनेश अपना काम निपटा कर अपने घर लौट गया। तब उसके तोते ने पूछा कि गुरु तोते को संदेश दिया? इस पर दिनेश ने कहा तुम्हारा संदेश सुनते ही गुरु तोता तड़पकर मर गया।

यह सुनते ही दिनेश का तोता भी तड़पने लगा और तड़पकर मर गया। तत्पश्चात् दिनेश ने तोते को पिंजरे से बाहर निकाला। जैसे ही पिंजरे के बाहर तोते को रखा तोता फौरन उड़ गया और उड़ते-उड़ते कहा कि मेरा गुरु मरा नहीं है उसने मुझे शिक्षा दी है कि आजाद होने के लिए मुझे क्या करना है और मैंने वैसे ही किया और आजाद हो गया।

कहा गया है कि गुरु उस मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जल कर भी दूसरों को प्रकाशित करता है, उन्हें शिक्षित करता है।

*****

'Education is a process in which and by which the knowledge, character and behavior of the young are shaped and molded.'
- Professor Drever

बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो

– शुभम आर्य
छात्र, बी0पी0एड0

हर जंजीर तोड़ते चलो,
नदियों का रुख मोड़ते चलो
सितारों में दुनियाँ खोजना है,
इस धरती को छोड़ते चलो।
और ऊँचा चढ़ते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

मुश्किल कहाँ कुछ होता है
बेकार में तू ऐसे रोता है,
चल पगले हँसले खिलखिला के
काहे को दुखों को संजोता है।
अपना नसीब खुद गढ़ते चलो
बढ़ते चलो तुम, बढ़ते चलो।

तुम्हारे हिम्मत को जब भाप जाएगी
सच में, ये सारी दुनियाँ काप जाएगी।
रोक ना पाएगा कोई तुम्हारे कदमों को
तुम पाकर रहोगे अपने हर सपनों को।
देख ना तुम पीछे मुड़कर
आगे बढ़ो तुम उड़ कर।
सबसे हट के कुछ करते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

सितारो में दुनियाँ खोजना है
इस धरती को छोड़ते चलो
और ऊँचा चढ़ते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

यमराज को हराने वाले नचिकेता तुम हो
वक्त का हीरो और खुद का चहेता तुम हो।
मन की परेशानियाँ निचोंड़ दो
आगे बढ़ो और सबको पीछे छोड़ दो।
डरना नहीं तुम कभी डरना नहीं
अपनी मरजी के खिलाफ कुछ करना नहीं।
पैरों के निशान छोड़ते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

हर विडंबना को तोड़ते चलो
सितारों में दुनियाँ खोजना है
इस धरती को छोड़ते चलो
और ऊँचा चढ़ते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

तुम्हारे अंदर भी बिल गेट्स और अम्बानी है
तुम्हारे दम पर बनने वाली नई कहानी है।
अपनी नाकामयाबियों से जब सीख जाएगा
अपने नाम का इतिहास तू भी लिख जाएगा।
किस बात में तू अभी अटका है
मंजिल को देख, कहाँ तू भटका है।
अपना नसीब खुद गढ़ते चलो
बढ़ते चलो तुम बढ़ते चलो।

*****

‘शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसमें तथा जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को एक विशेष सांचे में ढाला जाता है।’
– प्रोफेसर ड्रीवर

हे बाबा तू किलैकि रुठी (जय बाबा केदार)

– डॉ0 लक्ष्मी नौटियाल
असिस्टेंट प्रोफेसर– हिन्दी

हे बाबा तू किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी
भूल क्या हवेगे होली हमसे
ह्वे क्या होलू असत् हम सबूसे
हे बाबा तू किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

भीड़ लाखू खड़ी छै तेरा द्वारा
दर्शन कू लगी छै कतार
वेग मैंया कू तबरी इनु आई
मौत का मुख माँ सब थई समाई
हे बाबा तू किलैकि रूठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

दूर–दूर बटी अयां छा
भक्त तेरा ही द्वार खड़ाछा
उंथै नि रै पता बाबा रुठीगे
क्या पता छै कि भाग फूटीगे
हे बाबा तु किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

हवेनी मौकि मौ बाबा अनाथ
गंगा मैंया माँ बौगीनी लाश
मंदाकिनी प्रचंड जब हवेगी
देवभूमि सरि थरथरैगी
हे बाबा तू किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

लाशु का ढेर लगनी तेरा द्वारा
जन लगनी कठगल्यूं का सी भारा
मरघट हवेगे छौ मंदिरा केदार
घंटा बजणा छा जख बार बार
हे बाबा तु किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

जुगराज रयां फौजी भैज्यूं
प्राणरक्षक बणी कि अयां ज्यू
हाथु माँ धैरि जौन अपणी जान
काली कुएड़ी माँ भोरी उड़ान
हे बाबा तू किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

अब ना रुठी कभी केदार
त्वेंकू थैई च नमन बार–बार
क्रोध गंगा कु थामी सदानी
होण दे न धर्म की तू हानि
हे बाबा तु किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

सूणा दीदी भुल्यूं तुम भी सूणा
सूणा भैजी भुलों सब्बी सूणा
कूड़ा कचरा डल्यां ना तुम वी माँ
साफ सुथरी रख्यां माँ सदानी
क्रोध थम जालू होली न हानि
हे बाबा तु किलैकि रुठी
क्यांकू गाँधी सरोवर फूटी

*****

‘शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य है।’ **– प्लेटो**

बेटियों की एक आवाज

– रजनी
बी0ए0, पंचम सेमेस्ट

प्रस्तावना – समाज में गिरते लिंगानुपात एवं लड़कियों की प्रति हो रही हिंसा को रोकने एंव जनसमुदाय को लड़कियों के प्रति संवेदनशील होने की आवाश्यकता है, जिससे कि आने वाले कल में बेटियों की संख्या उतनी ही हो जितनी कि बेटों की संख्या है। इस हेतु जन समुदाय को जागरूक करें ताकि लिंगानुपात एक समान हो। बेटियों की आवाज उठे और बेटों के जैसा अधिकार मिलें।

बेटियों की आवाज – हर बेटी कहती है कि हमें और कुछ नहीं चाहिए। केवल थोड़ा प्यार, दुलार के अलावा। हम इसी प्यार से जी लेंगे।

बेटियों के प्रति कानूनी प्रावधान– कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए 1 जनवरी 1996 में कानून पारित किया गया, जिसमें बेटी और बेटों को एक जैसा अधिकार देने की बात कही गयी। इसके अनुसार –

1. बेटी के साथ भी बेटे जैसा व्यवहार ।
2. बेटी को पराया नहीं मनना बल्कि बेटे जैसा मानना ।
3. समाज में लड़कियों और लड़कों को एक जैसी शिक्षा प्रदान करना।

बेटियों के प्रति लैंगिक भेदभाव –

1. समाज में लड़का–लड़की को अलग दृष्टि से देखना ही लैंगिक भेदभाव है ।
2. शिक्षा के बावजूद मानसिक धारणा में बदलाव न आना ।
3. लड़के को बुढ़ापे का सहारा मानना ।

अतः समाज में लड़कों और लड़कियों को एक जैसा अधिकार मिलना चाहिए।

*****

‘मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।’ **–स्वामी विवेकानन्द**

समय, सफलता और हमारा व्यक्तित्व

– आरती
बी०ए०, पंचम सेमेस्टर

कहा जाता है कि मेहनत ही सफलता की चाबी है। लेकिन मेहनत और समय दोनों ही सफलता ही कुँजी हैं और यह भी कहा जाता है कि समन्दर की तंरगें और समय किसी का इन्तजार नहीं करते हैं। समय ना जाने कब रेत की तरह हाथ से निकल जाता है पता ही नहीं चलता। जो व्यक्ति समय को महत्व देता है, उसकी अहमियत को समझता है तथा समय का सदुपयोग करता है वह एक दिन जरूर सफलता प्राप्त करता है। समय के समान बलवान कोई नहीं होता। यदि हर काम समय पर हो जाए तो आदमी को मुसीबतों का सामना नहीं करना पड़ता है। जिन्दगी जैसे–जैसे आगे बढ़ती है नए–नए लोग मिलते है नई–नई सीख मिलती है। समाज में उसी व्यक्ति का सम्मान होता है जो सफल होता है। चाहे वह उसकी आर्थिक स्थिति से हो, उसके स्वास्थ्य से हो, उसके व्यवहार से हो, उसकी जानकारी का क्षेत्र हो या फिर उसके कौशल का क्षेत्र। किसी की महानता उसके व्यक्तिव से होती है। कुछ छोटी–छोटी बातें, जिनसे हमारे मन को शान्ति मिलती है और व्यक्तिव में निखार आता है, इस प्रकार हैं –

1. सबकी उन्नति देखकर खुश रहना।
2. वक्त पर काम निपटाना।
3. सफाई का ध्यान रखना।
4. सुबह की जिन्दगी अपनाना।
5. सच का सहारा लेना।
6. आज का काम आने वाले कल पर न छोड़ना।
7. समय का पाबन्द होना।
8. सादगी अपनाना।

*****

‘शिक्षा बालक की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास है, जिससे वह अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार मानव जीवन को मौलिक योगदान दे सके।’
– टी०पी० नन०

योग शिविर में बी0एड0 विभाग के छात्र-छात्रायें एंव शिक्षकगण

योग शिविर

योग शिविर

शैक्षिक भ्रमण बी0पी0एड विभाग

कला संकाय के छात्र-छात्रायें

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

सफाई अभियान

वृक्षारोपण माननीय कल्याण सिंह रावत द्वारा

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

छात्र-छात्रायें एंव शिक्षकगण बी0पी0एड0 विभाग

पुरातन छात्र सम्मेलन

राष्ट्रीय सेमिनार

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

वृक्षारोपण

Raath Mahavidyalaya Paithani

Pauri Garhwal, Uttarakhand (246123)

Ph. No. : 01348 - 227620, E-mail : rmvpaithani@gmail.com

Website : www.raathmahavidyalaya.com